JAINA

JNYANAVALI

ज्ञानावली ।

(प्रथम खण्ड)



श्रीयुक्त राय शेताबचन्द नाहार बाहादुर के
आज्ञासे



अजिमगञ्ज विश्वविनोद छापाखाना मे
तिसरी दफे
श्रीरामा गेन सिंह ने छापा
ओ प्रकाश किया ।

आ
नं११ ना

सम्बत् १९६६
आषाढ ।

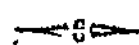
निछरावर १।०)   जील्द बन्धा १॥०)

भूमिका।



यह "ज्ञानावली' का तृतीय संस्करण प्रसिद्ध निर्णय सागर प्रेसके सुस्पष्ट अक्षरोंमें प्रकाशित कीया गया। इस पञ्चम कालमें धर्म ध्यान उदय आना कठिन है, विशेष गृहस्थाश्रममें सांसारिक कार्यके मोहसे बिलकूल नही होता। इसलिये, हे! जैनी बन्धुओ आप साहवों की इस पुस्तक के पठन पाठन से, अल्पभी ज्ञानकी वृद्धिहो तो इसका परिश्रम सफल होगा. आशाहै कि आपलोग अवतक इस संग्रहको जिस तरह आग्रह से ग्रहण करते आय है, इस बारभी तद्वत आदर करेंगे। इस ग्रंथके छापनेमें जो कोई अक्षर खोट, काना मात्रा भूल हुवा होय वा कोई तरहकी छापनेमें ज्ञानादिक की आशातना हुई होय सो मन वचन काया करके मिछामि डुक्कडं करताहू, और जैन भाईयोंसे प्रार्थना है की यह ग्रंथ जयणासे उपयोग कर पाठ करें, कि बहुना. उत्तरोत्तर महलीक मिति।

सूचीपत्र ।



॥ इति सुचिपत्र समाप्त ॥

॥ ॐ नमः ॥

ज्ञानावली ।

अथ तेरे (१३) ढालकी बडी साधु वंदना ।

दोहा) अरिहंत सिद्ध साधु नमो, नमता कोड कल्याण । साधु तना गुण गायसां, मनमे आनंद आंन ॥ १ ॥ गुण गावुं गीरूवां तना, मन मोटे अकाम । गिरुआ सहजे गुण करे, सीझे वंछित काम ॥ २ ॥ इणहीज अढी द्वीपमे, जयवंता जगदीश । जाव करी वंदन करुं, उठक मन अति हीन ॥ ३ ॥ जाव प्रधान कह्यो तिसे, सबमें जावज आंण । ते जावे सबकुं नमुं, अनंत चौवीसी नाम

४ ॥ उठ प्रजाते समरो सदा, साधु वंदना सार।
गुण गावो मोटा तना, पाप रोग सब जात ॥ ५
ढाल १ लो०) चोपईनी चालमे (एदेशी) पांच जर्त
पांच इरव जान, पांच महाविदेह वखाण। जेह
अनंत हुवा अरिहंत, कर जोमी प्रनमुं ते संत ॥
१ ॥ जेहि वमा विचरें जिन चन्द, क्षेत्र विदेह
सदा सुख कन्द। कर जोमी प्रणमुं तसु पाय,
आरत विघन सहु टल जाय ॥ २ ॥ सिद्ध अनंता
पनरे जेद, ते प्रणमुं मन धरीय उमेद। आचा-
रज प्रणमुं गणधार, श्री उवझाय सदा सुखकार
३ ॥ साधु सदा प्रणमुं केवली, काल अनाद अनंते
वली। जेहि वमा विचरे गुणवंत, साधु साधवी
सहू जगवंत ॥ ४ ॥ ते सहु प्रणमुं मन उल्लास
अरिहंत सिध नै साधु प्रकाश। साधु वंदना
करू हितकार, ते सांजलज्यो सहू नरनार ॥ ५
दोहा) इनही जम्बु द्वीपमे, जरतज नामे क्षेत्र
जिनवर वचन लहि करी, निरमल कीधा नेत्र
१ ॥ तिहां चौवीसे जिन हूवा, रुषजादिक महा-
वीर। पूर्व जव करी प्रणमीये, पांमीजे जवतीर
२ ॥ पूर्वजव चक्रवर्त्त थया, रुषज देव नरजीष

अजितादिक तेवीस जिण, राजा सहु मंकलीक ३ ॥ बृत लेइ पूर्व चवदे, ऋषज जएया मनरंग पूर्व जव तेवीस जिन, जएया इग्यारे अंग ॥ ४ वीस स्थानक तिहां सेवीया, वीजे जव सुर राय तिहांथी चवि चौविस जिण, ते हुवा प्रणमुं पाय ५ ॥ (ढाल १ जी। नमणी षमणी एहनी एदेशी) श्री चक्रवर्त्त पूर्व जव जांण, वैरनाज तिहां नांम वखांण। ऋषज देव प्रणमुं जग जांण, गुण गावता हूवे जन्म प्रमांन ॥ १ ॥ विमराइ पूर्व जव नांम अजित जिणेसर करूं प्रणांम। विमलवाहन पूर्व जव राय, श्री संजव प्रणमुं चितलाय ॥ २ ॥ पूर्व जव धर्मसी राजांन, अजिनंदन प्रनमुं शुज ध्यान। पूर्व जव थया सुमत प्रसिध, सुमत जिणेसर प्रणमुं सिध ॥ ३ ॥ पूर्व जव राजा धर्ममित पद्म प्रजुजी नै वांदु नित्य। पूर्व जव जे सुंदर वाहू, तेह सुपास प्रणमुं जग नाहू ॥ ४ ॥ पूर्व जव डगवाहू मुनीस, चंद्रा प्रजु प्रणमुं निशदीस जगबाहू पूर्वजव जीव, प्रणमुं सुवद जिनंद सदीव ॥ ५ ॥ लठवाहू पुर्वजव जास, श्री शीतल प्रणमुं हुलास। दीन राई कुल तिलक समान

प्रणमुं श्री श्रेयांस प्रधान ॥ ६ ॥ इंद्रदत्त मुनिं
वर गुणवंत, वासपूज वांडु जगवंत । पूर्वजव
सुन्दर वरूनाग, वांडु विमल धरी मनराग ॥ ७
पूर्वजव जे राय महिन्दर, तेह अनंत जिन प्रणमुं
सुखकर । साधूशिरोमण सिंहरथ राय, धर्म-
नाथ वांडु चितलाय ॥ ८ ॥ पूर्वजव मेघरथ गुण
गाउं, सान्तिनाथ जिनवर चितलाउं । पूर्वजवे
रूपि मुनि कहीये, कुंथनाथ प्रणम्यां सुख लहिये
९ ॥ राय सुदर्शण मुनि विष्यात, वांडु अर्जुन
त्रिजुवन तात । पूर्वजव नन्दन मुनिचंद, तेप्रणमुं
श्री मल्लिजिनंद ॥ १० ॥ सींहगिरी पूर्वजव सार
मुनिसुव्रत जिन जग आधार । अदीनशत्रु मुनिं
वर शिवसाथ, कर जोडी प्रणमुं नमिनाथ ॥ ११
संख नरेसर साधु सुजान, रहनेमी प्रणमुं गुण-
खांण । राय सुदर्शण जेह मुनीश, पार्श्वनाथ
प्रणमुं निशदीस ॥ १२ ॥ उठे जव पोटिल मुनि
जांन, कोडि वरस चारीत्र प्रमाण । चौथे जव
नन्दन राजांन, करजोडी प्रणमुं वर्द्धमान ॥ १३
चौविसे जिनवर जगवंत, ज्ञान दर्शण चारित्र
अनंत । वारंवार करूं प्रणाम, अष्टकर्म क्षय करि

वा कांम ॥ १४ ॥ (दोहा) मेरु थकी उत्तर दीसे एहिज जम्बूद्वीप । इरव खेत्र सुहामणो, जिन ग्रिध मोती सीप ॥ १ ॥ जिहां चौवीसे जिन हूवा, चंद्रानण वारिषेण । एही चौवीसी मे सही ते प्रणमुं समसेण ॥ २ ॥ (ढाल ३) राग वेलावली एदेशीछै) चंद्रानण जिन प्रथम जिनेसरू डुजा श्री सुचंद नगवन्तक, अगिय सेण तीज्या तीर्थंकर । चोथा श्रीनन्दषेण अरिहंतक, त्रीकर्ण सुद्ध सदा जिण प्रणमु ॥ १ ॥ इरव खेत्र तणारे चोवीसक । रूपनादिक स्वामी अनुक्रम हूया, एक समे जन्म्या जगदीसक ॥ त्रि०२ ॥ पांचमा निशदिन थुणीजे, वलिहारी ठठा जिनरायक । सौम चंद सातमा जिन समरुं, जुत्तिसेन आठमा सुष सायक ॥ त्रि०३ ॥ नवमा अजीय सेण जिण प्रणमु, दशमां श्रीशिवसेण उदारक । देव समां इग्यारमा ध्याउं, वारमा निपत सहित सुखकारक ॥ त्रि० ४ ॥ तेरमां असंजल जिन तारक चवदमा श्री जिणनाथ अनन्तक । पनरमां उपसन्त नमीजे, सोलमां श्री गुतसेन महंतक ॥ त्रि० ५ ॥ सतरमां अति पास सुणीजे, प्रनमु अठारमां

श्री सुपासक । ऋगणीसमां मरुदेव मनोहर, वीसमा श्रीधर प्रनमुं तूलासक ॥ त्रि० ६ ॥ इक वीसमां समकोठ सुहंकर, बाबीसमां प्रणमु अगी-सेणक । तेवीसमां अगीपुत्र अनोपम, चोवीसमां प्रणमुं वारी षेणक ॥ त्रि० ७ ॥ चोथे अङ्ग थकी एजाण्या, अड तालिस जिणेसर नांमक । छठे अङ्ग कह्या मुनि सुव्रत, सुष विपाक जगबाहु स्वामक ॥ त्रि० ८ ॥ जिण पचास ए प्रवचन वचने एम अनंत हुवा अरिहंतक । वहरमांन वली जिनवर विचरै, केवली साध सहु जगवंतक ॥ त्रि० ए ॥ सिद्ध थया वले संप्रति विचरै, कर जोरी प्रणमुं तसु पायक । हिव जै आगम नाम सुनिजै, ते मुनिवर कहिस्युं चित लायक ॥ त्रि० १० ॥ प्रथमज जिनवर गणधर समणी, चक्रवर्त्त हलधर वलि तेहक । पूर्व भव तसु नांमज गुण गायस्युं चौथा अङ्ग थकी तेहक ॥ त्रि०११ ॥ चौवीसे जिन तीर्थ अंतर, कोरु असंख्य हूया मुनी सिद्धक करु जोरी प्रणमुं ते पो सम, नांम कहूं हिव जे पर सिद्धक ॥ त्रि० १२ ॥ ढाल ४थी (रागध न्यासरी) एदेशी ॥ पो सम प्रणमु ऋषभ जिणे-

सरू, श्री मरुदेवा सिध सुहंकरु । चौरासी गण-
धार सिरोमणी, उसभ सेण मुनिवर प्रणमुं सुख
जणी ॥ १ ॥ ऊलालो० ॥ सुखजणी प्रणमूं बाहु
बल मुनि, सहस चौरासी मुनि । वीस सहस
प्रणमूं केवली वले, सिध थया त्रिभुवन धणी ॥
तिन लाख समणी धूर नमूं, नित नाम ब्राह्मी
सुन्दरी । सहस चालीसे केवली वले, नमुं श्रमण
चित धरी ॥ (१ ढाल०) आरीसै घर भरथ नरे
सरूं, ध्यान बले कर केवल लहे वरूं । सहस
दसे सत्राति नरपती, विचरे जगवै प्रणमूं सुन
मती ॥ ऊ० ॥ सुन मती जम्बूद्वीप पन्नौती वखा-
णीयै, भरतनी परे लहे केवल क्षेत्र इरव जाणीये
वन्दीयै चक्री इरवौ मुनि भाव सुं नित मन रली
हिवै भरथ पाटै आठ अनुक्रम, वन्दीये नृप
केवली ॥ (२ ढाल०) श्री आइजस महाजस
केवली, अइ बल महिबल तेज विरियें वली ।
कीरत विरियै दंरू वीरीयै ध्याइयै, जल विरिय
मुनि नित गुण गाइयै ॥ ऊ० ॥ गाइये ताणां
अङ्ग मुनिवरे एह भाप्या संजती, श्री ऋषभ
ते वले अजित अंतर । हिवै सुणो कहुं सुन मती

पच्चास लाख कोरू सागर, तिहां असंख्य केवली जे थया, मुनिवर तेह प्रणमूं, असुभ दुरगति निर दली ॥ (३ ढाल०) अजित जिनेसर नेऊ गणधरू, धुर प्रणमुं सहसेण सुहङ्करु । प्रणमुं पो सम फगु साहुणी, हर्ष सुं वांदू सगरू महामुनि ऊ० ॥ महामुनि सगरू तीस लाखे, कोरू अंतर जे थया । केवली मुनिवर तेह प्रणमुं. दोय कर जोरूी साथ ॥ श्री संभव चारूं मुनिवर, चित सामा ते गुण रमुं । लाप दशोही कोरू सागर, अंतरे सिध सहू नमुं ॥ (४ ढाल०) श्री अभि-नन्दन प्रणमुं गुणपती, थैरनाभ मुनि अजीया सती । सागर लाखे नवकोरू अंतर, केवली जे थया बन्दीये सुभ परे ॥ ऊ० ॥ सुभ परे सुमत जिणेसर गणधर, चमर कासवि अजाया । नेऊ सहस कोरू सागर, विच नमुंजे सिद्ध थया ॥ श्री पद्मप्रभु सीस नामी, सुठिये ऋषि वन्दिये । साहुणी तेरई नामे. प्रणम्यां दूख दूर निकन्दीये ४ ढाल०) कोरू सहस नव सागर विच वसी, प्रणमुं मुनिवर जे थया केवली । श्री सुपास जिन विध गुणदधि, प्रणमुं सीमा समणी गुण निधी

उ० ॥ गुणनिधी नवसै कोरू सागर, अंतरे जे केवली । तेह प्रणमुं चावस्पूं ए, दुखजावे सहु टली ॥ श्री चन्द्रा प्रभु दीन गणधर, सती समणा ध्याइये । नेउ सागर कोरू अंतरे, केवली गुण गाईये (६. ढाल० ५ मी०) सफल संसार अवतार ए हुं गिणु (एदेशी) सुवध जिणेस मुनिवरा ए, साहुणी वन्दीये चित्त उछाह ए । अंतरो कोरू नव सागर सहु जिहां, कालिक सुत्रनो ब्रोह चाप्यी तिहां ॥ १ ॥ स्वामी शीतल जिन साध आनन्द ए, सती सुलसा नमुं चित आनन्द ए । एक सागर कोरू तणो अंतरो कह्यो एकसो सागर ऊणो कर संग्रह्यो ॥ २ ॥ सहस छावीस व्यासठ लाख ऊपरे, कालिक सूत्र नो छेद इण अंतरे । श्री श्रेयांस मुनि गोथ वधाइये धारणी साहुणी वले चरण चित लाइये ॥ ३ ॥ पुर्व जव गुरु कहुं साध संजूत ए, विस नन्दी वले सु गुण संयुत्त ए । अचल मुनिधुर नमुं पढम हलधरा ए, वंधव नृप पृष्ट केशव सिर-धरा ए ॥ ४ ॥ चौपन सागर विच थया केवली, वन्दीये सुत्रनो ब्रोह चाप्यो वली । इम विछेद

बिच सात जिण अन्तरे, जाणिये शान्ति जिन- वर लखै इणपरे ॥ ५ ॥ स्वामी वास पुज्य जिन साधु सी धर्मधर, साहुणी वसे जिहां धर्णि उपड हर । सुगुर सुजड सु बंधव वखाणीये, विजै मुनि बंधव, द्वि पृष्ठ हरि जाणीये ॥ ६ ॥ तीस सागर बिच अन्तरे जे थया, केवली वंदीये जाव जगते सया । विमल जिन वन्दीये साध सिम- न्धर वली, समणी धरणी धरा आगम सांजली ७ ॥ गुरु सु दरशन मुनि सागर दत्तए, जव हरि बंधव जड शिव पत्तए । नव सागर विच अंतरे केवली, जे थया तेसहु वंदीये वलि वलि ॥ ८ स्वामी अनंत जिन प्रणमीये जसु गणी, समणी पोमां नमुं सुगुरु श्रेआंस मुनि । सीस अशोक सु प्रणमुं प्रजावती, जात पुरुषोत्तम केशव नृपती ए ॥ सागर च्यार नी अंतरो जाखीये, केवली वंदने सिव सुप चाखीये । जिणवर धर्म अरव गणधर कहुं, सती समणां सेवा शिव सुप लहुं १० ॥ पूर्वजव कृष्ण गुरु ललत तसु सीसए, राम प्रणमु सुदरसण निस दिस ए । बंधव पुरस सींह केशव जयो, आ श्रवणंच सु मर पुठवी गयो

११ ॥ सागर तीन विच आंतरे जाणीये, पूण्य पल्योपम उणो करि दाखीये ॥ तिहां कण राय रुसी मघव मुनिवर जयो, जे धन छोडिने सुध संयम थयो ॥ १२ ॥ चौथे चक्रि सर सनत कुमार ए, वंदिये अंत किरिया अधिकार ए । इण अन्तर मुनि मुक्ति गया जिके, केवलि वंदिये जाव जगते तिके ॥ १३ ॥ ढाल० ६) विर जिणेसर चरण कमल, कमला-कर वासो (एहनि देशी) सोल मां श्री सांति नमूं चक्रि जिनराया, चक्रायुध गणि समणि सुप्रणम्यां सुखपाया । पूर्वभव गङ्ग दत्त गुरु तसु सिद्ध वाराह, वंधव पुरस पुण्डरिक रांम आनन्द उगाह ॥ १ ॥ अर्द्ध पल्योपम अंतरे ए सिधा वहू भेद, तेह मुनिस्वर वंदतां नहि तिरथे छेद । चक्रि श्रीश्रीकुंथ नमुं संभव गणधार अजुक अंजा वंदता हुवे जै २ कार ॥ २ ॥ सागर गुरु धर्म सेन शीस नन्दन हलधार, वंधव केशव दत्त नाम सातमो विचार । कोक सहस वरसे करि उणो पलियें चौभाग, इण अवसर सहु सिध वहु वांछू धरि राग ॥ ३ ॥ अर्जुन चक्री सातमो ए कुंभ गणधर गाउं, रुपिया समणि वंदता ए

शिव सम्पत पाउं। कोम सहस वर्ष अंतरे ए सिधा मुनि वृन्द, सातमि नरक संजूव चक्रि पहुं तो मतमन्द ॥ ४ ॥ मल्लि जिनेसर वन्दिये अजिनेय मुनिन्द, गणनि वन्दु चरण कमल प्रणमु सुख कन्द। सहस पचावन साधवी साधु सहस चालिस, वत्तिस सो मूनि केवलि प्रणमु निश दीस ॥ ५ ॥ मल्लि जिनेसर पूर्वजव महि-वल अनगार, तात वले तसु वन्दिये वले मुनि वारम्वार। अचल जिव थयो पफी वुध धर्णचन्द्र जाया, पूर्ण जिव ते शंख वसु रूपि कहाया ॥ ६ वे समन ते अदिन सत्रु अग्निचन्द्र जित सत्रु लहि केवल मुक्ते गया पूर्वजव मित्तु। मुनिवर नन्दन नन्द मित्र सुमित्र वखाणुं, वाल मित्र वले जांण मित्र अमरापत आणुं ॥ ७ ॥ अमर सेण महासेण आठे नाय कुमार, मिलि संघाते साध थया अङ्ग ठठे विचार। अन्तरो इहां वले जाणीये लाख चौपन्न वास, केवली तिहां वहु वन्दीये धरी हर्ष हुलास ॥ ८ ॥ वन्दू जिनेसर वीसमा मुनि सुव्रत स्वामी, गणधर इन्द्र कुंज पुरुफ वन्ती प्रणमुं सिरनामी। सुरवर सातमे

कप्प थयो मुनिवर गङ्ग दत्तो, कित्तीय सोहम इन्द्र पयो सुर श्रीव संम्पत्तो ॥ ए ॥ राइ श्री महा पोम चक्री बांइ कर जोडी, समुद्र गुरु अपरा-जीयो ए गाउं मन मोडी । राम रिषे सर वंदीये ए नाम पोम जेह, केशव नारायण तणो ए बंधव कहूं तेह ॥ १० ॥ लहि केवल मुक्ति गया आतु वासुदेव, नरमी सुर सुख अनुजव लहमि शिव सुख हेवे ॥ मुनि सुव्रत नमी अन्तरो ए वसे लाख छे होई, केवली सीधा तेह प्रणमुं सुत्र जोई ॥ ११ ॥ ढाल ६ (श्री नवकार जपो मनरङ्ग पहली देशी) इकवीस मां श्रीनेम जिन वांदु, गणधर सुजि मर भांनरी माई। समणी अमीला गुण गावंता, सफल हुवे निज ज्ञानरी माई ॥ १ ॥ श्री जिन सासन मुनिवर वन्दूं, ॥ ए० आं० ॥ नके निज शिर नामरी माई। कर्म हणीने केवल पाम्या, पहुंता शिवपुर गामरी माई ॥ २ ॥ श्री नेम निम वनदे रेण जिन त्यागी, चक्री श्री हरि सेनरी माई ॥ ३ श्री० ॥ वरस व्रले इहां पच लप अन्तर, तिहां चक्री जय रायरी माई । वले अनेरा मुक्त पहुंता, ते वन्दु मन लायरी माई ॥ ४ श्री०

गोतम समुद्र, सागर गाऊं, गम्भीर थम्बीर उदाररी माई। अचल कंपिल अखोभ प्रसेण, दशमो विष्णु कुमाररी माई॥ ५ श्री० ॥ पोतम प्रणमुं श्री नेमीश्वर, समण ते सहस अगार री माई। वर दत्त आद मुनि पनरे से, वान्दु केवल धाररी माई॥ ६ श्री० ॥ अखोज सागर समुद्र वन्दु, हेम वन्त अचल सुचक्षरी माई। धरिल पुरिण अजितंद आठमो, जण्या इग्यारे अङ्गरी माई॥ ७ श्री० ॥ अन्धक विष्णु सुत धारणी अङ्गज, मुनिवर एह अठार री माई। वसुदेव देवकी अङ्गज ठऊं, आंणी सेण अनन्त सेणरी माई॥ ८ श्री० ॥ अजीसेण ने अणिहय रपु, देवसेण सत्रुसेण री माई॥ ९ श्री० ॥ सुलसा ना घरे सुर जोगे, वधो रमणि बत्तीसरी माई। जेन्की ठठ तप चवदश पुर्वी, संयम वर सेवीस री माई॥ १० श्री० ॥ वसुदेव देवकी अंगज आठमो, मुनिवर गज शुकमाल री माई। सहि परिसो मुक्ति पहुंतो, ते वन्दु त्रिकाल री माई॥ ११ श्री० ॥ सारुण दारुण कुमर अणाढी, चवदे पूर्वधार री माई। बीस वर्स संयम आराधी,

कीधो कर्म संहार री माई ॥ १९ श्री० ॥ जाली मयाली ने उवीयाली, पुरिस सेण वारी सेणरी माई। वारे अंगे सोले वरसे, पाल्यो संयम तेणरी माई ॥ १२ श्री० ॥ वसुदेव धरणी अंगज आठे, रमणी तजी पचासरी माई। सुमता नावे शिव पुर पहुंता, प्रणमुं तेह उलासरी माई ॥ १४ श्री० सुमुख डुमुख ने कुमर ए वन्दु, बलदेव धारणी सुतरी माई। वीस वरस संयम धरी सीध्या चवदे पुरव सूत्ररी माई ॥ १५ श्री० ॥ रुकमनी कृष्ण कहूं कुमर परजन्न, जम्बुवती सुत सम्बरी माई। परजन्न सुत अनरुध अनोपम, जास वेद रवी अम्बरी माई ॥ १६ श्री० ॥ समुद्र विजे सेवा देवी रा नन्दन, सच नेमी दृढ नेमरी माई वारे अंगे सोला वरसे, रमणी पचासे तेमरी माई १७ श्री० ॥ समुद्र विजे सुत मुनि रह नेमी, ए सहु राज कुमाररी माई। कर्म हणीने मुक्ते पहुंता, ते प्रणमुं वारम्वार री माई ॥ १८ श्री० जकणी न्याव दे सिकणी, समणी सहस चालीस आरज्यां री माई। साधवी सीधी तीन सहस ले, वारुडु कुमति टालरी माई ॥ १९ श्री० ॥ पेमा

ने गोरी। मन्धारी। लषमना सुसमां नामेरी माई। जिम्बुवंती, सतभांमा, रुपमणी, हरि रमणी। कंमि रीमरी माई ॥ १० श्री० ॥ मूलसरी मुलदत्ता, येवं सम्ब, कुमर री नारी माई। अन्त गड अंमे ए, सहु जाणी, पामि नवमी पाररी माई ॥ ११ श्री० ॥ उतरा ध्येने राजेमती सती, संयम सील री खांण री माई। प्रतिबोध्यो रहनेमी भाम्यो, पासिता सुख निरवांण री माई ॥ १२ श्री० ॥ (ढाळ ७) (गोतम समुद्र कुमार सागर गम्भीर एदेशी) थावच्चा सुत सुख, सेलग आदं दे, पंथक प्रमुख मुनि पांच सोए। मास सलेखणां, करी तप अति घणां, पुन्डरीक गिर शिवपुर पस्योए ॥ १ ॥ राई युधिष्ठर, भीम अति भली, अर्जुन नकुल सहदेव जीए। राय श्री घरिहरी, सुध संयम धरी साधु जी शिवपद वी वरी ए ॥ २ ॥ वंदे पूर्व धरी, थिवर धर्म घोष, धर्मरुची सील गुण जस्यो ए। नाग श्री ब्राह्मणी, विस दियो पापणी, तुंबो नोसक्त पारणो कीयोए ॥ ३ ॥ सार्थ सिध केवरी, नरव भव जाय करी, क्षेत्र विदेह मे शिव गमोए तो मुनि वन्दतां, कर्म दलि जन्दतां, जनम जीवत

सफलो थयोए ॥ २ ॥ समणी गुयालीया, तिण सुष मालीया, दिखीया तास हुं गुण जणुए। तिमवली सुव्रता, द्रोपदी संयुता, नेम सासन गुण थुणुए ॥ विमल जिन अनन्त, अन्तरे राय महि बलदेव पदमावती ए। तास ते अंगए, कुमर त्रिरगए, तरुणी बत्तीस तरुणी पतीए ॥ ३ ॥ तांम सिद्धरथ गुरु, पास संयम वरु, ब्रह्म लोके सुर ऊपनोए। चवि बलदेव घरे, रेवती उपड वर, निषढ़ नाम सुत संपनोए ॥ नेम पाय अनुसरी, अथिर धन परहरी, रमणि पचास तज व्रत ग्रह्योए। करी बहु सम दम, वरस नव संयम पालीनै सर्वार्थ सिध लह्योए ॥ ४ ॥ क्षेत्र विदेह में, केवल संयम, सिद्ध होसिरे ते मुनिए। इण परि अनिवह, दोय एगतीस, सहु यती कहूं गुण थुणीए ॥ दसरह दृढरहे, महाधनु तेह, सत धनु गुण मुक मन वस्याए। नव धनु दश धनु, सहि धनु मुनि एह जापीयो, सूत्रवन्न ही दशाए ॥ ५ पुरव भव हर गुरु, नाम द्रुमसेण, ललत ते नाम पूरव भवेए। राम बलदेव वली, नवमो हलधार ब्रह्म लोके सुर अनुभवेए ॥ चवि जिन तेरमो,

नाम निकसाय, थायसी सही सुर तरु समोए बंधव केशव, एका अवतार, अमम होसी जिन बारमो ए ॥ ६ ॥ सहस वले त्यांसीयां, सातसो चासी थां, वरस पचास इहां अन्तरो ए । तिहां वले चित्त मुनि, सिद्ध सम्पत्त सुं, नाम लेई नै कीरत करूंए ॥ पूर्वभव वन्धव, चक्री ब्रह्मदत्त, सातमी नर्क गयो मरीए । इण अन्तरे वली नमुं बहु केवली, वेग शिव सुन्दरी ज्यां वरीए ॥ ७ ढाल० ए) रामचन्द कै बाग चम्पो मोरी रहीरी एहनी देशी०) तेवीस मां जिन तारक, पुरसा दानीय पास । मुनिवर सोले सहस, गणधर आठ हुलास ॥ आर्ज दिने सुभ सुभ घोक, वांडु वासठ नाम । वले ब्रह्मचारी सोमल, श्रीधर करुं प्रणाम ॥ १ ॥ वीरभद्र जस आद दे, सीधा सहस प्रमाण । तेह मुनिवर वन्दतां, हुवे परम कल्याण ॥ साधवी संख्या सहु अडतीस, सहस वषांणु । पुप्प चुलादिक सहस दो, सीधी ते मन आंणु ॥ २ ॥ समणी सुपासीया सीफ सी, चासी धर्म चो जांम । ऐ अधिकार कहो, श्री ठाणांग सुठांम ॥ चोदश पुर्वी वले, चौनांणी केशी कुमार

परदेशी प्रतबोधीयो, कीधो वहू उपगार ॥ ३ ॥
वरस अठाईसो अन्तरो, सिधा साधु अनेक।
ते सहू वन्दु सु विनय सुं, आंणी चित्त विवेक ॥
मुनिवर चौदे सहस, गुरु प्रणमुं श्री महावीर।
सातसो केवली वन्दीये, गणधर एकादश वीर ॥
४ ॥ इन्द्र भूती अग्नि भुत, तीजा वान्दु वाइ
भुई। विगत सुधर्मा वन्दतां, मुझमत निर्म्मल
होइ ॥ मन्कीपूत मोरी पूत, अकम्पित नित शिव-
दासे। अचल भ्राता मेतार्य, प्रणमुं श्री प्रभासे
५ ॥ वीर गण वीरजसा नृप, संजइ नोजनेय।
सेतन सम्ब उदायण, नरपल संख कहाय ॥ वीर
जिनेसर आठेइ, दिक्षा राइ जांण। मूनिवर
पोटिल वांधा, गोत्र तिर्थङ्कर गांण ॥ ६ ॥ पालक
श्रावक पुत्रते, वान्दु समुद्र पाल। पुन्यने पापे
दो खै करी, सिधा साधु दयाल ॥ नयरि स्रावस्थि
दोऊं मिल्या, केशि गौतम स्वामि। सिद्धांरि
सङ्का काढने, पञ्च मह वयलीया शिरनामि ॥ ७
ढाल० १०) अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी
देशी) महाकुन्ड नयरी नो अधिपती, नाहण
कुल नाम चन्दो जी। वीर जिनेसर तातज

गुणनीलो, रूपत्न दत्त मुनिन्दो जी ॥ १ ॥ नित नित वान्दू मुनिवर ए सहु०) त्रिकरण सुध त्रिकालो जी । विध स्युं देई तीन प्रदक्षिणा, करुं अञ्जली निज जालो जी ॥ २ नि० ॥ राई उदाइ सिंह दशवीर नो, निर्मल संयम धास्यो जी । सेठ सुदर्शन मुनि मुक्ते गयो, मुनि महाबल अधिकारो जी ॥ ३ नि० ॥ काल संवेसी गङ्गा योगणी, पिङ्गल नै शिव राजो जी । काम उदाइ ऐवन्तो मुनि, वन्दता शीझै काजो जी ॥ ४ नि० मकाइ मुनि किङ्कम वन्दिये, अर्जुन माली हुलाशो जी । काशव मघ धर जानिये, केवल रूप कैलाशो जी ॥ ५ नि० ॥ मुनि हरचन्द वार तिये वलि, सु दरशन पूरण नन्दो जी । साध समण नन्द समता आदरै, सुपइठ समय मन्दो जी ॥ ६ नि० ॥ मेह मुनिस्वर ऐवन्तो मुनि, राय ऋषि अलक्षो जी । श्री जिन सीस ए सहु मुक्ते गया, सेवै सुर नर सको जी ॥ ७ नि० ॥ सहस छतीसे समणी चन्दणां, आद दे चवदे से सिधी जी । देवानन्दा जननी वीरणी, केवल ज्ञान समिन्दो जी ॥ ८ नि० ॥ नित २ वन्दु

समणी ए सहु०) समणी जैवन्ती पढम सिझा-
तरी, लीधी केवल पामी जी । नन्दा नन्दवती
तरा, वले नन्दसेणीया नामो जी ॥ ए नि० ॥
मरुत स मरूता माहा मरुता नमुं, मरु देवा वले
जाणोजी । भद्रा सुभद्रा सुजया जिन तणी, पाली
निर्मल आंणो जी ॥ १० नि० ॥ समणा समणी
भुइ दीना नमुं, राणी श्रेणक रायो जी । मास
संलेषण तेरे सिद्ध थई, प्रणम्यां पातिक जायोजी
११ नि० ॥ काली सुकाली माहाकाली नमुं,
कन्या सुकन्या तेमो जी । माहाकन्या वीरकन्या
साहुणी, रामकन्या सुध नेमो जी ॥ १२ नि० ॥
प्रीयसेण कन्या माहासेण कन्यका, ऐदश श्रेणक
नारो जी । निज २ नन्दन काल सुणेकरी, लीधी
संयम भारो जी ॥ १३ नि० ॥ ऐदश समणी ते
परेणा वली, आद ठे दग प्रकारो जी । लहि
केवल ए सहु मुक्ते गइ, ते वन्दु वहूवारो जी
१४ नि० ॥ (ढाल० ११) सुखकारण भवीयण
समरो नित नवकार (एहनी देशी०) श्री धर्म
घोक मुनिस्वर, महिवल गुरु सुत धार । जिन
पूछ्यो रोहे, लोका लोक विचार ॥ वेसाली सावए

ण्डिल नाम निदन्त । पर्वायक पूछ्या, खन्धक समय पहन्त ॥ २ ॥ काली पुत्र मेहल, आनन्द ऋष यो ज्ञान । वले कासव चौथो, थिवरां पास सन्तान ॥ ३ ॥ मुनि तीस कुरु दत्त, वले नियंतो पूत । धन नारद पुत्र मुनि, सो महती संयुत्त ॥ ४ सुनि छत्र सर्वण जूई, छिपर कह्यो आनन्द । जिन ओसो ल्यायो, धन २ सिहीं मुनिन्द ॥ ५ वले पुछ्या जिनने, लेस्यादिक बहु भेद । गुण गाउं माहामुनि, माकन्दी पुत्र उमेद ॥ ६ ॥ हिव श्रेणक सुत कहूं, जाली कुमर मयाली । उवयाली पुरस सेण, वारिसेण आपदा टाली ॥ ७ देह दन्त ने लठ दन्त, धारणी नन्दन होय । वेहल नै बेयास, चेलन अङ्गज दोय ॥ ८ ॥ ईक नन्दा नन्दन, मुनिवर अभय महन्त । देहसेण नै महासेण, लठ दन्त नै गुढ़दन्त ॥ ए ॥ सुध दन्त कुमर हल्ल, द्रूम नै द्रूमसेण । गुण गाऊं महा द्रूमसेण, सीह नै सीहसेण ॥ १० ॥ मुनिवर महासेण, पुन्यसेण परधान । ए धारणी अङ्गज, तेजै तरुण समान ॥ ११ ॥ नृप श्रेणिक नन्दन, एह दश तेरै कुमार । आठ २ रमणि

तजी. अणुंतर सुर अवतार ॥ १२ ॥ तिण अवसर नयरी, काकन्दी अभिराम । तिण पुर देसे भद्रा, सारथ वाही नाम ॥ १३ ॥ तसु नन्दन धन्नो, सुन्दर रूप निधान । तिन परणी तरुणी बत्तीस रम्भ समान ॥ १४ ॥ जिन वैण सुनीनै लीधो संयम जोग । मुनि तरुण पणेमै, छड्यो रमणी भोग ॥ १५ ॥ नित छठ तप पारणो, आंवल उंभत भात । जस समण वर्णी मग, काईन वंछे तिल मात ॥ १६ ॥ अति दूकर तपस्या आराधी नव मास । एक मास संथारे, सर्वार्थ सिधवास ॥ १७ ॥ काकन्दी मुनि खन्त, राजगृही इसरी दास । पेलक ए वेउं, एकन नगर हुलास ॥ १८ ॥ रामपुत्र नै चन्द्रमां, साकेत पूर वर ठांम । पुटीमां पेढाले, पुत्र वाणीयां ग्राम १९ ॥ हथना पुर पोटिल, सहु ए धना समान । तरुणी तप जिननी, संयम वरसी मान ॥ २० ॥ हिवै वहल कुमर कहुं, राजगृही आंवास । सर्वार्थ सिध पहुंतो, धर संयम छम्मास ॥ २१ ॥ इक भव शिव गामी, ए श्री जिनवर सीस । सहू नवमे अङ्गे, भाष्या मुनि तेतीस ॥ २२ ॥ हिव पौम

महापौम, नन्द सुनन्द वखाण। पौम नन्द नै पौमसेन, पौम गुल मन आन ॥ २३ ॥ निलणी गुल्म आनन्द, नन्दन एह मुनि जान। काला-दिक ना सुत, कष्ट्य वर्कसीया ठांण ॥ २४ ॥ मुनि उदग पूछ्या, गोतम नै पच्चपांण। चौ जाम थकी कीयो, पञ्च तनो परिमाण ॥ २५ ॥ जिन २ मत मन्की, ठन्की कुमत अनेक। ते आद्र कुमर मुनि धन २ बुद्ध विवेक ॥ २६ ॥ गर्वगाली बोध्यो, संजये नृप अनगार। मुनि कत्रि जाप्या, बहु-विध अर्थ प्रकार ॥ २७ ॥ महि मण्डल विचरे, विगत मोह अनाथ। गुण गावंता अहनिश, संपजे शिव पुर साथ ॥ २८ ॥ नृप श्रेणिक नन्दन मुनिवर मेघ सुजान। तज आठ अन्तेउर, उपनो विजय विमान ॥ २९ ॥ अप माणी रैणा, आदर्यो संयम जेह। जिन पालक मुनिवर, सोहम सुर थयो तेह ॥ ३० ॥ हरी चोर चिलायती, सुसमा तात ते धन्नो। आराधी संयम, सोहम सुर उपन्नो ३१ ॥ श्री वीर जिनेसर, सासन मुनिवर नाम निज चक्के गाउं, तेह तना गुण ग्राम ॥ ३२ ॥ ढाल० १२) विशालिया पिङ्गल (एदेशी०)

धर्मघोष गुर सीस दत्त, मासनै पारनै तेह सुपत्त प्रतिलाभ्यो सुभ चित्त । सुमुख थयो भव विये सुबाहु, सूर थयो संयम ग्रही साहु, गुण तसु गाउं नित्त ॥ १ ॥ श्री जुगवाहु जिनवर आवे, त्रिजे कुमर प्रतिलाभ्यो भावे, वीजै भव भद्र नन्द । भोग तजी थयो साध मुनिन्द, करी सलेखणा लह्यो सुख वृन्द, गुण तसु गातां आनन्द २ ॥ ऋषभ दत्त पहिले भवसन्त, तिन प्रति लाभ्यो मुनि पुष्फ दन्त, तिहांथी थयो सु जात । तृन सम जाणी सहू रिद्ध वात, आदरी आठे प्रवचन मात, भवियण तसु गुण गात ॥ ३ ॥ पुर्व भव नृपति धनपाल, विसमण भद्रनै दान रसाल देई शिवा शिव थाय । संयम लेई ते मुनिराय, लहि केवल नै शिवपुर जाय, ते वन्दू मनलाय ४ ॥ पुर्वभव मेघरथ राजान, सुधर्म्म मुनि नै देई दान, वीजै भव जिनदास । संवर पाली जे थया सिद्ध, केवल दरशन ज्ञान समिद्ध, वान्दु तेह उल्लास ॥ ५ ॥ मित्राई पूर्वभव जान, संजुत बिजै नै दोनु वखान, कुमर ते धनपत होई । वीर समीपे संयम लिधो, ततक्षिण कर्म हणी नै सीधो

दिन प्रति वन्दू सोई ॥ ६ ॥ पूर्वभव नाग दत्त धनेसर, प्रतिलाभ्यो इन्द्र पुर मुनिसर, महिवल नाम कुमार । संयम लेई कारज सास्या, भव सायर थी चेतन तास्या, ते वन्दू बहुवार ॥ ७ गृहपति हुंतो धर्म्मघोष, तिन प्रतिलाभ्यो अति संतोष, नाम मुनि धर्म्मसींह । वीजे भव थयो भद्र नन्दी, मुक्ति गयो भव वन्धन छन्दी, ते वंदु मुनि ईह ॥ ८ ॥ पूर्वभव जित सत्रु नरेसर, प्रति लाभ्यो धर्मवृत सुलेसर, महिचन्द नाम कुमार । तिन छन्की बहु राई कुमार, पांच से अपछर नै छणी हार, वन्दू केवल धार ॥ ९ ॥ विमल वाहन नामे राजान, धर्मरुची ने देई दान, वरदत्त हुवो भव वीजै । संयम लैई सुर श्री पामी, कप्प अतर जे शिवपुर गामी, कीर्त्ती तेहनी कीजै ॥ १० ॥ पूर्वभव देई दान उदार, वीजे भव थया राय कुमार, त्यां तजी पांचसै नार । सहु थया वीर जिनेसर सीस, सुख विपाके एह मुनिस, पञ्च महाब्रत धारी ॥ ११ ॥ नामे मातङ्ग नै सोमल गाउं, राम गुत्ती सुदर्शन ध्याउं, नमुं जमाली भोगाली । किङ्कम पेलक कालीये तीजो, अन्त

गट अङ्ग वाहिए वीजी, गंणा अङ्ग संभाली ॥ १२ ॥ पूर्वभव महा पोम ते वीजै, तेतली पुत्र मुनि प्रणमी जै, महापौम पुन्डरीक तात । वले वन्दु जित सत्रु सु बुद्धी, कर्महणी तिण करी विशुद्धी ते वन्दु विख्यात ॥ १३ ॥ मुनि जयघोष विजे घोष वान्दु, वल श्री नाम मृगापुत्र वान्दु, कमलावती इक्षुकार । पुत्र पुरोहित वले तसु नार, नाम जसा सम्वेगे सारी, वन्दता तिन जयकारी १४ ढाल० १३) चतुर विचारियेरे (एदेशी०) मुनि दास ने धन्नो वले वखाणीयेरे, सुनि खत्त किर्त्तीय संयुत्त । संठाण माल चड आनन्द तेतलीरे, दशार्ण भड अवन्त ॥ १ ॥ मुनि गुण गाईयेरे० गावंता परमानन्द । शिव सुख साधने करी अव निश संपजैरे, भाजे भव २ दन्द ॥ २ मु० ॥ अणुत्तर अङ्गनी एहीज वीजी वाचनारे, औ दश मुनि वर नाम । नन्दी सुत्र में साध, सुभद्द पणे कह्यारे नन्दीसेण अभिराम ॥ ३ मु० ॥ विपम नन्दी फल अधिकार, धन्नो, मुनिरे, धन्नो देव दिन तात सुव्रता समणी गुरणी सिष्यणी पोटलारे, पुन्डरीक कुन्डरीक नो भ्रात ॥ ४ मु० ॥ गुरुणी सुभद्रा केरी

समणी सुमतारे, पूर्णचन्द्र सुचङ्ग। मानचन्द्र नै दत्त शिवबल मुनिरे, अषाढ़ी पुष्फीया उपङ्ग ॥ ५ मु० धन ते कपिल जती अति निर्मल मनिरे, तिण तज्या लोभ सन्ताप। इन्द्र परिक्षा अवसर उपसम आदरिरे, नमी नमावे आप ॥ ६ मु० ॥ सुर वर सेवत श्री हर केशीबल मुनिरे, सम्वर धार सुलेस। सकन श्रेड़ी प्रति संजम आदर्योरे, दशार्ण चन्द्र नरेश ॥ ७ मु० ॥ मुनि कर कन्डु राजा देश कलिङ्ग णोरे, डुमुही पञ्च नृपाल। वले विदेही नृपति नमी नामे कृतिरे, निरधाई गधार रसाल ॥ ८ मु० ॥ श्वेत विजै नै महिबल ए सहु राजविरे, वृत लेई थया अणगार। काम कषाय निवारी शीतल आतमारे, थिवर ते कह्या गणधार ९ मु० ॥ हिवे श्री वीर जिनेस्वर सीस सुहम गणिरे, तास परम्पर एह। जम्बु प्रभव वलि सय्यंभव जानीयेरे, मनग पीया मुनि तेह ॥ १० मु० श्री जसोचन्द्र नै मुनि सम्भुत विजे वलिरे, चन्द्र बाहु थुल चन्द्र एम। अनेरा जिनवर आण माही हुवारे, ते मुनि गाऊं समुद्र ॥ ११ मु० ॥ काल अनन्ते मुनिवर मुक्ते गयारे, संप्रति विचरे तेह

नाण दर्शन ने चर्ण कर्थ धुर धुरारे, श्री देव चन्दे तेह ॥ १२ मु० ॥ कलश) इम चौविश जिनवर, प्रथम गणधर चक्री हलधर जे हुवा, संसार तारक केवली वलि समण समणी संथुवा, संवेग श्रुत धर साध सुखकर । आगम वचने जे सुण्या, ज्ञान चन्द गुरु सुपसाये, श्री देवचन्द संथुण्या १३९ ॥ इति श्री बड़ी साधु वन्दना सम्पुर्ण ॥

॥ अथ शीलरी नववाड़ ॥

दोहा) श्री नेमिसर चरण नमुं, प्रणमु छत्र प्रताल । बावीसमां जिन जगत गुरु, ब्रह्म चारज विख्यात ॥ १ ॥ सुन्दर अपछर सारखी, रति सम राजकुमार । नर योवन मे जुगतसुं, छोड़ी राजुल नार ॥ २ ॥ ब्रह्म चर्य जिन पालीयो, धरतां दुध्वर जेह । तेह तना गुण वरण बूं, पामे भव जल छेह ३ ॥ कोड़ केवली गुण करे, रसना सहस बनाय तोई ब्रह्मचर्य मे गुण घना, ते पुरा कह्या न जाय ४ ॥ गलित पलित काया थई, तोई न पुगि आस

तरुण पणे जे व्रत धरे, हुं बलिहारी तास ॥ ५
जीव चौमासी जोय तुं, विषमे राचे गिमार।
थोड़ा सुखाने कारणे, मति जमारो हार ॥ ६ ॥
दश दृष्टांते दोहिलो, लीधो नरभव सार। शील
पल्यो नवबाड़-स्यूं, ज्यूं सफल हुवे अवतार ॥ ७
शील माहि गुण अति घना, ते पूरा कह्या न जाय
थोड़ासा परगट करूं, ते सुनज्यो चितलाय ॥ ८
ढाल० १) मत करो काया माया कारमी जी
एहनी देशी०) शील सुर तरुवर सेवीये, ते वर
तांमे गिरवोठे एहरे। शील सुं शिव सुख पामीये
त्यां सुखांरो कदेन आवे छेहरे ॥ १ शी० ॥ शील
मोटो सब व्रतमे, भाष्यो छे श्री भगवन्तरे। ज्यां
समकित सहित तिन पालीयो, त्यां कीधो संसार
नो अन्तरे ॥ २ शी० ॥ जिन सासन बन अति
भलो, ते नन्दन बन अनुसाररे। जिनवर पालक
तेहना, करुणा रस भन्काररे ॥ ३ शी० ॥ ब्रह्म तिन
बनमे शील रुपीयो, तिनरे मूल दृढ़ समकित
जानरे। साखाछे महा बरतां तणो, प्रति साखा
अनु वरत बखानरे ॥ ४ शी० ॥ साधु साधवी
श्रावक श्राविका, त्यांरा गुण रुप पत्र अनेकरे।

मधुकर कर्म शुत्र बन्धनो, परिमल गुणा विसेषरे ५ शी० ॥ उत्तम सुर सुख रूप फुलरो, शिव सुख ते फल जानरे। तिन शील वृक्षने जतन करो, ज्युं वेगो पांमो निरवांणरे ॥ ६ शी० ॥ संसार शील थकी उधरे, जे पाले नव कोटी अनङ्गरे। स्वयम्भु रमण जितली तिरयो, सेष रही नदी गङ्गरे ॥ ७ शी० ॥ उत्तरा धेनरे सोलमे, वंज समाईया ठांणरे। कीधो तिण वृक्षने राखवा, नव वाड़ दशमो कोट जाणरे ॥ ८ शी० ॥ (दोहा) हिव कहुंबु जुई२, शील तणी नववाड़। दशमो कोट तो चिहुं दिशा, माहि ब्रह्मचर्य विस्तार ॥ १ ॥ खेत गांवने गोरवे, नरहे न कीधां वाड़। रहसी तो खेत इनविधे, दोलो कीधां वाड़ ॥ २ ॥ ब्रह्मचारी विचरे जठे, ठांम २ ठे नार। तिन कारण ईण शीलरी, वीर कही नव वाड़ ॥ ३ ॥ वाड़ नलोपे तेहनी, रहे वरत अनङ्ग। वयरागी विरकत थया, दिन २ चढ़ते रङ्ग ॥ ४ ॥ पहली वाड़ मे इम कह्यो, नारि रहे तिहां रात। तिन ठांमे रहनो नही, रह्या वरत तणी हुवे घात ॥ ५ ॥ अथवा नारी एकली, जलो न सङ्गत तास। धरम

कथा कहेनो नही, वेसी तिनरे पास ॥ ६ ॥ तिण थी अवगुण उपजे, सङ्का पामे लोक । आवे फुठी आलसिर, वले होवे वरतनो फोक ॥ ७ ॥ तिनखुं ब्रह्मचारी जणी, रेहण ठे एकन्त । हिवे कुण जायगां वरजीयां, ते सुनज्यो मतवन्त ॥ ८ ॥ ढाल २) नणदल हे नणदल चुरुले हे यौवन झिल रह्यो (एदेशी) जाव धरि नित पालीये, गीरवो ठे ब्रह्मचर्य सार हो ॥ ब्रह्मचारी० ॥ तिन खुं शिव सुख पांमीये, तुं वारू भखन्ऊ लिगार हो २ ब्र० ॥ या पहली वारू ब्रह्मचर्य नी ॥ एआ० ज्ञो मञारी सङ्गत रमे, कुकरू मूस मोर हो ॥ ब्र० कुशल किहां थी तेहनी, मारे कन्ठ मरोऊ हो २ ब्र० ॥ स्त्री पशुनी पोसग तिहां वसे, ज्यां नही रहेवो वास हो ॥ ब्र० ॥ तेहनी सङ्गति निवारिये ब्रतरो करे विनास हो ॥ ३ ब्र० पे० ॥ हाथ पाव ठेद न कीया, कान नाक छेद्यो ठे तास हो ॥ ब्र० तो पिणसो वरसांरी डोकरी, तोही रहेवो नही तिन पास हो ॥ ४ ब्र० पे० ॥ सऊ सिणगार देवंगना, आये चलावण तास हो ॥ ब्र० ॥ तिन आगे तो चलीयो नही, तोही रहवो एकन्त वास हो

५ व्र० पै० ॥ स्त्री हुवे तेहमां वासे रहे, कदे चल जावे प्रणाम हो ॥ व्र० ॥ जव हद रहनो दोहीलो भ्रष्ट हुवे तिण ठांम हो ॥ ६ व्र० पै० ॥ सिंह गुफा वसीयो जती, रह्यो वेस्या चित्र साल हो ॥ व्र० तो तुरत पड्यो वस तेहने, गयो देश नेपाल हो ७ व्र० पै० ॥ कुल वालवो साध थो, तिण भाग्यो वरत रसाल हो ॥ व्र० ॥ कोनक री वेस्या वस पड्यो, रूल सि अनन्तो काल हो ॥ ८ व्र० पै० ॥ मूस मञारी मेल होय, तो घात पामे ततकाल हो व्र० ॥ नारी हुवे तिहां ब्रह्मचारी रहे, तो भांगे शील रसाल हो ॥ ९ व्र० पै० ॥ वाड़ सहित शील पालीयो, पूरे ननरो खन्त हो ॥ व्र० ॥ या शीक्षा दीधी है तो भणी, तूं रहीज्यो जायगा एकन्त हो ॥ १० व्र० पै० ॥ दोहा) कथा न कहनी नार नी, ते जिन कही दूजी वाड़ । नारी कथा कहे तेहसू, वरत रो हुवे विगाड़ ॥ १ ॥ जे शील रह्या ब्रह्म वरत मे, तिनरे विषे नंही मन माहि । ते ब्रह्मचारी नैं नारी कथा, करवो शोभे नाहि ॥ २ ढाल० ३) कपूर होवे अति उजलोरे, मिरचा केरे सङ्ग (एहनी एदेशी०) जान रूप कुल

देशनीरे, नारी कथा कहे जेह । वार वार कहे नारणीरे, तो किम रहे व्रतसुं नेहरे ॥ भवियण० नारी कथा निवार ॥ १ एआं० ॥ चन्द्र मुखी मृग लोचनिरे, वेनी जाणे भुजङ्ग । दीप शिखा जाणे नासिकारे, होय परवाली रङ्गरे ॥ २ भ० ना० ॥ वाणी कोयल जेहविरे, हाथ पांवरा करे वखाण हंसागति कटि सिंहणिरे, नाभि ते कमल समानरे ३ भ० ना० ॥ कुच है जेहणी अति भलिरे, वले अङ्ग उपङ्ग अनेक । त्यांने वारु न सरावणिरे, आणी मनमे विवेकरे ॥ ४ भ० ना० ॥ कथा तेह कहतां थकारे, दोष नही है लिगार । बिन कारण कहवी नहिरे, नारी रुप सीणगाररे ॥ ५ भ० ना० नारी रुप सरावतांरे, वधे विषय विकार । परिणाम चल विचले हुवेरे, वरत रो हुवे बिगाड़रे ६ भ० ना० ॥ मल्ली कुमरी नो रूप सांभलिरे छउं राजा रा चलीया प्रणाम । त्यां सगाई करवा दुत मोकल्यारे, विगड्यो माहो माहि तामरे ॥ ७ भ० ना० ॥ मृगावती रो रुप सांभलिरे, चन्द्र प्रद्योत राजान । कोसंबी नगरी घेरो दीयोरे, कीधो मिन खांरो घम सानरे ॥ ८ भ० ना० ॥ तिनरे हाथ न

आवी मृगावतिरे, हुवो योंहि खराव । फिट २ हुवो घणो लोकमेरे, घणी पमाई आवरे ॥ ए ज० ना० ॥ पदमोत्तर नारद कनेरे, द्रोपदी रा रुपरी सुणी बात । देव मंगाई तिण द्रोपदिरे, सो इज्जत पमाई साख्यातरे ॥ १० ज० ना० ॥ नारी कथा सुण विगड्यां घणारे, तिनरो कहतां नावे पार । बले भ्रष्ट हुवा वरत भांगनेरे, ते गया जमारो हाररे ॥ ११ ज० ना० ॥ नीम्बु फलनी वारता सुण्यारे, मुख पाणि मेलेछे ताय । ज्युं नारी कथा सुणियां थकारे, प्रणाम थोमामे चल जायरे १२ ज० ना० ॥ सङ्का कखा वितकंगा मन उपजेरे शील वरत पालुंके नाही । तिनसुं नारी कथा कहणि नहिरे, दुजी वाड़रे माहिरे ॥ १३ ज० ना० ॥ वार २ असत्री तणिरे, कथा न कहणि ताम दुजी वाड़ सुध पालसिरे, ते पामसि अविचल ठामरे ॥ १४ ज० ना० ॥ (दोहा) तिजी वाड़ मे इम कह्यो, ब्रह्मचारी नारी सहित । एकण सिज्या नही वैसणी, या जिन मारग रि रीत ॥ १ ॥ अगन कुन्ड पाशे रहे, तो पघले घृतनो कुन्ड । ज्यु नारी सङ्गत पुरुष नो, रहे किस्तिपर

प्रसन्न ॥ २ ॥ ब्रह्मचारी जोगी जति, मतकर नारी परसङ्ग । एकण सिज्या वैसता, होवे वरतनो भंग ३ ॥ पावक गाले लोहने, जो रहे पावक संग । ज्युं एकण सिज्या वैसतां, न रहे वरतसु रंग ॥ ४ ढाल० ४) अत्तीया राखी कहे धायणे (एहनी एदेशी०) तिजी वाड़ हिवे चित्त विचारो, नारी सहित एकाशन निवारो होलाल । एकाशन वैठां काल दीपे छे, ब्रह्मचारी नै आछो नही छै होलाल २ ती० ॥ एकन आशन वैठा आसंगो थावे, आसंगो काया फरसावे हो लाल । काया फरसायां विधे रस जागे, इम करतां जावक व्रत भागे हो लाल ॥ २ ती० ॥ पाठ वाजोटादिक सज्या संथारो, एवा आसन अनेक विचारो हो लाल । नारी सघाते वैसो मत कोइ, जिनवर वचन संभालो जोइ हो लाल ॥ ३ ती० ॥ स्त्री सहित वैहसे एकासन, तो लोक पड़े छै विमास हो लाल । अछतो ही आल देकर फितुर, वली बोटे अनेक विधि कूड़ हो लाल ॥ ४ ती० ॥ तिन ठांमे वैहठी हुवे नारी, तिन ठांमे न वसे ब्रह्मचारी हो लाल । जो वहसे तो मोहुरत टाली

वेद सत्तावे समाली हो लाल ॥ ५ ती० ॥ नारी वेद रा पुदगल तिणथी, नारी विकार वेदे जिन थी हो लाल । इम हीजै नारी नै पुरुष जानो, माहो माहि वेद विकार पिछानो हो लाल ॥ ६ ती० ॥ नारी फरस वेध्या हुवे भोगरो रागी, जब जांवे वरत सुं भागी हो लाल । इण कारण एकासन बैसनो नहीं, नारी फरस सुं करणो सन माहि हो लाल ॥ ७ ती० ॥ श्री राणी सम्भूत वांधा मन लग्गो, कर पद सुं मुनि तन लागी हो लाल, तिन चारित्र खोय नीयाणो कीधो, दुरगति नो पन्थ लीधो हो लाल ॥ ८ ती० ॥ देव थई नै चक्रवर्त्त हुवो, भोग माहि गिरधी थके मुवो हो लाल । सातमी नरक माहे जाय पड़ीयो, पाप सुं पूरण भरीयो हो लाल ॥ ९ ती० ॥ नारी फरस वेध्यां सू औगण अनेक, तिनसुं आसन नै वैहसणो एक हो लाल । सङ्का कंखा वीत कंछा उपजे मन माहि शील वरत पालुंके नाहि हो लाल ॥ १० ती० ॥ ईय बाड़ लोपी तिन वरत विभोयो, तिन लीयो ब्रह्म वरत खोयी हो लाल । ते नरक निगोदमें जाय पड़ीया, संसार में रुल वलीया हो लाल ॥

नोरे, राय बांठे ईणरी घात ॥ ११ सु० ना० ॥ मन रथ वन्धव मारीयोरे, मैन रेहारी देखी रुप। मरण पाम्यो तिन जोग स्युंरे, जाय पड्यो अन्धकूप ॥ १२ सु० ना० ॥ अरणक संयम आदर्योरे, तिन दीधी संसार ने पूठ। ते नारी रुपे मोहियोरे, नारी लीधो तिने लुंट ॥ १३ सु० ना० ॥ एक क्षत्री आन ले जावतोरे, तिणने मारग मे मिलियो चोर। क्षत्री बांण वाह्या घणारे, चोर फरसी सुं नाख्या तोड़ ॥ १५ सु० ना० ॥ एक बांण बाकी रह्योरे, जब स्त्री दियो निज रुप दिखाय। रुप देखि चोर मोहियोरे क्षत्री बांण सुं दियो तिणने ढाय ॥ १६ सु० ना० चोर पड्यो देखनेरे, क्षत्री करवा लागो मान। चोर कहे गर्वे किसुंरे, म्हारे नारी नैणारा लागा बांण। १७ सु० ना० ॥ इत्यादिक बहु मानविरे, ते कहितां न आवे पार। जे नारी रुपे मोहियारे, ते गया जमारो हार ॥ १८ सु० ना० ॥ नारी रुप काने सुण्यारे, भ्रष्ट हुवाछे अनेक। ते दीठां गुण हुवे किसुंरे. ये समझो नर आण विवेक ॥ १९ सु० ना० काची कारी आंखनिरे, सुरज सांह्मो जोयां अन्ध होय। ज्युं रुप नारी निरखतांरे, रख्या ब्रह्मव्रत

देवो खोय ॥ २० सु० ना० ॥ ब्रह्मचारी निरखो मतिरे, नारी रुप सिणगार । या शिक्षा दीधी छै तो जणिरे, नहि चूकेला चोथी वाड़ ॥ २१ सु० ना दोहा) भीतर परिघट टटीआंतरे, तिहां रहता हुवे नर नार । तिहां ब्रह्मचारी ने रहवो नही, ए जिन कहि पॅाचमो वाड़ ॥ १ ॥ संजोगी पासे रहैं, ब्रह्मचारी दिन रात । ते तणां सबद सांभळ्या, हुवे बरतनी घात ॥ २ ॥ जेह रमे उरखल करी, सबद पड़े आय कान । जब चल जाय ब्रह्म बरत थी, लागे विषै सुं ध्यान ॥ ३ ॥ (ढाल० ६) आनन्द समकित उच्चरै रे लाल०) एहनी एदेशी०) वाड़ सुनो हिवे पांचमी रेलाल । शील तणां रुख याम ब्रह्मचारिरे०) ज्यूं वरत कुशले रहे सही रेलाल, वले नावे आळतो आल ॥ १ ब्र० वा० ॥ भींत परे जे ताटी आन्तरे रेलाल, अस्त्री पुरुष रहता हुवे रात । ब्र० । तिहां कुण २ दोष उपजेरे लाल, ते सांभल ज्यो विख्यात ॥ २ ब्र० वा० ॥ केल करे निज कन्तसुं रेलाल, बोवाती जगावे छै काम । ब्र० विरुन्द्ध सवद करे तिहां रेलाल । ब्र० । रोदन सबद करे तिण ठाम ॥ ३ ब्र० वा० ॥ कोयल ज्युं

घोले कन्तसुं रेलाल, गावे मधुरी स्वाद । ब्र० । काम वसे हड़ २ हसे रेलाल, बोलती करे उद माद ४ ब्र० वा० ॥ खिण क्रन्द सवद करें तिहां रेलाल वले पति सवद होवे तांम । ब्र० । तिहां रहेतो एवा सवद सुण्या रेलाल, चल जावे तुरत परिणाम ५ ब्र० वा० ॥ गाज तणो सवद सांभल्या रेलाल, रीस् पामे पपिया नै मोर । ब्र० । ज्यों जोग समेरा सवद सांभल्या रेलाल, लागे वरत तने खोरू ॥ ६ ब्र० वा० ॥ ईम सांभल नै रहवो नही रेलाल, सवद पड़े तिहां कान । ब्र० । तिहां वार २ रहवो नही रेलाल, ते कह्यो जिनराज ॥ ७ ब्र० वा० ॥ दोहा) छठी वाड़मे इम कह्यो, चञ्चल मन मति रिझाय । खाधो पीधो बिलसीयो, ते मति याद आनाय ॥ १ ॥ मन गमता जोग जोगव्या, ते याद कियां गुण नाहि । वाड़ जाझा ब्रत खै हुवे, वले अजस हुवे लोकां माहि ॥ २ ॥ (ढाल० ७ जीव मोह अनुकम्पा न आणरे (एहनी० एदेशी हाव भाव सवद नारी तणा, सुनियां वधे बिषय बिकाररे । एहवा सवद आगे सुनीया हुवे, त्यांने याद नकरणा लिगाररे ॥ छठी वाड़ हिवे सुणो

विरम चरजनी० १ ॥ वरण गोरादिक शरीर ना, रुप शोभाय मानरे । अनन्तरे एहवी स्त्रीसुं भोग भोगव्या, ते चितारे नही ब्रह्म ब्रत्तरे ॥ २ ढ० ॥ गन्ध चोवादिक नै चन्दना, रस महुरादिक अनेक रे । ते स्त्री सद्दाते भोगव्या, ते पिण याद न करणा ऐकरे ॥ ३ ढ० ॥ हाथ पॉव सुख माल नारी तणा सुख माल शरीर सुखदायरे । एहवी नारी संघाते केली करी, ते चितारे नही मन माहिरे ॥ ४ ढ० सवद रूप गन्ध रस फरस, पॉच प्रकार ना काम भोगरे । ते पिण स्त्री संघाते भोगव्या, त्यांने याद न करणा जोगरे ॥ ५ ढ० ॥ रम्या सार पासा सुग टादिक, जुवटादिक रामत अनेकरे । ते पिण स्त्री संघाते रामत करी, त्यांने याद न करणी ऐकरे ॥ ६ ढ० ॥ सवद सुण्या भागे वाड़ पञ्चमो, रूपसुं चौथी वाड़रे । एक२ सिज्या बैठां तिसरी, स्त्री कथां सुं दुजि वाड़रे ॥ ७ ढ० ॥ एक याद करे यां माहिलो, तिणसुं भागे छठी वाड़रे । ते सगली याद कीयां थकां, ब्रह्मव्रत नो हुवे विगाड़रे ॥ ८ ढ० ॥ मन गमता भोग भोगव्या, देखे सुरत सभा लरे । तिण वाड़ सहित ब्रत्त खण्डियो, पाणी किम

रहे फूटां पालरे ॥ ए ढ० ॥ पुरव ला काम जोग चितारने, राणी देवी सुं कीधो प्रिलरे । जब जिन रुषने जक्ष नाखीयो, राणी देवी मास्यो विपरितरे १० ढ० ॥ जहर सहित गाठ पीय चालीयां, त्यांतो वॉको न हुवो बालरे । त्यांने घणा वरसां पाछे कह्या तिणसुं मरण पाम्यो ततकालरे ॥ ११ ढ० ॥ जाइने पवन कुञ्यो देखने, जाइने न जनाव्यो ताहिरे । जाण्यो तिन दिन धसको पड्यो, ततकाल छोरी तिन कायरे ॥ १२ ढ० ॥ ए मुवा जहर याद आणा वीयां, पामो अणचितवी असमादरे । ज्युं जागे ब्रह्मचारी शील सुं, काम जोगाने कस्यां यादरे ॥ १३ ढ० ॥ काम जोगाने याद कीया थकां, सङ्का कंखा उपजे मन माहिरे । शील पालुं के पालूं नहि वले जावक भ्रष्ट हुवे ताहिरे ॥ १४ ढ० ॥ ईस सांभल नै नर नारीयां, मत लोपो ढ्ढी वाकरे । तो शील बरत सुध निपजे, तिणसुं हुवे खेवो पाररे १५ ढ० ॥ (दोहा) नित २ अति सरस आहार नै, वरज्यो सातमी वाड़ । ले ब्रह्मचारी नित जोगवे, तो बरत रो हुवे बिगाड़ ॥ १ ॥ घृतादिक सुं पूरण जस्यो, एहवो जारी आहार । तो धातु

दीपावै अति घणो, तिनसुं वधे विकार ॥ २ ॥
खाटो खारी चर चरो, मीठो भोजन जेह । विविध पने रस निपजे, ते रसना सरवर सनेह ॥ ३ ॥
जेहनी रसना वस नही, ते खावे सरस आहार । चरत भाग भागल हुवे, खोवे ब्रह्म व्रत सार ॥ ४
ढाल० ७) नित करुं साधुजी नै वन्दना (एदेशी
कवलो करे आहार उपरतां, घृत विन्दु धरतो आहार भारी ए । एहवि सरस आहार चॉप चॉपनै, नित २ नकर ब्रह्मचारी ॥ १ वाड़ म लोपो सातमी० ॥ वय तरुणी रोग रहित छै, ते करे सरस आहारो ए । ते आहार रुमी रीत परगमे, तिनसुं वधे अत्यन्त विकारो ए ॥ २ वा० ॥ विकार वध्यां ब्रह्म वरत नै, दोपण अनेक विध लागे ए । वले अङ्ग कुचेष्टा उपजे, जावक वृत तिहां भागी ए ॥ ३ वा० ॥ सरस आहार नित चॉप २ किया, व्रत भागें विगडे बहु लोगो ए । ससार मै दुखी हुवे, बधता जावे रोगने भोगो ए ॥ ४ वा० ॥ वय तरुणी काया जीरण पडे, जे करे सरस आहारो ए । पेट फाटे पल्यो तल फले, वले आवे अजीरण मकारो ए ॥ ५ वा० ॥ त्रिविध पने रोग उपजे, नित सरस

आहार कीयां जारी ए । अकाले मरे धरम खोवने वले होय जावे अनन्त संसारी ए ॥ ६ वा० ॥ जव तरूण पनो धनी ईण विध मरे, नित किधां सरस आहारो ए । तो वुढारो कहे वो किसु, तिणरे पेट तुरत होय जाय जारो ए ॥ ७ वा० ॥ दुध दही पकवान ने, सरस आहार खावे रहें सुतो ए । पाप समणो कह्यो उत्राध्येयन मे, तो साध पणाथी विगुन्तो ए ॥ ८ वा० ॥ चक्र वर्त्तनी रसवती, जोगवि सुत दे ब्राह्मण ढोड़ी ने लाजो ए । काम विड़म्वना तिन लही, वेहन वेठी सुं कीधो आकाजोए ॥ ९ वा० ॥ सरस आहार तणो लंपटी घनो मंगु आचारज थयो ए । ते मरणे गयो व्यंत्तरी कमे, संजम लारे उजाई खेहो ए ॥ १० वा० ॥ सेलग राय ऋखेसरू, सरस आहार तणी हूवो गिरधी ए । ते जिह्वा वस पमीयो थकी, कीया अलगो धर दिधी ए ॥ ११ वा० ॥ कुण्ड़रीक रस लम्पटी थयो, पाछो घरमे आयोए । जारी आहार सुं रोगउपजे मुवो, पमीयो सातमी नरकमे जायो ए ॥ १२ वा० ॥ ईत्यादिक बहु साध साधवी, लोप ने सातमी वाड़ ए । ब्रह्म चारज व्रत खोयने, गया

जमारो हार ए ॥ १३ वा० ॥ सणि पातियो दुध मीश्री पीवे, तिन सणिपात वधतो देखोए । ज्युं ब्रह्मचारी सरस आहार सुं, विकार वधे विसेषो ए १४ वा० ॥ इम सांजल ने नर नारीया, नित नारी म करज्यो आहारोए। शील ब्रह्म सुध पालने, आवा गमन निवारोए॥ १५ वा० ॥ सरस आहार तोज्यांई रह्यो, लुखो ईपिण आहारो ए । चॉप २ नित करणो नही, हिवै कहस्युं आठमो वाड़ो ए ॥ १६ वा० ॥ दोहा) आठमी वाड़मे इम कह्यो, चॉप न करणो आहार । प्रमाणो लोप बधको करे, तो वरतरो हुवे विगाड ॥ १ ॥ अती आहार थि दुख हुवे गल रुप वल गाय । परमाद रोग निद्रा आलस हुवे, वले अनेक रोग होय जाय ॥ २ ॥ अति आहार थी विपे वधे, घणो इज फाटे पेट । धान आमाउ जर तो, हांड़ी फुटे नेठ ॥ ३ ॥ केइ वाड़ लोपे विकल थका, करसी अधीको आहार । त्यांरे कुणाश अवगुण नीपजे, ते सांजल ज्यो बिस्तार ॥ ४ ॥ (ढाल० ए) विमल केवली एकरे चम्पा नगरी (एदेशी) जर जोवनरे माहीरे देही नीरोगी होवे, माही ते जस री जोडी घणोए

चाँपे कोधा आहाररे, पठे सताव सु, तो विर्षे वधें तिनरे घणी ॥ १ ॥ जव गमता लागे जोगरे, ध्यान मे माठो रहें, वले गमतो लागे असत्री ए ॥ २ ॥ शील पालुंके नाहिरे, सङ्का उपजे पछे जोग, नारी वन्छा उपजे ए ॥ ३ ॥ मोने लाभ होसी के नाही, शील वरत पालीया, पिण सांसो उपजे ए ४ ॥ जव भ्रष्ट हुवे व्रत भाङ्गरे, भेप माहि थका, केई भेप छोड हुवे गिरसती ए ॥ ५ ॥ चापे कीधां आहाररे, पछे अठितरे, तो ईसकी अनरथ निपजे ए ॥ ६ ॥ केई कॉरे हुवे रोगरे, ते आहार इधको करे, वले सास आवें अवधो थको ए ॥ ७ ॥ फाटे पेट अनन्तरे, वन्ध हुवे नाकीया, वधें असाता पेट नीए ॥ ८ ॥ होवे अजीरण रोगरे, मुख वासे बुरी चले. पेट जाल आफरो ए ॥ ए ॥ ते उठे उकाला पेटरे, चाले कलमती, वले बुटे मुख थुकनी ए ॥ १० ॥ झोल फिरे चकझोलरे, पित्त घुमे घणा, चाले मुखके मुल कनी ए ॥ ११ ॥ आवे माठी घणी ककाररे, वले आवे गुचलका, जइ आहार भाग उलटो पके ए ॥ १२ ॥ चाले मरोका पीकरे, पेट दुखे घणो, वले लोही ढॉन परो हुवे ए ॥ १३ ॥

नाड्यामे ऊपजे रोगरे, ते आहार ऊले नही, ज्युं खावे ज्यु निकले ए॥ १४॥ वले ताव चढ़े ततकालरे, वन्ध हुवें मातरो, अधिको आहार कियां ए॥ १५॥ घणी देही परे कुथाररे, आहार जावें नही, जव मास लोही दिन २ घटें ए ॥ १६॥ खीण परे जव देहरे, निवलाई परे वले, हाथ पगां सोजो चढ़े ए॥ १७॥ थम्मे नही अतिसाररे, औषध करे घणा, दिन २ फेरी ईधको हुवे ए ॥ १७॥ पढे जावक वुटे अन्नरे, चुके धर्म ध्यान थी, वले बोलें घणी दयामनो ए॥ १९॥ वले हुवे सास ने खासरे, जलोधर घनो वधें, सुन्य बुन्य देही पड़े ए २०॥ वधें अपचो रोगरे, आहार पचें नही ए, औषध कोई लागें नही ए॥ २१॥ वले उपजे दाह सरीरे, वलण लागी रहेरे, पेट सूल चाले घणीए २२॥ वेदना हुवे आंख्या कानरे, खाज हुवे घणी ए, वले रोग पित्तजर उपजे ए॥ २३॥ ईत्यादिक बहु रोगरे, उपजे आहार थी, हूं कहि २ ने कित्तरो कहु ए॥ २४॥ ए हुवे आहार थी रोगरे, नामले वलि अवर नो, त्यांरे कूरू वधें घणी ए॥ २५॥ ते चॉप करे आहारोरे, गिरधी पेटरो, तिणने साच बोलनी

दोहीलो ए ॥ २६ ॥ कोई साधु कहे रामरे, यो आहार अधिको करें, तो घणी कुके तिन उपरे ए ॥ २७ ॥ जो मिलन कहें अनेकरे, तुं आहार इधको करें, तोही कह्यो न माने एकनो ए ॥ २८ पूरण भरें नित पेटरे, इधको चॉपने, जब पाणी पूरो मावे नही ए ॥ २९ ॥ तिरखा लागे अनन्तरे पेट दूखे घणो, टल वलाट करें घणी ए ॥ ३० ॥ खावें आवलीया कीलरे, जक नही तेहने, अजक घणो वेजे जेहने ए ॥ ३१ ॥ असको पके विपत्तरे तोही गिरधी पेटरो, निज अवगुण ढोके नही ए ३२ ॥ जव रोग पीक लै आणरे, मरे माठी रीतरें श्री जिन धर्म्म गमाईने ए ॥ ३३ ॥ चारु गतरे माही भ्रमण करे घणो, अनन्त काल डुख भोगवे ए ॥ ३४ ॥ कुण्डरीक रे उपनो रोगरे, आहार ईधको कीयां, मरणे गयो नरक सातमी ए ॥ ३५ ॥ हांडी फाटे नेठरे, ईधको भरीयां, तो पेटन फाटे किण विध ए ॥ ३६ ॥ ब्रह्मचारी इम जानरे, अधिको नही जिमी ए, अनोदरी मे गुण घणा ए ॥ ३७ उत्तम अनोदरी तपेरे, करतां दोहीलो, बयराग भीना हुवे नही ए ॥ ३८ ॥ ए कही आगमी बाड़रे

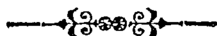
ब्रह्मचारी जणी, चोखे चित्त आराध जे ए ॥ ३९
दोहा) नवमी वाड़ विरम चर्यनी, विभुषा न
करणी अङ्ग । विभुषा कीधां थकां, थाये वरत नो
भङ्ग ॥ १ ॥ शरीर विभुषा जे करे, करें तन सिण
गार । रहें घरारीया मरारीया, त्यां लोपी ब्रह्म ब्रत
वाड़ ॥ २ ॥ शरीर विभुषा जे करें, ते संजोगी
होय । ब्रह्मचारी तन न सोभवे, ते कलपे नही
कोय ॥ ३ ॥ वाड भांग्या किन विध रहे, अमो-
लक शील रतन्न । तिन सुं ब्रह्मचारी ब्रह्म वरत ना
किन विध करें जतन्न ॥ ४ ॥ (ढाल० १०) धीज
करे सीता सतीरे लालरे (एहनी० एदेशी०)
शोभा करणी देहनीरे, नही करणी तन सिणगार
रे ॥ ब्रह्मचारी० ॥ पीठी उगटनो करणो नहिरे
लाल, मरदन करणो लिगार ॥ १ ब्र० नवमी वाड़
ब्रह्मचर्य निरे लाल० ॥ ठंना ठण्डा पाणी थकिरे,
मुलन करणो अङ्गोल । ब्र० । केशर चन्दन नही
चरचणारे लाल, दात रङ्ग न करणो चोल ॥ २ ब्र०
न० ॥ बहु मोलाने उजलोरे लाल, वस्त्र पहरणा
नाहि । ब्र० । टीका तिलक करणा नहिरे लाल,
नवमी वाड रे माहिरे ॥ ३ ब्र० न० ॥ कङ्कण कुण्डल

मुंदरी रे लाल, माला मोति नो हार । ब्र० । ब्रह्म चारी पहरे नहिरे लाल, गहना विविध प्रकार ॥ ४ ब्र० न० ॥ नहि रहणो घटस्यो मगारायोरे लाल केशादिक न सिणगार । ब्र० । वस्त्रादिक पिण पहरनेरे लाल, मुल न करणो सिणगार ॥ ५ ब्र० न० विभुषा अङ्ग छे कुशील नोरे लाल, तिनसुं चिकना कर्म बन्धाय । ब्र० । पडे संसार सागर माहिरे लाल तिनरो पार वेगो नही आय ॥ ६ ब्र० न० ॥ सिण गार कियां रहे तेहने रे लाल, भ्रस्ती देवे चलाय ब्र० । भ्रष्ट करे देवे तेहने रे लाल, गाली कर देवे ताय ॥ ७ ब्र० न० ॥ रतन हाथे हुवें राक नेरे लाल ते देखि खोस लेस्ये राज । ब्र० । ज्युं ब्रह्मचारी विभुषा कीयांरे लाल, स्त्री शील रतन खोसले ताय ८ ब्र० न० ॥ ब्रह्मचारी इम सांभलोरे लाल, विभुषा मति करज्यो सिणगार । ब्र० । ज्युं शील रतन कुशले रहेरे लाल, तिनसुं उतरो भवपार ॥ ९ ब्र० न० ॥ (दोहा) नवमी वाड़ कही ब्रह्म चर्यनी, हिव दसमो कहुं कोट । ते वाड़ दोली वीटी रह्यो, तिनमे मुल न चाले खोट ॥ १ ॥ कोट भांग्या जोखम छे वाड़ ने, वाड़ भांग्या बरतने जान । तिनसुं कोट दिगये

देवे नही, ते म्हारो चतुर सुजांन ॥ २ ॥ कोट लाग वारे पड्या थकां, वाड़ जांगता कितियक वार तिनसुं विसेष कोटरो, करवो जतन विचार ॥ ३ सहर कोट सेठो हुवे, तरें चिन्ता म पामे लोक। ज्युं अरुग कोट ब्रह्मचर्य नौ, तो शील न पामे दोष ४ ॥ ते कोट करणो किन विध कह्यो, किन विध करणो जतन्न । तिनसुं ब्रह्मचारी विवरा सुध, सांजल ज्यो धर मन्न ॥ ५ ॥ (ढाल० ११) विनारा जाव सुण २ गुणोण० (एदेशी) मन गमती सवद रसाल, अण गमती सवद विकराल । गमती सवद सुण्या नही रीझै, अण गमती सुण्या नही खीजैं १ ॥ काला नीला राता पीला धोला, पांच प्रकार ना रुप वोहीला । राग नाणे जला रूप देख, माठा देखन आणै द्वेष ॥ २ ॥ गन्ध सुगन्ध दुर्गन्ध दोय गमता अण गमता सोय, गमता सुग्त नही होय ३ ॥ रस पांच प्रकार ना जानो, त्यारा सवदादिक अणेक पिछाणो । गमती सु राग नही रहणुं, अण गमता सु धेक न धरणो ॥ ४ ॥ फरस आठ प्रकार नी ताम, त्यांरा जुदा २ छे नाम । राग गमता अण गमतारो द्वेष, यां दोयां सु रहणो निरापेख ॥ ६

सवद रुप गन्ध रस फरस, भला भुण्डा हलका भारी सरस । त्यांसुं राग द्वेष करणो नही, शील रहसी एहवा कोट माहि ॥ ६ ॥ शील रतन ब्रत छै भारी, तिणरा इणविध करणा जतन । सघला ब्रतां माहि ब्रत मोटो, तिणरी रक्षा तणो कह्यो कोटो ॥ ७ ॥ जे सवदा दिक सुं हुवै राजी, तो कोट जावै छै भाजी । कोट ज्यांज्यां वाड़ चक चूरो ब्रह्म ब्रत पिण पडि जाय दुरो ॥ ८ ॥ तिनसुं कोट रा करणा जतन, तो कुशल रहैं शील रतन । टल जावे सगिलाइ दोष, तिनसुं पामे अविचल मोक्ष ९ ॥ इम सांभल ने ब्रह्मचारी तूं, कोट म खण्डी लिगारो ज्यू । दिन २ इधको आनन्द, इम भाष्यो छैश्री विर जिनन्द ॥ १० ॥ ए कोट सहित कही नव बाड़, इम सांभल नै नर नार । इण रीत सुं ब्रह्म ब्रत पालो, ज्युं मीटे सव आल जञ्जालो ॥ ११ ॥ उत्तरा ध्येन सोलमे मभारो, तिन बोले इने अनुसारो । तो कोट सहित कही नव बाड़ो, तिन रो संक्षेप कह्यो विसतारो ॥ १२ ॥ फागुण वदि छठ गुरुवारो, इगचालीस समत आगारो । जोड़ कीधी सहर पाडु मभारो, तेतो समभावण नर

नारी ॥ १३ ॥ ● इति ● श्री शीलरी नव वाड़ सम्पूर्णम् ॥ ● ॥



॥ ● अथ श्री देवकी जिरी चौपाई ● ॥

दोहा) भद्दिल पूर नामे नगर, भरिया ऋद्ध भण्डार। तिहां वसे नाग गाथा पति, सुलसा छै तसु नार ॥ १ ॥ सुलसा छै मृत वांझड़ी, घणी पुत्र की चाह। हरिणग मेषी देवरो, सेव करे चित्त लाय ॥ २ ॥ अनुकम्पा आणी देवता, सुलसा विलखी जान। छय बेटा देवकी तणा, मेल्या शुलसा घर आण ॥ ३ ॥ अनुक्रमे मोटा हुवा कला बहोत्तर जाण। नव अङ्ग सुता जागीया, काहा चतुर सुजाण ॥ ४ ॥ एकन कुलरी ऊपनी, कन्या राज कुमार। परणाई छै जुई २, बत्तीस २ नार ॥ ५ ॥ दीधो माय ताय दायजो, सुनज्यो थे विस्तार ऋद्ध तणो वरणन करूं, धरज्यो चित्त मझार ॥ ६ ढाल० १) श्री नवकार जपो मनरङ्गे० (एदेशी

बत्तीसे तो कोड़ सोनईया, बत्तीस रूपारो कोड़िरी माई । बत्तीस बाजु बन्ध दिधा, बत्तीस कांकण री जोरुरी माई ॥ १ ॥ पुन्य तणा फल मीठाई जाणो बत्तीस तो हार टङ्कावली, बत्तीस नवसरा जान री माई । बत्तीस तो अगोतरीया दीना, बत्तीस तेसरीया जानरी माई ॥ २ पु० ॥ बत्तीस तो प्याला सोनैरा, बत्तीस रूपैरा वखाण री माई । बत्तीस तो थाल सोनैरा, बत्तीस रूपैरा वखाण री माई ३ पु० ॥ बत्तीस तो पिलङ्ग सोनैरा, पागा रतन जड़ावरी माई । बत्तीस तो बाजोट सोनैरा, बत्तीस रूपैरा सरावरी माई ॥ ४ पु० ॥ इण रीते तो ठक्कुर कुमरांने, सरस दातारी जोरु री माई । पगे लगण रा सासु दीना, एकसो बाणवे बोलरी माई ॥ ५ पु० ॥ (दोहा) आंगे धनछे अति घणो, आयो दायजो दान । पुरव कनाई जोगवे, पुन्य तणे पर मान ॥ १ ॥ मादल बाजे अति घणा, घर चिन्ता नहीं काय । बत्तीस बिध नाटिक पडे, राच रह्या निस माहि ॥ २ ॥ एहवा सुख आवि मीले, पुन्य तणे राजोन । धरम करम मन नहि ऊलखे, विलसत लागा जोग ॥ ३ ॥ जाली गोखा चित्रा

जीया, गोखा रतन जड़ाय। काल न दीसै जावतो मन गमता सुख थाय॥ ४॥ जब स्थिति पाकी तेहनी, मिल्या अपुरव आण। किन विध समके धरम में, ते सुनज्यो हित आण॥ ५॥ (ढाल० २ बीजे करे सीता सतीरे लाल (एदेशी०) तिण काले ने तिण समेंरे, बावीसमा जिन राजरे। भविक जिन०। गाम नगर पुर विचरंतारे लाल, तारण तरण जिहाजरे। १ भ० (श्री नेम जिनन्द समो सर्या रे लाल०) आय उतरीया बागमेंरे, भव जीवांरे भागरे। भ०। मारग बतावे मोक्षनी रे लाल, उपजावे बयराग रे॥ २ भ० श्री०॥ एक २ मुनिवर एहवारे, तप करे सोसी कायरे। भ०। सोखें रोगां पर तेहनारे लाल, खखार लगायां क्षय जायरे॥ ३ भ० श्री०॥ एहवी रूद्ध तणा धनीरे श्री नेम जिनन्द जीरा साथरे। भ०। ज्यांने तो वान्दो भावसु रे लाल, वरते सदाई समाध रे॥ ४ भ० श्री०॥ सहस अठारे मुनिवरुरे, आरज्यां सहस चालीश रे। भ०। ज्यांरी आण मनावता रे लाल, उतरे भव पाररे॥ ६ भ० श्री०॥ केइक हाथी केइ पालखी रे, केइक पाला जायरे। भ०।

होना होनी निसस्था रे लाल, सुनबा जिनजी नी वांणरे ॥ ७ ज॰ श्री॰ ॥ एक २ नै दोलावतारे, मनमे हरषित थायरे । ज॰ । आप आपरा समकावता रे लाल, भेला होयने जायरे ॥ ८ ज॰ श्री॰ केइक परशन पुछवारे, केइ वांदन नें काजरे । ज॰ केइक अरथ अवधार वारे लाल, केइक दरशण काजरे ॥ ९ ज॰ श्री॰ ॥ केइ कतुहल जोय वारे, केइक कुल आचाररे । ज॰ । केइक सांसो भांजवारे लाल, केइक लोक विवहाररे ॥ १० ज॰ श्री॰ जिन दिन पिण हुंता घणारे, भारी कर्मा मूढरे । ज॰ । अवगुण आण हुंता काढ नेरे लाल, काली मिथ्यात नी रुढरे ॥ ११ ज॰ श्री॰ ॥ इतर गतिनी पारष्यारे, केइक विरला जाणरे । ज॰ । मोक्ष तणी ज्यांने आसतारे लाल, पाले जिनवर आणरे ॥ १२ ज॰ श्री॰ ॥ घणाने जातां देखने रे, नीसरी या ठठं आयरे । ज॰ । भवस्थित पाकी तेहनीरे लाल श्री नेम बान्दन नै जायरे ॥ १३ ज॰ श्री॰ ॥ दोहा ॥ बन्दना कीधी भावसुं, बैठा सनमुख आय । भगवन्त दीधी देसना, सगलां ने हितलाय ॥ १ ॥ जीवादिक नव तत्वना, भाख्या जिन जिन भेद ।

मोक्ष तणा सुख सासवता, सरधी श्राण उमेद ॥ २ ॥ वाणी सुणने परखदा, आया जिन दिश जाय ठअं नाई वैरागीया, बोले किनविध थाय ॥ ३ ॥ हाथ जोडने इम कहे, सरध्या तुमग बैण । थे नारण सब जीवरा, मीलीया साचा सैण ॥ ४ ॥ मान पिता नै पुछने, लेस्या संयम भार । संसार जाण्यो कारमो, मोक्ष तणा सुख सार ॥ ५ ॥ वलिता इसड़ी जिन कहे, दिक्षा दिखमे जाय । जिका घड़ी जावे ब्रत बिना, ते फिर पाछी नही आय ॥ ६ ॥ मान पिता ने पूछने, लीधो संयम भार । निणरा भाव कह्या घणा, जेमाली ज्यु बिस्तार ॥ ७ ॥ (ढाल० ३) तप सरीपो जग को न० (एदेशी०) हाथ जोड़ी करुं वीनती, नीचो सीस नमाय हो स्वामी । वेले २ पारणो, दीजे मोहि कराय हो स्वामी ॥ १ ॥ अरज करुं प्रभु वीनती० ॥ पहिले पोरसि सिजाय नो, बीजे ध्यान ज ध्याय हो स्वामी । तीजी पोरसी गोचरी, एह अभिग्रह कराय हो स्वामी ॥ २ अ० ॥ वलिता जिन इसड़ी कहे, जिन थाने सुख थाय हो स्वामी ईण अवसर कर्म काटने, पहूंता शिवपुर जाय हो

स्वामी ॥ ३ अ० ॥ नेम जिनन्द आज्ञा दीये, मनसे हरष अपार हो स्वामी । भाव सहित तप आदर्यो चोखे चित्त लवलाय हो स्वामी ॥ ४ अ० ॥ द्वारका नगरी पधारीया, बावीसमा जिनराज हो स्वामी आय उतरी या बागमे, ए पिण आया साथ हो स्वामी ॥ ५ अ० ॥ (दोहा) लोक आया छै अति घणा, सुन वाणी घर जाय । छउं साध लेवा पारणो पात्र पडिलेहे आय ॥ (ढाल० ४) राग यत्तनी० पहिली पोहरसी करीये सिझाय, बीजी पोरसी ध्यान जु ध्याय । तीजी पोरसी गोचरी काल, आज्ञा ले उठ्या ततकाल ॥ १ ॥ नेम जिनन्दरो ले आदेश, द्वारिका माहि कीधो परवेश । छव साधांरा तीन सिंघाड़ा, उठ्या गोचरी अणगारा २ ॥ अछपणे टाले अण विसेष, उंच नीच कुल मध्य विसेष । भमर तणी परख्यावे भिक्षा, विनय ब्रन्त पाले गुरु शिक्षा ॥ ३ ॥ (दोहा) छउं सहोदर सारसा, नल कुबेर अणुहार । नयनन धापे निरखता, हीयमे हर्ष अपार ॥ तीन सिंघाड़ा जुत जुवा, वहिरे माता हाथ । परगट होवे किण विध, ते सुनज्यो विख्यात ॥ (ढाल० ५) वीर

वखाणी राणी चेलना जी० (एदेशी०) वसुदेव जीके घर आवीया जी, देवकी हरषित थाय । सात आठ पग साहमी आयने जी, लुलि लुलि लागी पाय ॥ १ साधुजी जले पधाख्या आज० ॥ आज कृतारथ हूं थईजी, मुनिवर आया वार । ज्यां पुर पांरी चाहिना जी, ज्यारोमे दीठो दीदार २ सा० ॥ आज जली जागि दिसाजी, दिठि मुनि तणी जोड़ । आज जले दिन ऊगीयो जी, पुगी म्हारा मनड़ारी कोड़ ॥ ३ सा० ॥ मोदक थाल जरी करी जी, देवकी माहि सुं ल्याय । कृष्ण जीरे जिमन तणा जी, वहिराया ऊलट जाव ॥ ४ सा० मुनिवर वहिर पाठां वल्या जी, लागी थोकि सी वार बीजो सिघाड़ो वले आवीयो जी, देवकिरे घरसार ५ सा० ॥ मोदक वहिराया वले जाव सुं जी, वहिर चाल्या मुनि राय । देवकी पोहोंचाय पाठो वलि जी, बेठी सिंघासण आय ॥ ६ सा० ॥ तीजो सिघाडो वले आवीयो जी, देवकीरे घर माहि । मोदक वहराया वले जावसु जी, मनमें रलिया यत थाय ॥ ७ सा० ॥ वार २ घर आया साहरे जी यो नहि साधु आचार । सांसो पड्यो मन माहरे

जी, पुंठ करुं निरधार ॥ ८ सा० ॥ लाज करि पूछुं नहि जी, सङ्का रहि मन माहि । पुछ्या क्रोध आवे सही जी, दीसे खोटा मुनि राय ॥ ए सा० ॥ दोहा) चतुर विचक्षण जे हुवे, काढे तुरत निकाल साचा हुवे ते सर वहे, खोटा देवे टाल ॥ १ ॥ साची समकित तेहनी, आपो काढ केस । कु गुरु छोडै पलकमे, करे सु गुरु सुं प्रेम ॥ २ ॥ (ढाल० ६ जगत गुरु त्रिसला नन्दन वीर जी० (एदेशी० भगवंत नगरी द्वारका जी, बारे जोजन परमाण कृष्ण नरेसर राजीयो जी, ज्यांरी तिन खण्ड मे आण ॥ १ मुनिसर एक करुं अरदास० ॥ देव लोक सरिखी द्वारिका जी, देख्यां हरषित थाय घर छै घणाई सामठा जी, पेख्या चित उल्लास ॥ २ सु० ॥ बहुत्तर कोड़ घर बाहिरै जी, नगरी मे साठ किरोड़ । लोक सहु सुखीया वसै जी, राम कृष्णरी जोड़ ॥ ३ मु० ॥ लाखां किरोडां धनी जी नगरी माहै लोक । खाने पीने खरचने जी, पुन्य सुं मिलीया थोक ॥ ४ मु० ॥ रागी घणा जिन धर्मना जी, सेठ सेनापति राजान । साधु रा दरशन बिना जी, मुखमें न घाले धान ॥ ५ मु० ॥

वातज अचरिज कारणे जी, माहरे मनमे समाय कह्या में लालच कोनहि जी, विन कह्या रह्यो न जाय ॥ ६ मु० ॥ हुं पुछुं इण कारणे जी, साधा ने नलाधो आहार। माहरे नागरा खाचीया जी, आया तीजी वार ॥ ७ मु० ॥ मेतो साम्रमे सांभल्यी जी, नहीं आवे वारम्वार। ए सांसो मुझने पड्यो जी, पुछ करुं निरधार ॥ ८ मु० ॥ वलिता मुनिवर इसकी कहे जी, नगरी मे वहोत दातार। तिन सिंघाड़ा आवीया जी, मेठां छउं अणगार ॥ ए देवकी सङ्का मूलन आण०) किन नगरी रा वासिया जी, क्या रिद्ध हुंतो जि ताह। किन मातारा जनमिया जी, कांई पितारो नाम ॥ १० दे० ॥ नाग सिरीरा रूीकरा वाई, सुलसां माहरी माय। भद्दल पुर रा वासिया वाई, घर छोड्या छउनाय ॥ ११ दे० ॥ वत्तीस २ रम्ना तजि वाई वत्तीस से २ दात। कुटम्वी छोड्या सहु रोवता वाई विदा २ करती माय ॥ १२ दे० ॥ नेम तणी वाणी सुणी वाई, जानो अथिर संसार। प्रतिवोध्या छउं जना २ वाई, लीधो संयम भार ॥ १३ दे० ॥ सुध साधांरां वचन मैं वाई, सङ्का मूलन आण। थांरे

वहिर नै गया वार्क, तेतो वीजा जाण ॥ १४ दे॰ दोहा) वचन सुन्या मुनिवर तणा, मनमे हरपित थाय । मोही विलुधी देवकी, जोय रही चितलाय १ ॥ (ढाल॰ ७) पण्डित पांचसे पुजित परषदारे॰ एदेशी॰) नैणा नीहाले हो राणी देवकी रे, एठे वे आणगार । रुप तणी थारे ठे सम्पदारे, नल कुवेर अणुहार ॥ १ नै॰ ॥ सुरतमे दीसे अति सोभता रे, घणा जीवांरे हेत । जिन घरमे सुं ए ठक नीसख्या रे, लांरे रहीया केत ॥ २ नै॰ ॥ इण जणीहारे माहरे राजमे रे, अवर न दीसै कोय । केतो हुवे माहरे कानजी रे, एसौने अचिरज होय ३ नै॰॥ सगपण कोई निजर आवे नही रे, हिवणा सगपण एह । मोने सुध खवर नको पड़ी रे, इम किम जाग्यो नेह ॥ ४ नै॰ ॥ श्रावक रो चारित्रीया ऊपरै रे, हुवे धर्म सनेह । मोज्युं परवस कोठ ना परे रे, इम किम जाग्यो नेह ॥ ५ नै॰ ॥ (दोहा करय विमासन देवकी, हुं वलिहारी तास । एहवा मुनिवर देखने, पामी वहुत हुलास ॥ १ ॥ ढाल॰ ८ चन्द गुपत राजा सुणो॰ (एदेशी॰) गल पणे मोने कह्यो हून्तो, अयवन्तो आणगारो रे । आठ

जने सी देवकी, नही कोई भरत मझारो रे ॥ २ करय वीमांसन देवकी०) भरय क्षेत्रमे सामठा किन मातारा जायारे । तिन सिंघाड़ा आवीया, मै हाथां सुं वहराया रे ॥ २ क० ॥ जोतिक भाख्यो थे विचारमे, वचन पड़तो हेठोरे । पुत्र देख पारका सांसो पड़ियो मोटोरे ॥ ३ क० ॥ आज्ञा देता मातारो, जीव हुईठे केमोरे । थां वेटांरे उपरे, केम उतरयो प्रेमोरे ॥ ४ क० ॥ संसार छोड़ी नीसरया, लागो धर्मसुं प्रेमोरे । थां वेटा विना मायड़ी दिन काढे ठे केमोरे ॥ ५ क० ॥ सुन्दर रूप सुहामणो, जाने देव कुमारो रे । जोति कान्ति कर दीपता, ए छउं अणगारो रे ॥ ६ क० ॥ एहवो सुत जन्म्या विना, कौं कर होय आनन्दोरे । यो मोने सांसो पड्यो, भांजे नेम दिनन्दो रे ॥ ७ क० पुछन चाली देवकी, ए थांहरे घर आयारे । आंगुच भाख्यो श्री नेमजी, एतो थांहरा जायारे ८ क० ॥ (दोहा) वचन सुणया जिनवर तणा, मनमे हरप अपार । एहवा सुत मै जनमीया, धन माहिरो अवतार ॥ २ ॥ (ढाल० ए) वेदे मुनिवर वहिरण पांगुरया जी० (एदेशी०) देवकी

तो आई नन्दन वांदवारे) ऊभी रहीछै साहमो मालरे । कस तुटी कंचु तणीरे, तुटी छै दूधा केरी धाररे ॥ १ दे० ॥ तन मन हीयड़ो ऊलस्यो रे, फुल नै फुलीछै तिणरो देहरे । वलियां मे वांह मावै नहीरे, देखंतां लोचन तृपत न थायरे ॥ २ दे० सालो तो जांज्यो नेमजी रे, एछै छउ थाहरा बालरे आंख्यां माहि आंसु पड़ेरे, जाणे तुटीछै मोत्पारी मालरे ॥ ३ दे० ॥ देवकी तो मुनिसस्याने वांदनेरे पाछी आई महिलां माहिरे । सोच फिकर मे वैठी देवकी रे, आरत ध्यान रही छै ध्यायरे ॥ ४ दे० दोहा) इण अवसर श्री कृष्णजी, माता वन्दन जाय । वत लांया वोलै नही, ऊभा कृष्ण माहा-राय ॥ १ ॥ वलिता कहे श्री कृष्णजी, कहो चिंता थई आज । सोच फिकर राखो मती, सारुं तुमारा काज ॥ २ ॥ थेइ जो चिन्ता करो, औरण सुखीया कोय । माहरें इण संसारमे, मात समो नही कोय ३ ॥ आज्ञा लोपी किण आपरी, माहरा अन्तेवर माहि । तिणरो नाम वताय द्यो, काढुं हाथ समाय ४ ॥ वहुयां थाहरा कथनमे, लुलि लुलि लागुं पाय । सगलां ने पगे लगावतां, काल कितो एक

जाय ॥ ५ ॥ (ढाल० १०) ढंढण ऋषजिने वांदना हुंवारी (एदेशी) हुं तुझ आगल सि कहूं कान-ईया, त्रितक दुखनि वातरे ॥ गिरधारी लाल० जगमे सुखणी हे घणी ॥ क० ॥ घणि दुखीयांरी थांरी मातरे ॥ १ गि० हु० ॥ एक नही हुल रावीया का० । गोदन लियो खिण मातरे ॥ २ गि० हु० ॥ छउं वधीया सुलसा घरे । का० । आई परतिख देखरे ॥ गि० ॥ वात कहि श्री नेमजी । का० । तिनमे मिनन मेखरे ॥ ३ गि० हुं० ॥ छवतो इम मोटा हुवा । का० । एक रह्यो तुं पासरे । गि० । तो खमाया रा राखता । का० । आवै छे छमासरे ४ गि० हुं० ॥ बालपणे रा बोलड़ा । का० । एकन पुरी आसरे ॥ गि० ॥ आसा अलुधी हूं रही । का० जार मुई दश मासरे ॥ ५ गि० हुं० ॥ हरपन दीधो हालरो । का० । पालणीयें ने पोढ़ायरे ॥ गि० ॥ हालरियो देवा तणो । का० । हुंस रहि मन माहिरे ६ गि० हुं० ॥ आंगण नकराया इथड़ा । का० । आंगु लीयां विच लगायरे ॥ गि० ॥ सहुजायाती ना मिल्या । का० । जामण केम कहायरे ॥ ७ गि० हुं० सोल वरस वांनो वध्यो । का० । तुं विण जमुना

तीररे ॥ गि० ॥ नन्द यशोदा ने घरे । का० । नाम दियोछे अहीररे ॥ ८ गि० हुं० ॥ बाल पणे छांनो बध्यो । का० । अब उघड़ीया थांहरा लागरे ॥ गि० जमुना जलमे जायने । का० । नाथ्यो कालो नागरे ए गि० हु० ॥ जगमे मोटी मोहनी । का० । उदय थई माहरे आजरे ॥ गि० ॥ के जीव जाने माहरो का० । के जाने जिन राजरे ॥ १० गि० हुं० ॥ (दोहा कृष्ण कहे हो मातजी, आरत ध्यान निवार । लघु बन्धव होसी माहरे, मत करो फिकर लिगार ॥ १ घणा सन्तोषी मातने, आया पोषद साल । मित्र देव आराधीयो, तेलो कीधो तिन काल ॥ २ ॥ तिन दिवस पूरा हुवा, आयो देवता आय । किण कारण आराधीयो, कारज नाम वताय ॥ ३ ॥ कृष्ण कहें सुन माहरे, बन्धव रीछे चाह । इण कारण आराधीयो, विलखी जाणी माय ॥ ४ ॥ बन्धव होसी तांहरे, देव लोकथी आय । बालपणे दीक्षा लेसी, इम गयो देव जनाय ॥ ५ ॥ (ढाल ११ जम्बु जुगत सुं प्रभवने उपदिसे (एदेशी०) वचन सुनी देवता तणी, कृष्ण आया माता पासरे । घणी सन्तोषी मातने, हियड़े अनन्त उल्हास ॥ १ हि०

पुत्र वसुदेवरा गज सुकमाल गोद्र गामीरे॥ (एआंक काट किलेथक गयां पछे, च्वीयो देवलोक सुं आयरे । वसुराजा राणी देवकी, उपनो कुक्षमे आयरे ॥ २ पु० ॥ सवा नव मासे जनमीया, सुख माल शरीर सरुप रे । कीधो महोछव कृष्णजी मन हरष धरी ने चुंपरे ॥ ३ पु० ॥ तीजै दिन चन्द्र सूरज नो, दरशण देखायो तामरे । मुनक निकाल्यो दिन वारमे, गज सुकमाल दियो नामरे ॥ ४ पु० मात पिता वल कृष्णजी वाल्हो घणो जीवन प्राण रे । आठ वर्ष विता पछे, हुवो वहोत्तर कलारो जाण रे ॥ ५ पु० ॥ एक दिन नेम पधारीया द्वारिका नगरी मझाररे । कृष्णजी सुणी वधावणी, मनने हरष अपाररे ॥ ६ पु० ॥ स्नान मंजन कीया कृष्ण जी चन्दन लेप लगायरे । चतुरङ्गी सेन्या सझी श्री नेम वान्दन ने जायरे ॥ ७ पु० ॥ गज सुकमाल साथे लीयो, पाछे हुवा कृष्ण यदूरायरे । हस्तीस्कन्धे वैसी निसरीया, लोले चामर विझाय रे ॥ ८ पु० ॥ राज मारग जातां थका, दीठी कन्या अनूपरे । लावनता कर सोभती, कृष्णजी तिणरे रूपरे ॥ ९ पु० ॥ गज सुकमाल परणावा, उपनी

कृष्णजी रे मन माहिरे । चाकर पुरस तेड़ी कहे पुत्री माङ्गो सोमल पासे जायरे ॥ १० पु० ॥ चाकर सुण हरषित थयो, पुत्री माङ्गी सौमल पासे जाय रे । सोमल कहे में टीकीयो, पुत्री परणे कृष्ण जीरो भायरे ॥ ११ पु० ॥ सोमल री लेई आगन्या कुमरी किधो महिलां माहिरे । कुमरी अन्तेवर मे रहे, जाय वसांणी ताहिरे ॥ १२ पु० ॥ ए सग पण कर नीसऱ्या, आघा चाल्या यदु रायरे । अति सय दीठा भगवन्त रा, हेठा उतरीया दोउं भाय रे ॥ १३ पु० ॥ पाँच अभिगम साचवी, लुलि २ लागुं पायरे । परदक्षणा दीधी प्रेमसुं, दोनु सन मुख बैठा आयरे ॥ १४ पु० ॥ भगवन्त दीधी वेशना, सुनि हरषित थायरे । लोका लोक तत्व तणा, जिन २ दिना वतायरे ॥ १५ पु० ॥ (दोहा वाणी सुनने कृष्णजी, आया जिनदिश जाय । गज सुकमाल वैरागीयो, वोले किन बिध वाय ॥ १ ॥ हाथ जोड़ीणे इम कहे, सरधा तुमारा वेण थे तारक भव जीवरा, मिलिया साचा सैण ॥ २ मात पिताने पुछने, लेसुं संयम भार । संसार जानो कारमो, मोक्ष तणा सुखसार ॥ ३ ॥ मलिता जिन

इसड़ी कहे, जो दिक्षा आईदाय। जिका घड़ी जावे तिका, फिर पाछो नही आय ॥ ४ ॥ वन्दना करी श्री नेमसुं, आया माता पास। आज्ञा मांगे किन विधे, ते सुनज्यो उल्हास ॥ ५ ॥ (ढाल १२ चन्द्रावली की चालमे० (एदेशी०) वाणी श्री जिन राय तणी काने सुनीरी माई। अन्तर हीया रो आंख आज माहरी ऊघड़ी ॥ चलती बोले माय कुंवारी थांहरी रे जाया। सुनीय जिनन्द री वाण रुड़ी गत ताहरी ॥ १ ॥ पुत्र कहे मै वात सांची कर सरदहि री माय। मीठी लागे मोहि साकर सुधां जिसी रेमाई ॥ दीजे अनुमति मोय संयम लेस्युं सही रेमाई। नकरी अगन्यारी जेज कुमर इसड़ी कही ॥ २ ॥ वचन अपूरव माय कुँवर रा सांजल्या रेमाई। घणी मुरछा गति आय धसक धरणी ढलीरी ॥ खलको हाथांरी चूड़ केसर वेणी वीखरया रेमाई। ओढ़णी गयो दूर धसक मोकल पऱ्या ॥ ३ ॥ मोह तणे वस माय सुरत चलती रही रेमाई। ठण्ढा शीतल वाय साव चेत बैठी करी ॥ पुत्र ज साहमो जोय रही मा जोवती रेमाई मोह नणे वस वैण वोले माय रोवती ॥ ४ ॥ साध-

पणो नही सहल,जोया जामन कहे,रेमाई। तुं नानड़ीयो बाल परिसा,किम सहे॥ त्रिविध २ कर पञ्च महाव्रत पालवा रेमाई। नान्हा मोटा दोष अहोनिस टालवा॥ ५॥ दोष बयालीस टाल करी रेवठ गोचरी रेमाई। असर कभे जेम चिन्ता मने सोचरी॥ रहणो साधारे पास विनेसुं, जाणणो रे माई। रात पञ्या पिठ शीत न वासी राखणी॥ ६ रतन कचोला छोड़ लैणी रेवठ काठली, रेमाई। जाव जीव लग बादन जीवणी पाठली॥ अरस निरस रो आहार करणी बठ पातर रेमाई। ए सुख सेजां छोड़ सोवणो साथरे॥ ७॥ नावे धोवे नहि मुहड़े राखे मुहपती रेमाई। पहने मयला वेश जिके जैनग जती॥ मरण जीवन री बात माता जी थां कही रेमाई। थो अनुमत आदेश संयम लेस्यु सही॥ ८॥ कायरने ठे दुरलभ माताजी या कही रेमाई। सूराने ठे राहज कुंवर ईसडी कही॥ सोमला नाने नार परनाउं पदमणी रेमाई सोमल री बेटी परधान कला चतुराई घणी॥ ९ परणो पुनवन्ता,नार जाय कुण हे जती रेमाई। कृष्ण सरीसा वीर रहणो आरामती॥ लीना पर-

घामानें घेर विषे माहा पापणी रेमाई। जगमे सगली नार माता कर थापणी ॥ १० ॥ लीना पर- णामाने घेर विपे माहा तेवड़ी रेमाई। अशुच २ रो नण्डार जामन नारी कही। स्वारथी रो सगाई जामण के जिनवर कही रेमाई। मल मुत्ररो नण्डार जाण परणु नही ॥ ११ ॥ करणी उग्र विहार सह्रिणी सीतावडी रेजाया। माहरो कहियो मान तु नानड़िया वडो ॥ नही पलकरी आस जाणो काल कर्दीयो रेमाई। ओ जग मरतो देख जामण तु क्रन्दियो ॥ १२ ॥ द्वारका ती रो राज दिराऊं वठ तो थणी रेजाया। हाथी घोडा रथ पायक प्यादल घणी ॥ पलटे रङ्क पतङ्ग फिर तिणरो इसो रेमाई। तिण ऊपर विसास जामण करणो किसो १३ ॥ सहस वहोत्तर माय पुत्र वसुदेवरा रेमाई। जीवरो प्राणाधार कृष्ण वलदेवरा ॥ जाया सहस वत्तीस तणी मे मोकलो रेजाया। तुझ अनुमति देवा हुन करसि एकलो ॥ १४ ॥ वहूला मालक नाइ तेगया रेजाया। परवाइ ज्युं अनन्त ज्ञानी देवा कह्या ॥ श्री नेम प्रभु पास माहाव्रत आदरी रेमाई। जाव जीव लग मात नकरू परमादरी ॥ १५

हाथ जोड़ीने अरज करे मा सुं रेमाई । थों अनु-
मति आदेश मनोरथ मुझे फले ॥ जो तुम होवे
सुख वाल्हुड़ा तिम करो रेजाया । जादव कुल ऊज
बाल मुगति वेगी वरो ॥ १६ ॥ चढ़ीया मन वैराग
मोह कर्म तोड़ीया रेजाया । कड़ा मोति हार गहना
सहु खोलने रेजाया । दिक्षा थो श्री नेम जली पुल
जोयने ॥ १७ ॥ जाव जीव लगे सेवा करुं तुझ
आकरि रेजाया । मूल थकी जड़ काढुं कर्म विपाक
री ॥ माहरें खिमा गढ़ फौज माहें आउं चली रे
जाया । वारे भेदे तप यूथ चोकि चढुं ॥ १८ ॥
बारें भावना री नाल चढ़ाउं कांगरे रेजाया । तोडुं
आठे कर्म बिराजुं मोक्षमे ॥ काउसग कीनो जाय
काय मनकरी रेजाया । जीता परिसा घोर पहुंता
शिवपुरी ॥ १९ ॥ (दोहा) कृष्णजी सुन आया
इहां, बोले वाणी एम । हीयड़ी काठो भीड़ने, तुं
चारित्र लेवै केम ॥ १ ॥ सुख भोगवो संसार ना
ए मत काढ़ो बात । मारे एकज बन्धवो विरहो
खम्यो नजात ॥ २ ॥ (ढाल १३) रे जाया तो
बिन घड़ीरे छ मास (प्रदेशी) कृष्णजी सुनतां
बेवकीरे, बोले एहवी वाय । राज बैठ तुं नानड़ारे

माहरे देखनरी मन माहिरे ॥ १ ॥ बन्धव कह्या हमारो मान०) इम सांभल बोल्यो नहिरे, देवकी हरषित थाय । जली दुइ घरमे रह्योरे, दस्या राज बेठाय रेजाया ॥ तो बिन घड़िरे छमास० २ ॥ विनय बन्त श्री कृष्णजीरे, माता ने डुखणी जान । वले मोह जाई तणीरे, राज वेसाने सहिरे जाया ॥ ३ तो० ॥ करय मोटे मण्डान सुंरे, मेल्या सगला साज स हाथे गज सुकमाल नेरे, कृष्ण बैसांणे राजरे ॥ ४ बन्धव सुखे पालज्यो राज० ॥ ढाणमती नो राज वीरे, तुं सगलांरो नाथ । हाल हुकम सब तांहरारे थांहरी कोयन लोपे कारे ॥ ५ ब० सु० ॥ राज ऋद्ध सहु तांहरारे, सगलाने थांहरी आण । कृष्ण कहैं मन हरख सुंजी, उजा राणो राणरे ॥ ६ वं० सु० ॥ कुँवर कहै सुण बन्धवारे, मोनै कीयो सगलारो नाथ लाउ ओघाने पातरारे, माहरी आन म लोपो वातरे ७ वं० थो अनुमति आदेश०) ॥ काम नही कोई राज सुरे, लेणो संयम भार । घरमे रती पांमुं नहीरे, जांण्यो अथिर संसाररे ॥ ८ वं० सु० ॥ वचन सुणी नै कृष्णजीरे, हुवा घणां दिलगीर । बले बिलखी थई देवकीरे, नयणां ढलक्यो नीररे

ए जाया इम किम दिजै ठेह० ॥ समरथ नही कोई राखवारे, गज सुकमाल कुमार । कीयो महोछव कृष्णजीरे, सुत्रमे घणा विस्तारेरे ॥ १० जाया कट-कन दीजै ठेह० ॥ मात पिता वले कृष्णजीरे, गज सुकमाल ले साथ । नेम जिणन्दने आगणे जी, बोले जोडी हाथरे ॥ ११ जिनेसर० ॥ (मुक जिन-लडी अवधार०) केह आहार वहिरावै सुकतोरे, वस्त्र पात्र ने जाण । कुंवर हूवो वैरागीयोरे, आप समीपे आण ॥ १२ जिनेसर० मु० ॥ दे बोलावण देवकीरे, इशाण कुणमे जाय । गहिणा वस्त्र उतार नैजी, जीव लहिरीयां जायरे ॥ १३ जाया इम किम दीजै ठेह० ॥ (दोहा) माता पलगट साडीयो, गहणा ले तिणवार । आंसु छुटा किन विधै, जाने मेघा धार ॥ १ ॥ ढीले मोरे हार पोवीयो, जादल रस्या तिणवार । तूटे हार मोति पडे, जाने आंसु धार ॥ २ ॥ हीयडो फाटे लालनो, माइसो जोय तिवार । माइ तांरो जीवठे, वीछरुवाणी दे यार ॥ ३ सीख देवे माता हिवै, म्हांने छोडे आज । वहुत यतन कर राखने, सारे आतम काज ॥ ४ ॥ पांच प्रमाद जो पर हरे, आलस आंगस आंण । आराधो

जिन आगन्या, पहुंचै ज्यो निरवाण ॥ ५ ॥ आगन्या दिधी श्री नेमजी, आया जिन दिस जाय । गज सुकमाल संयम लीयो, बोले किन विध वाय ॥ ६

ढाल० १४) फाग मूला दिकनी मोरड़ी (एदेशी

जन्म मरण री लायो, जीव जिल रह्यो चिहू गत मायो । पहनि लाय वारे काढ़ीजै, सामायिक चारित्र लीजै ॥ १ ॥ नेम दियो संयम सारो, सिखायो सरव आचारो । विनय करी बोले जोड़ी हाथो, मोनै आगन्या द्यो जगनाथो ॥ २ ॥ जो हू मसान भूमिका जाउं, बारवी पड़िमा ठाउं; नेम बोल्या अमृत वाणी ३ ॥ आगन्या हुई गज सुकमालो, गया मसाण सुभ माहाकालो । जठे कायर रो फाटे हीयो, तिण ठामे काउसग कीयो ॥ ४ ॥ सोमल आयो तिणकालो कोप्यो देखी गज सुकमालो । काली हीण अमावस रो जायो, मारी बेटीनै दुख लगायो ॥ ५ ॥ माहरी कन्या अकन कुंवारी, घर माहि ले जाय वैसारी । तो मारुने काढुं वैरो, जोईयां भी नखन दीसै नेड़ो ॥ ६ ॥ लीनि माटी ल्यायो तिनकालो बांध्यो मस्तक उपर पालो । खेराणा खरा लाल अंगारो घाल्या मस्तक उपर तिनवारो ॥ ७ ॥ खीचड़ी ज्युं खद

वद सीजें, लोही मांस ऊकलतो ठीजे । तड़ तड़ नाड़ां ते तुटन्ती, सवद वोलै कपाल फुटन्ती ॥ ८ मुनि सीस धुण्यो नही कोई, खिमा किधो समता दिलआई । सोमल उपर रोस न आंण्यो, आपरो सिझो पातिक जांण्यो ॥ ९ ॥ ध्यायो निरमल सुकल ध्यानो, उपजायो केवल ज्ञानो । धड़ तुटनै कर्म सोखै, मुनि जाय विराज्या मोक्षे ॥ १० ॥ (दुहा दूजे दिन श्री कृष्णजी, कर मोटे मण्डाण । नेम वान्दन नै नीसर्या, हरष घणें मण्डाण ॥ १ ॥ मारग मै ईक मानवी, ईट लेजावै दूख देख । अणु-करुणा आणी कृष्णजी, ईट उपाड़ी एक ॥ २ ॥ साथे सेन्या अतिघणी, ईक २ ईट उठाय । फेरा टाल्या तिन पुरुष रा, आणी मूंकि घर माय ॥ ३ जाय वान्द्या श्री नेमने, वैठा सनमुख आय । गज सुकमाल दीसें नही, पुछे कृष्ण महाराज ॥ ४ ॥ ढाल० १५ वीछीयारी देशी) हांरे लाला फूल अक्लोठो फूटरो, किणने लाधो होय तो वतायहो म्हारे लाला हाथ जोड़ी करुं वीनती, वली नीची सीस नमाय हो स्वामी, गज सुकमाल दीसै नही वन्दननी मनमाहि हाँस हो स्वामी, अरज करु थांसु

विनती ॥ १ ॥ बन्धव गज सुकमाल नै, नेम कहे सुणो कृष्णजी; साधु गज सुकमाल हो कान्हा । जिण कारण दीक्षा लीया, सार्‍या आतम काज हो कान्हा; कर्म खपाय मुगते गया ॥ ५ ॥ श्री मरण समाधी पामीयो, किम सार्‍या आतम काज हो स्वामी । मारग मे इक मानवी, आयनें दीधो साज हो कान्हा ॥ हा० ३ ॥ वाणी सुणी नै श्री कृष्णजी आई क्रोध अपार हो स्वामी । बन्धव गज सुकमाल ने, कुण छै मारण हार हो कान्हा ॥ ४ ॥ वन्दण री मनमे रही, काली अमावसरो जन्मीयो, हीण चवदस रो रात हो स्वामी, कांण न राखै मांहरी अकाटो कीधो बन्धव घात हो स्वामी ॥ हा० ५ ॥ नेम कहे सुणो कृष्णजी, आया वन्दण काज हो कान्हा, मारगमे इक पुरपरा, फेरा टाल दीया तें दे साल हो कान्हा, समता थी सुख पामीये ॥ ५ गज सुकमाल अणगार रो, फेरा टाल्या अनन्त जाण हो कान्हा । क्रोधकरो किण कारणै, जाय पोहता निरवाण हो कान्हा ॥ स० ६ ॥ नाम वतावो तेहनो, नेम वोल्या तिण वार हो कान्हा । धसके पड़सी तुम देखने, जुदा होयसी जीव नें प्राण हो

कान्हा ॥ स० ॥ बन्दना कर श्री नेमने, आया नगरी मांही हो कान्हा । आरत ध्यान ध्यातां थका मोह तणै वस थाय हो कान्हा ॥ स० ॥ सोमल रूरप्यो अति घणो पुछा करसी यदुराय हो, स्वामी नेम से बात छानी नहीं; देशी मोही बताय हो स्वामी का भोने कुमोत मारसी ॥ ९ ॥ जानुं कृष्ण आयो काहै नहीं, हुं जाउं सूझो लेय हो, इम चिन्तवी घरसुं नीसर्यो, साहमा मिली या कृष्ण महाराज हो, सोमल रूरप्यो अतिघनो ॥ १० ॥ धड़ हुड़ लागो धूजवा, धसको पड़ीयो सामी नाल हो, धरणी ढल्यो तिन अवसरै, सोमल करगयो कालहो भरीने माठी गतिगयो ॥ ११ ॥ (दोहा) कृष्ण कहै इण सोमलै, मार्यो गज सुकमाल । पगां बन्धावो जेवड़ा, द्वारका माहि घीटाल ॥ १ ॥ तीन च्यार मारग मिलै, आमो सामी ताण । मुखमैं थुको एहने, कोय न राखो काण ॥ २ ॥ इम कहैं चाकर पुरष नै, आया आपन ठांम । मोह तणै वस जाणज्यो, धर्म तणो नही काम ॥ ३ ॥ आठ पुत्र जाया देवकी, साल पहुला मोह । आठमां श्री कृष्णजी, करसी करसांरो सोक ॥ ४ ॥ गज सुक-

मात तणो चरित्र, सांभल ने नरनार । साधु श्रावक व्रत आदरे, जे करै खेवो पार ॥ ५ ॥ इति श्री गज सुकमाल राज ऋषि माता देवकी जीरो चौपाई सम्पूर्ण ॥ ७ ॥



॥ ● अथ अञ्जणा सतीरो रास लिख्यते ● ॥

दोहा) अंजणा मोटी सती, पाल्यो सील रसाल । अशुभ कर्म उदय हुवा, आई अनहुतो आल ॥ सील पाल्यो तिण किन विधे, किन विध आयो आल । हिवै धूर सुं उत्पति कहूं, सुणज्यो सुरत सम्भाल ॥ २ ॥ (ढाल० १) कड़खानी चालमे (एदेशी) माहिन्द पुरी जुग जानिये, राजा हो महिन्द वसै तिण ठामक; तसु पटराणी छै रुवड़ी। मांनवेगा राणी तेहनो नामक, सौ पुत्र राणी तिण जनमीया; ते रूपासें रूवड़ी छै अभिरामक ॥ त्यारे केड़ें जाई एक बालिका, अञ्जना कुमरी तेहनो नांमक; सतीरे शीरोमनी

अंजना० ॥ १ आ० ॥ मात पिता ने बाली घणी, बन्धव सगलां नै गमती अत्यन्तक; रूपमैं छै रलिया मणी । नैण दीठा घणो हरष धरन्तक, भजन सगाने सुहामणी; सखी सहेल्यां में रही नित खेलक ॥ विद्या भणी सुख अति घणी, दिन दिन बाधै जिम चम्पक वेलक; सतीरे० ॥ २ ॥ अञ्जना कुमरी मोटी हुई, चिन्तवी नै राय चित्त मझारक; पछै वेग प्रधान तेड़ावीयो । कहै अंजना वर तणी करोरे विचारक, जब एक कहै रावण नै दीजीयै; एक कहै दीजीये मेघ कुमारक ॥ ते पुत्र छै राजा रावण तणो, तिनरो जोवन रूप घणो श्रीकारक; सती० ॥ ३ ॥ जब एक कहै इम सांभलो वरस अठार मैं मेघ कुमारक; चारित्र लेसी वैराग सुं । वरस छवीश मैं जासी मोक्ष मझारक, तो कन्यानै सुख किहां थकी; सघलाई कर देखो मनमैं विचारक ॥ मेघ कुमार नै द्यो मती, और विचारो कोई राज कुमारक; सती० ॥ ४ ॥ रतन पुरी तणी राजवी, राय पैलाद विद्याधर नामक; तेहनो पुत्र अति दीपतो । पवन कुमार छै तेहनो नामक, अंजना ने वर जोग छै; ए राज कीयो

वचन प्रमांनक ॥ पाछै दुत मेल्यो तिण नगरी मां सगपण कीधो छै मोटे मण्डाणक; सती० ॥ ५ ॥ रुपने गुण अंजनां तणो, परगट हुवो छै लोकमां तांमक; ते पवन कुमार जि सांभल्यो । जब प्रहस्त मन्त्री ने कहे छै आंमक, कहे आपेजावां रुप फेरने जोवानै अंजणां नो रुप तिण वारक ॥ पाछे मती करी दोनु नीकल्या, ते आय उभा रह्या मेहल तले तिणवारक; सती० ॥ ६ ॥ हिवै पवन जी नीरखे छै अंजणां, प्रहस्त नीचो घाली रह्यो दिष्टक; रुपसें जांण देवंगणां । वाणी बोलै जाणे कोयल वांणक चम्पक वरण चतुर घणी, आंख्या जांने मृग नैन समांनक, सती० ॥ ७ ॥ अंजणा बैठी छै सिंहासने दोउ पासे अनेक सखीयां तणे वृन्दक; वस्त्र आभुषण अङ्गे धर्या । शोभ रही जाणे पूनम चन्दक हिवे वसन्त माला इम उचरे; बाईने जोग जोडी मील्यो श्री कारक, जेहवी पवन जी जानीये; तेहवी पांमी छै अजणां नारक; सती० ॥ ८ ॥ हिवै बीजी सखी इम उचरे । पहिला तो वर मन चिन्तव्यो जेहक ॥ तेहवो पवनजी वर नही । वरस अढार में चारित्र लेहक ॥ पांचु इन्द्री ने जीपतो । वरस

आणीश थें थासी मोक्क ॥ तिहां कारण ज
करतीसो । कन्याने वर तणो जांणीयो दुख्क; सती
ए ॥ हिवे अंजणां गुण ईम उचरे, देइ बन धन
ते नर मो अवतारक; करम करणी करए कारणे
वेगो होजासी मुगत मझारक, गुण गावो तिण
पुरुषना; पवनजी सुणीने भाग्यो अति छेदक ॥
आलो रे नार कुलक्षणी । उपनोरे क्रोध विशेषक
सती० ॥ १० ॥ हिवे पवनजी मनमांहे चिन्तवे,
आ रुपमें रूवड़ी अत्यन्त वखाणक; मन मांहि
मैली रे पापणी । चित चोखो नही एक ठिकानक
पुरुष परायां सुं मनकरें; तो हीवे करणो कवन
उपायक ॥ जो छोड़ु तो एहुने वर घणा, परणूंने
पर हरुं तुं दुख थायक; सती० ॥ ११ ॥ (दोहा)
इम चिन्तवि तिहां पवनजी, पाछा चाल्या तांम ।
आया नगरी आपरी, भोगवै सुख अभिराम ॥ १२
ढाल० तेहिजढै०) हिवे मात पिता अजणां तणो
लगन लीखा वी यो मोटै मण्डाणक; विवाह करवा
अजणां तणो । रतन पुरी वेग मेलियो जांणक,
महोछव मांड़ीयो अति घणो; बाज रहा तिहां
ढोल निशाणक ॥ मङ्गल गावै तै गोरड़ी, जबव

कर रह्या तिहां कोड़ किल्याणक ॥ सती० १३ ॥
हिवे राय पेलाद तेड़ा विया, जांन में जाओ वडा
वड़ा २ राजांनक । हय गज रथ सझी या घणां,
नेह तस्यां सजन नै दीयो घणी सन मांनक ॥ धन
साथे दीयो खरचवा, मोटे मण्डाण चाल्या लेई
जांनक । सामन्त साथे दीया घणां, जोधा शुभट
सेन्या सावधानक ॥ सती० १४ ॥ हिवे बींद वणाव
कीयो घणो; गैहणां आभुषण पहरिया ताहिक ।
सखियां गावैरे सोहला, देवै आशीस केतु मत्नी
मातक ॥ लूण उतारैरे वैनड़ी, रुप देख मन हर-
षित थायक । जांचक बोलै बिरुदावली, ईण विध
पवन जी परण नवा जायक ॥ सती० १५ ॥ सेन्या
सिणगारी चतुरङ्गणी, गाजेजी अम्बर वाजेजी
तूरक । सजन सङ्गा मिलीया घणा, जानक चालै
जांणे गङ्गानो पूरक ॥ वर विद्याधर दीपतो, सोज
रह्यो तिणरो वदन स नुरक । चिहूं दिश साथे सेवक
घणा, हाथ जोड़ी रह्या ऊभा हजुरक ॥ सती० १६
महिन्द पुरी नेड़ा आवीया, आई वधाई राजी
हुवो रायक । दीधी वधामणी तेहने, हरषित हुई
अञ्जनां तणी मातक ॥ आरती नो महोछव करे,

महिन्द राजा मन हरप न मायक । सजन सगा मिलीया घणा, सेन्या लेई राजा साहमो जि जायक सती० १७ ॥ महिन्द राजा साहामो आवियो, ढोल दामामा नें घुरै निशानक । राणा हो राण सहु मिल्या, व्यापीयो तिमर नै आथम्यो भाणक सुसरो सांभे लै आवियो, पवन जी देखने आनंद थायक । धवल मङ्गल गावै गोरड़ी, लोक अञ्जनां नो वर जोयवा जायक ॥ सती० १८ ॥ महिन्द राजा मोटा राजा भणी, अति घणो दियो आदर सन मानक । ऊछरङ्ग मन माहे अति घणी, भाव भगति सुं मिलीयो राजानक ॥ जांन ऊतरीरे आंणले, आपियो भोजन विवध पकवांनक । ऊपर सिखर ए साचवै, खादिम स्वादिम आप्पा घणा मिष्टानक ॥ सती० १९ ॥ हिवै तोरण पवन जी आविया, तोहि अञ्जणां ऊपरे घणो अभावक । नाम सुण्या हि राजी नही, मिलन हि मन तेह नि भावक ॥ धवल मङ्गल गावै गोरड़ी, पूरण सासु करै बहु भांतक । पिन मनमे न भावै पवनने, योतो परणेरे अंजणां ने बालवा दाहक ॥ सती० २० ॥ रूपा तणी रे मण्डप रच्यो, सोना तणी रचे तिहां

वेहक।सोवन पाट मीन्या जड्यो, अंजणां ने पवन वेठा ठे तेहक ॥ हाथ लेवे हाथ मेल्यो तिहां, नयन निहाले ठै अंजणां नारक । पिण पवनने मूल गमे नहीं, धेष जागे पैहली विचारक ॥ सती० २१ ॥ हिवे पवन जी परण ने उतस्या, कीधी पहरावनी अंजणां नें तातक । गयवर आ पीया अति घणा ताजा तुरङ्ग दीधा विख्यातक ॥ कनक रत्न वहु आपीया, आपिठे रुपा तणी वहु कोड़क । वस्त्त माला दासी आद दे, पांचसे दासीया सरीखी जोड़क ॥ सती० २२ ॥ हिवे परणी ने रतन पुरी सञ्चस्या, साहमो आयो तिहां पैहलाद रायक, अंजणां मन हरष थइ, सासु सुसरानां पूजीया पायक ॥ पांचसो गांव राजा दीया, आप्पा ठे आभरण रतन वहु मोलक । आया ठे वींद वींदनी आया ठे तिहां वाजते ढोलक ॥ सती० २३ ॥ दोहा) हिवै काल कितो एक गया पछे, आयो भेटणो राय । तिहां पवन रो ठेप परगट हुवे, ते सुणज्यो चित लाय (ढाल० २ तेहिज०) पीहर थी आवीरे सुंखड़ी, वस्त्र आभरण आपीया तासक । वस्त्र मालने देई करी, अंजणां मेलीया

पवनरे पासक ॥ सुंकड़ी पवन खाधि नही, वस्त्र गहणा ने परहरिया अङ्कक। अंजणां सुं धेप आंणने वस्त्र गहणा आप्पा मातङ्कक ॥ सती० २४ ॥ वस्त्र माला बिलपी थई, आय कही अंजणां कनें वातक स्वामी आपां उपरे, हेत नदीसे कोई तिल मातक अंजणां आंख्या आंसु झरे, मे सुखड़ी जगत कीधोरे अनेक क । थोतो नरदीसे ठे निरमलो, आपने दीसै ठे कर्म विशेषक ॥ सती० २५ ॥ हिवे अंजणां बैठीरे मालीये, पवन जी तुरीय खेलावण जायक । आवतां जावतां निरखती, तिम २ मनमे हरषित थायक ॥ पवन जी कोपैरे परजले, निजर दीठां मूलन सुहायक । नारी निहाले रे मो जणी गोखै आड़ो दीनी प्रीत चिणायक॥ सती० २६ ॥ पांचसो गांव पोते कीया, मात पिता कहै सांजलि पूलक । अंजणां सतीरे सुलक्षणी, बहुने सूं पीये निज घर सातक ॥ मोटेरे कुल तणी ऊपणी ,राजा हो महिन्द्र तणीवहै लाजक । अंजणां सुं आदर कीजिये, इम कहे केतु मती महाराणीक ॥ सती० २७ ॥ वापरा आंणां पाठा मेलीया, आंणो आयो घणे घड़ो घोरक । अंजणां कहे नवी आवीये,

मेल्या वापा आजरण अदज़ुत चीरक ॥ स्वामीरे मन मान्या नही, पीहरे आवने सी करुं वातक । ईम कही बन्धव मोकल्यो, दुख धरे घणी माय न तातक ॥ सती० २७ ॥ ईम वारे वरस वीचमें गया ए कथा उपरे एतो ई सम्बन्धक । हिवे रावण नें वरण कटकी थइ, माहो मांहि उपनो अङ्किटूषक हय गज रथ सजिया घणां, पाला वाला पुरषां फाली सम सेरक । त्यांने सुध सिङ्गारिया, चालीयो कटक वाजी रण जेरक ॥ सती० २९ ॥ एक तेड़ो रतन पुरी आवीयो, पेहलाद राय करे जावाने साजक । पवन जी हाथ जोड़ी कहै, ह वेतो वापजी हम तणो काजक ॥ तुम घर वैठा लीला करो, पूत्र जाया ने एह प्रमाणक । इम कहने अवध सांला सञ्चरया, हाथ में धनुप ते लीने त वे वाणक ॥ सती० ३० ॥ पवन जी चालेरे कटक में, मन मांहे चिन्तवे अञ्जणां नारक । दूर थकी पाए लागस्यां, भाव कुभाव देखो एक वारक ॥ वस्त माला माहरि वेनड़ी, दहीनो कचोलो तुंजरी नेआणक । सुकन रुड़ा मना वस्या, मारग मांहे उभी रही आंणक ॥ सती० ३१ ॥ सुकन मिसे

पीउ देखस्यां, नमण करीनें सुंजी लागसु पायक लोक सहु इम जांणसी, दहीनो कचोलो देखसी ताहिक ॥ कटक जाता प्रीउं वांदस्या, अञ्जणां आदरी पवन कुमारक । जिहां लगे स्वामी आवै नही, तिहां लगे जाणसी लोक मझारक ॥ सती० ३२ ॥ हिवे गयन्द वैसी दल सञ्चर्‍यो, मात पिता ने नमावी सीसक । सजन सहु रे सन्तोषीया, अंजणां ऊपर अती घणि रीसक ॥ दूर थकी दृष्टे पड़ी, चतुर चितारां नो जोवो चितरामक । पुतली लिखी रम्भा जिसि, एह चिताराने देवो ईनामक ॥ सती० ३३ ॥ मन्त्री कहे नही पूतली, प्रीत उठे ऊभी अंजणां नारक । सांभल पवन कोप्यौ घणो कांई मीली मोनै मारग मझारक ॥ दूर ठेली आघो करी, आस्या अलुधी मेली आयो जातक वस्त माला मोके करड़का; मुख नं देखावज्यो तुम तणो नाथक ॥ सती० ३४ ॥ अंजणां कहें दासी जणी; पोते छे माहरे अति घणा पापक । गेहली सगाल न वोलीये, कटक जाता कांइ दीधो सराः चक ॥ आस मोटी मन माहरे, कांई कुसांवण काढीयो एहक । देई जलम्ना दासी जणी, बांइ

कालो ले गई घर मांहक ॥ सती० ३५ ॥ हिवे अजणां कहै सुन सुन्दरी, मोने दुख मांहे दुख उपनो आजक। पांणी मांहे करि पातली, मासरे पीहरे गई माहरी लाजक ॥ चारित्र लेवो मोने सहि, करणी करि सारुं आतम काजक। नांम जपुं जगदीसनो, तेसुं पांमिये अविचल राजक ॥ सती० ३६ ॥ हिवे नगर थकि दल सञ्चर्‌यो, मारग में डूर कीयोरे मलाणक। चकवो चकवी तिहां टल वले, व्यापीयो तिमिर ने आथम्यो भांणक ॥ पवन जी मन्त्रीने इम कहे, अंजणां नो मूल न लिजीये नामक। पुरुष पराया सुं मन करै, चकवा चकवी नो परे मूकी किनारक ॥ सती० ३७॥ मन्त्री कहे सुणो कुँवरजी, तुमे ए वड़ी कांई आंणो मन में रीसक। मोटकी सतीछे अंजणां, अह निस सेवती जिण तणो धर्मक ॥ पुरुष परायो वाञ्छे नही, वचन काजे तुमे कांय करो द्वेषक। आ सील सरोवर झुलती, गुण कह्या शिव ज्ञानी जाणो विशेषक ॥ सती० ३८ ॥ हिवे पवन जी कहे सुणो मन्त्र वी, हुं कटक जाउं हुं नारीने सन्तापक। पाछो जाऊंतो परजा हँसे, मैहला मांहे

लाजे मांहरो बापक ॥ मन्त्री कहे ठाना आवस्या तेढ़ी सेनापति कहे तूं रुख बालक । अमें जात्रा करीने पाछे आवस्यां, तिहां लग कटक नी तुं रुख बालक ॥ सती० ३९ ॥ हिवे प्रछन्न पणे दोनु आवीया, आवीने अंजणां नो उघाड्यो किंवाड़क वस्त माला तव आवेरे ऊतावली, बोलै गाली दोय च्यारक ॥ कहैं सुरो पुरुष गयो कटक में, कोणरे लम्पट आयो ईण ठामक । प्रभाते राजाने विनवुं वींढ़ाय देसुं हुं तेहनो गांमक ॥ सती० ४० ॥ प्रहस्त मन्त्री ईम उच्चरे, ईहां आयो छे पेहलाद नो नन्दक अंजणां तणो हुवे शिरधणी, बंस विद्याधर दीपक चन्दक ॥ वस्त माला आवी ऊलष्यो, नयण नीहाली तवे पांमी आनन्दक । किंवाड़ खोली नै मांहि लीया, वस्त माला वधाव्या नरिन्दक ॥ सती० ४१ ॥ (दोहा) अंजणां सती तिण अवसरे बेठी सामायक मांहि । कर्म धर्म सम्भालती, रही धर्म लव लाय ॥ वस्त माला तिण अवसरे, हाथ जोड़ी कहे आम । सतरे सामायक तिहां लगे, राजा करो विश्राम (ढाल ५ ते०) हिवे अंजणा सामायक पूरी करी, हाथ जोड़ी लागी पीउने पायक

पवन जी कहे तुं मोटि सती, लीन रहि श्रीजिन धर्म मांहिक॥ वचन बुरासे में डुहवी, तिण वातरो में परमारथ लाधक। हाथ जोडी करुं वीनती क्षमज्यो ए सती मांहरो अपराधक॥ सती० ४२ अंजणां पाय नमी कहे, एहवा बोल बोलो कांई स्वांमक। जेहवी पग तणी पानही, तेहवी पुरुष नें असतरी जांणक॥ हाथ जोड़ी नै आंण ऊंनी रही, मधु सुहामनां बोलती वैणक। कहे प्रापति विण किम पांमीये, जांणे पथर गालीनें कीधो मैणक॥ सती० ४३॥ तीन दिवस रह्या तिहां पवन जी, तिहां भाव भगति तीण कीधो विशेषक चाय ढोले वीजणैं करी, षट रस भोजन आपिया अनेकक॥ हाव भाव करे छे अंजणां, प्रीतम सुं घणी सांथरी रीतक। पवन जी आनंद पायो घणो अंजणां सु धरी अति घणि प्रीतक॥ सती० ४४ हिवे पवन जी पाछा निकले, अंजणां बोलेछे जोड़ी जि हाथक। आसा रहें कदास मांहरे, लोक मांने किम मांहरि बातक॥ तिनसुं मात पितानें जणा- वज्यो, बांहना आभरण आप्पा अहनांणक। संका पड़े दिखालज्यो, मात पिता दिक सहु लेसि जांणक

सती० ४५ ॥ हिवे वसन्त माला नें तेड़ी तिहां, पवन जी देई सनमांणक। मांहरे अंजणां राणी सारां सीरे, प्रतक्ष चिन्तामण ने समाणक ॥ तुं करजे जातन घणा तेहनां, जिम दांतने जिव्ह भेलां रहे जेहक। जिम अंजणां नें तुं सेहीं रहे, किम दिजे घणि जोला वणि तेहक ॥ सती० ४६ ॥ वस्त मांला नें माणक मोतिया, विजोइ धन दियांर विशेषक। घणि सन्तोषी हे वचन सुं, वस्त माला हुई हरष विशेषक ॥ प्रहस्त मन्त्री ने इम कहे जतन किज्यो कुमार जी ना तेहक। कुशले खेमे वेगा पधारज्यो, में वाट जोवा जांने उमह्यो मेहक ॥ सती० ४७ ॥ सीष देवे अंजणां चालतां, रुण मांहि आवे घणां पुरुष दुष्टक। सो पुरुष आवेठ वरुण ना, तेहने आगल रखे फेरवो पूठक ॥ दुरजन कटक हे वरण नो, सोहनां वांण जांणे अङ्गारक। तिहां क्षत्री तणि रीत राखज्यो, मरण जल्यो पिण नहि जलि हारक ॥ सती० ४८ ॥ हिवे पोल थकी रे पाछी वली, नैणांमें छुटिहे जल तणि धारक। में कटुक वचन कह्यो कन्तने, मूंह ढांकी नें रोवै तिण वारक ॥ लाल माला आरा धीरपे, हिवड़ा आयो हे

२॥मायक कालक। देव गुरु धर्म हीये धरो, व्रत पचखाण थे सेवो सम्भालक॥ सती० ४९॥ हिवे अंजणां सती तिण अवसरे, रुड़ी रिते पाले व्रत रसालक। करी धर्म सम्भालति, सुखे रे गमावे इण विध कालक॥ ध्यान धरे देव गुरु तणो, सन्सार नो जाण्यो वै काची जी कायक। बोल सिझाय गुणे थोकड़ा, इण पर अंजणांरा रात दिन जायक॥ सती ५०॥ हिवे उदर आधान जांणी करी, अंजणां मन मांहे हरष अपारक। धन खरचे करे धुपटा, लोकीक दान देवे सुन कारक॥ भावना भावे ऊलट मने, पात्र सुपात्र देवै सुगतने हेतक ऊलरङ्ग मनमांहे अति घणी, दान देतीं न गिणे खेत कुखेतक॥ सती० ५१ हिवे केतुमति राणी राजा भणि वीनवे, सांभलि विनती माहरी आपक। अंजणां करे धन उड़ावणां इण सु धुर लगे पवन ने न किधो मिलापक॥ तोहि मन मांहे मान राखे घणि, कटक जातां पढी पहनी मांमक। आप कहो तो हुं एहने, वरजवा काजे जाउं तिण ठांमक॥ सती० ५२॥ राजा पिण दिधोछे आगन्या, हिवे केतुमति चाली मोटे मण्डा-नक। साथे सहेल्यां लिधो घणी, मन मान घनि बहु

इरे आणक ॥ आङ्क वधाउढानें मेलिया, अञ्जणा सुनयैं हरषत थायक । जाव जगत करि घणी, सांहमि आइने जेटिया सांसुरा पायक ॥ सती० ५३ ॥ आदर सनमान दै अंजणा, सासुने लेगइ निज घर माहिक । आसण देवेरे वेसवा, हाथ जोड़ि लगि वेसने मुख आयक ॥ कहैं मनुष्यनि करि मोने लेखवो, माहरा मनोरथ पूरिया आजक माई थारें विना ईम कुन करे, माहरि सासरे पिहरे वांधोठे लाजक ॥ सती० ५४ ॥ हिवे वहुना चैन देखि करि, केतुमति राणी धास्यो मन धेषक । वहु थाहरा अङ्गनो एहवो, चिन्ह क्युं दीशे विशे षक ॥ तुं मोटारे कुल तणी उपनी, वंश विद्याधर दोनु पष्य सारक । तुं साची मुझनें आपर कहै उदर आधानके उदर विकारक ॥ सती० ५५ ॥ अंजणा सती तिण अवसरें, आजरण अैनांण आय सुंप्या देखांयक । कटक थी कुमर पाछावली, विर हणी जानिने आविया ताहिक ॥ तीन दिवस रह्या घर माहरें, छानै आयानें छानै गया तासक आजरण अैनाण ईहां मेलने, हिवे हुवोठें माथ मुझ सातमो मासक ॥ सती० ५६ ॥ वहुना वचन

कानें सुण्या, केतुमती राणी बोले छे एहक। पुरवे अलगतोने परहरी, मुझपुत्रने तुझथि किसो सनेहक आज लगे अन्न खांवणी, तु आजरण चोरी ने निरमल थायक। विणठोरे दूध कांजी थकि, हिवे सासरां थि तुं परि पीहर जायक॥ सती० ५७॥ सासुरा वचन काने सुण्यां, अंजणां रे मन ऊपनो दोहक। पुत्र तुमारो पाछोवले, तिहा लगे मुझने राखो घर मांहिक॥ सासरांमे सासुजी तुम तणी कहोतो ओठ पाईने काढूं दिन रातक। चरण कमल सुं गिर रही, हुं कलङ्क लेई किम पीहर जायक॥ सती० ५७॥ केतुमती रांणी क्रोधे चढ़ी, पग करी क्रोधसुं छे लीयो सीसक। अङ्ग मरोड़ी ऊभी थई, धड़ हड़ धुनीने अति घणी रीसक। अलगी रहे मुझ आंखथि, जिहां लग मांहरा नगर नी सीमक तिहां लगे अंजणां इहां रहे, जिहां लगे मुझने अन्न पाणी तणो नेमक॥ सती० ५९॥ वस्त मालाने तेड़ी करी, बन्धण बांधने टेरी छे तेहक। तेंचोरया आजरण मांहरा पुत्रना, चोर देपाल के छेदसुं देहक तेरे घड़ीरे टेरी रही, वाजे छे तरजणा रोवती तेहक। वस्त माला इम मुख जने, चोरतो पवन जी

साहतो तेहक ॥ सती० ६०॥ हिवे कालोरं रथ अणावीयो, कालाई तुरङ्ग जोतस्या तेहक। कालाही वस्त्र पहरावीया, कालोहो गुसरी दिधी छे तेहक कालीहो मस्तक रांखड़ी, अंजणां वस्त्र माला वैसान् वी ताहिक ॥ सती० ६१॥ अंजणां चली पीहर जणी, दुख घणो धरती अति मन मांहिक हिवे चालीयो रथ उतावलो, आयोछे वाप तणी भूम तेहक ॥ दूर थकी मेहल देखियां, सारथी रथ पाछो वाल्यो तेहक। जुहार करे अंजणां सती सारथी चित्तमांहे चिन्तवे आमक ॥ दुष्ट अकारज मै कीयो, मैं बनमांहे अंजणां मेली इण ठांक सती० ६२॥ हिवे सांझ पड़ी दिन आथम्यो, रयण निहाणी घोर अन्धारक। हाथो हाथ सूझै नहीं, इण वेला मुझने कुंण आधारक॥ नाम जपूं जगदीसनो, इण विध काढे दुखजरी रातक। सुध सामायक ऊचरे, एतले सुरज उग्यो प्रभातक॥ सती० ६३॥ हिवे अंजणां कहे सुणो सुन्दरी, मांहरा मनमै अति घणी दुखक। मोने कूडो रे कलङ्क चढावियो, हिवे तातनैं केम दिखाल सुं मुखक॥ माता मोसुं मन किम मेलसी, किम करूं

माई जोजाया सुं बातक। जिहां लगे स्वामी आवे नहीं, तिहां लगे किम काढूं दिन रातक ॥ सती० ६४ ॥ वसत माला वसती कहे, जिहांलगे निरमल अंजना आपक. तिहां लगे सहुंमे सुहामणा, हरष थि ओला वश्ये तुम सखो आपक ॥ माता मनोरथ पूरसी माई जोजाया सहु मिलसी आयक। जिहां लगे स्वामी आवे नहीं, बेठो तिहां लगे पीहर हो आयक ॥ सती० ६५ ॥ हिवे नगर सेरीये सञ्चरी घुङ्गट काढीनें नींची जोयक। हंस तणीं गत चालती नगर ना लोक जोवे सहु कोयक॥ संजन विछोहो ये कामनी, नाथ बिहुणी ए दीसे छे नारक. पिछाड़ी से प्रजा मिली घणीं, इण पर पोहुती छे बाप दुवारक ॥ सती० ६६ ॥ पोले ऊभी राखि पोलीये मालुम किधी रायने आयक। दोनु हाथ जोड़ी नीचो नमी, अंजणा बाहिर ऊभी छै आयक ॥ राय सांजल हरषित हुवो, नगर सिणगार ने करो विख्यातक। सनमुख मोकलो पालषीं, आघो ले लावो राज पहलाद नी सायक ॥ सती० ६७ ॥ कानमे गंने सेवग कहे, अंजणा सासरें जेहुवो तेहक। तिन बात कही सहु मांडने, राय सांजल

दूख व्यापीयो देहक ॥ मुरछागत आय धरणी ढल्यो, सचेत थयो किधो क्रोध विशेषक । माहरा कुलनैरे कलङ्क लगावीयो, आवा मत द्यो माहरी पोल मझारक ॥ सती० ६८ ॥ पोलीयो पाछो आवी कहै, तुमे ऊपर रुठोछे महिन्द रायक । माहे आवा मतद्यो एहने, वचन सुनिनें विलषी जी थायक माता रा जवनमे सञ्चरी, आघा पाछा पग पड़े तिन वारक । मन माहि दुख धरती थकी, विलषी थई आवी माताने दुवारक ॥ सती० ६९ ॥ मान वेगा तिन अवसरे, आयणे अंजणा दीठी विरङ्गक शरीर नो रङ्ग ते फिर गयो, कालारे वस्त्र पहरणा अङ्गक ॥ आहे नांण दीसे छे वारका, नयन झरे जाने मोत्यां नो वृन्दक । मुख कुमलानो दीसै बुरो जाने राहरे अन्तरे दब गयो चन्दक ॥ सती० ७० ईम देखी माता धरणी ढली, सचेत थई रोवे बागांजी झारक । हूंनें काय नसिरजीरे बांकड़ी इण कलङ्क आण्यो माहरा कुलरें मझारक ॥ हुं संगा सम्बन्धी मे किम फिरूं, आनो कटारो ने धूंस माहरी कुंषक । जिन कुंषे अंजणा ऊपनी दीधो छे दुख मे दुख विशेषक ॥ सती० ७१ ॥

राणी नें रोवतो देखनें, दास्यां मिल आई अंजणा नें पासक। आदर विहूणी उजी किमे, माय त्रुटि चाई तुमतणी आजक ॥ सुसरा नें सासु लजावीया लजावीयो पिहर माय मुसाखक। कुवंस विगोवण उपनी, हिवे पापणी तु मुढो मती देखालक ॥ सती० ३२ ॥ वसन माला वलती कहे. एहवी अंचुकी थे वोलो ए नायक, पवन कुमार घरे आवसी पुछ किजो निरणो मन मांहिक ॥ श्री सती तो संजम लै रही गले छे गर्भ तणो अनि पासक। ए कलङ्क आया कायां नहीं थैं, पवनजी आवा री राखे छे आसक ॥ सती० ३३ ॥ इम कहीं दोनु पाछो निकली, आई जोजायां तणे घर जायक। वन्धव माहे वैसी रह्या, अञ्जणा आवे उजी छे आयक ॥ आई जोजाई निजि तिहां, मन चिन्ता तिण आणीछे थांहिक। आहुली लेई दांतां भरी आंवा न दीधी तिणनें घर माहिक ॥ सती० ३४ इम अञ्जणा घर २ हींडे घणो, किन हींन दीधो आंवा घर माहिक। दीन वचन मुख वोलती नयन झरी मुख रोवती तेहक ॥ भूख तृषा करी आकुली, अन पानी आपे कुण वामक। वसीछै

बीन दयामणी, जाखे निसरसा उनी तिण नामक सती० ७५ ॥ हिवे मिलने जोजायां ते इम कहे, थाई थे आपरो आपो संजालक । घूर लगे म्हारा जोज्युं न हुवा, एह कस्यो किस्युं कर्म चएकालक हमै तो अबला सङ्का करा, आङ्गणे उना रहो ने लिगारक । अब घर आया गय जाणसी, तुम तणो ने काढ़सी बारक ॥ सती० ७६ ॥ बन्धव किण हीन पूछीयो, सजन किण हीन हो कीधो रे सारक जिन दीठो छे अजणा मनी निहां प्रोहित प्रधान मुदिसा, छूचारक ॥ लोकागे आसङ्क किम हुवे, अजणा मे तेड़ी राखे घर माहिक । आदर चाव किहां ई नहीं एहवा कर्म उदै हुवा आयक ॥ सती० ७७ ॥ अंजणा ने देख आवती, लोक आड़ा देवै किम्बारडक । घरमें कोइ आवण देवै नहीं, बचन बोले लोक त्रिविध प्रकारक ॥ अंजणा दुःख थयो घणा, जाने के वाईटे खड़ग धारक । दुःख माहे दुःख साले घणो, अमरस घर मन माहि अपारक ॥ सती० ७८ ॥ हिवे अजणा निसारे करि टलवले, जल लेई आयो ब्राह्मण तीरक । राय कुमरी पाणी पीयो, शीतल उत्तम निरमल नीरक

भलतो अंजणा कहे तेहनें, नगर माहें तो नही थोड पाणक। पोल बाहिर जल पीवसुं, इहांतो छे माहरा बापनी आणक ॥ सती० ७९ ॥ नगर बाहिर जल-बावरे, अंजणा वसंतमाला नें कहे छे आमक। गहन बन मोटो उजड़मे, उंचा हो पर्वत विषमो ठामक ॥ जिहां सूर्य किरण न सञ्चरे रात दिवस नो खबर नकायक। मानस को मुख नहीं देखीये तिन बन माहे तुं मुझने ले जायक सती० ८० ॥ हिव वसंत माला तिण अवसरें, अंजणा नो वचन कीधो प्रमाणक। दोनूं जनी तिहांथी निकली, माहो माहि बोलती माह-कारी वाणक ऊंडे बन माहे सञ्चरे, जोयवे परवत अति महन्तक खांधे लेई अंजणा जणी, परवत जायने बैठे एक-न्तक ॥ सती० ८१ ॥ अंजणा बन माहि सञ्चरी लोक माहो माहि बोले छे एमक। अजणा नें बाहिर काढ़नें, राय किधो अति जुड़ोजी कामक आण देवाड़ी रे घरघरे, आव न नहीं दीधी किनही घर-माहिक। पेटनो पुत्री नें परहरी, रायनो अकल गई हरायक ॥ सती० ८२ ॥ हिवे माता कहे छे दासी भणी, अंजणा नें जोवो रहि-किनही ठामक

दासी कहे वनमें गई, माता मन मांहि चिन्तवे आमक ॥ अंजणा उपरे मांहरो, बाल पने हुंतो अति घणो रागक । हिवे वन मांहि सिंहादिक विनाससी; इम चिन्तवी ने धरे दुख अपारक ॥ सती० ८३ ॥ नित भोजन जीमती रे बालका, मनमें गमो नहि च्यारुं ही आहारक । मन मांहि फिकर करे घणा, सेहरमें नहीं उजाड़ मे जायक । अनपाणी किम पांमसी. मैं मनमें जांणूं घरे कोई राखसी वीरक ॥ इम चिन्तवी ने घणी चिन्ता करे, रोवती आंख्यांमें सुं काढ़ती नीरक ॥ सती० ८४ ॥ हिवे वसन्त माला इम ऊच्चरे, तू इ थांरा आपके मूढ़ गिवारक । मूरख थी माताठे तुम तणी. जाशांमें अकल न दिसे लिगारक ॥ अठ्ठने नहीं राखिरे इक घड़ी, कंवर रि सुध न पूछीरे काथके । बाइ थांहरा पीहरे उपर. कांई अचिन्ती ध्रसको पड़े ज्यो जायक ॥ सती० ८५ ॥ अंजणा कहे सुण सुन्दरी, मांहरा बाप छे चतुर सुजानक । माता विचक्षण अति घणी, जाइछे मांहरो घणा बुधवानक ॥ पिण पापठे पुरवलो माहरो अति घणां, तु मन मांहि मूल न रोस न आंणक । आपां पुरव पून्य

दीधा नहि, ए सहु आपने करमारो दोसक ॥ स० ७६ ॥ हिवे राजा राणी कने आइने, वोले मुखथी एहवि वायक। चिन्ता करो किन कारणे, वैटी आपा जाणि नही छे लेहक ॥ मोटा आकार्य इन कियो, कलङ्क आनी माहरा कुलरे मकारक। जो पाछी आणु घर अंजणा. तो नगर नि नार हीन्के अना न्यारक ॥ सती० ७१ ॥ हिवे गिर वर गुफा मांहमो जोवनां, तिहां दिठाठ मुनिवर ध्यान वर धीरक। निर दोष आगार पालता, तप जप कर करी सोषव्या शरीरक ॥ अवध ज्ञान करी आगला अंजणा जाय जेव्या नमु पायक। अति दुख माहि आनन्द हुवो, जब १ होज्यो स्वामि तुम तना मरणक ॥ सती० ७७ ॥ हिवे हाथ जोड़ी अजणा कहै पुत्र किसु किया कर्म चण्डालक। किन क्रमा सानी माहरे, इन भवमे आया अनहुता आलक ॥ सासरा सु काढी मो भणी, पीहर राखि नहीं घर मांहिक। आप किरपा करो मो ऊपरे, सगलाई सम्बन्ध देवो नि सुनायक ॥ सती० ७९ ॥ हिवे साधू कहै वाई सांभलो, पाछिय भवरो कहुं विरतन्तक। आरे शोक हुंति लिखमावति, आवक

धर्म पावति कर खन्तक ॥ सिंह रथ पुत्र थो तेहने ते चोरि पाड़ोसण नें सुंपियो तेहक । तरे घड़ि थांरि शोक टल चलि. डुख घनो धरति मन मांहिक ॥ सती० ए० ॥ थांहरि शोकरे एक निहनो हुंतो, जो माध होवे तिण नगर मझारक । तो थांरी यां पैहलो तेहने. अन पानी नो हुतो परिहारक ॥ विलाप कीधो तिण अति घणी जवने पुत्र पाछो दीयो सूरक । अन्तराय पड़ी दरसन तणी, तिन सुं वन्ध गई थांरे कर्म रो राशक ॥ सती० ए१ ॥ काल कितोयक वीतां पछें, साध्वयां आई तिण नगर मझारक । ते वाणी सांभल तेहनी, वैराग सुं लिधी संयम भारक ॥ तपस्या कारि अणसण कीयो, आलोया विना गतल फरक । कीधु हो कर्म न छुटिय, तरे घड़ीरा हुवा बरस तेरक ॥ सती० ए२ ॥ सिंह रथ पुत्रते तप करी, सुक कूखे आय लीयो अवतारक । माथे पड़ासण डुख सहे ते तिन चोरी ना फल विचारक ॥ पवन जी वरुण सुं जुध करी, पाछां आवसी निज घर मझारक ॥ सती० ए३ ॥ ए साध कह्यो सन्तापवा, और नहीं काई कारज छिगारक । धीजो साधु ने निमच

आपणो नही, एनो आगम विहारी हुंता अनगारक
त्यां कह्यो उपगार जांणने, कर दियो तिहांथी उग्र
विहारक । नागरू पंखा तणी परे आचार पाले छे
निरती चारक ॥ सती० ९४ ॥ हिव तिन कालने
तिन मग, तलेटी आयने गुंजीयो सिंहक । जब
जीव त्रास पांम्यो घणी, धड़ हड़ धूज ने पामीया
बोहक ॥ तिनही सिंह तनो सबद सामल्यो,
अंजणां भय पाम्यो तिन वारक । जब बसंत माला
इम उचरे, बाई देव गुरु धर्म समरो नव कारक ॥
सती० ९५ ॥ हिव बसंत माला सिख चढी, अजणां
सागारी किधी सन्थारक । नाम जप जगनाथ नो
जाने रे ध्यान चड्या अणगारक ॥ चिहुं गुनि
जीव खमावति च्यारे सरणा चिन्तवे चित मझा-
रक । कहे कमर्गी कठी काया छूटे. तिण मांहरो
धरम न लेवे त्रिगारक ॥ सती० ९६ ॥ कहे बसंत
माला इम उचरे, कह अजणां माहा सती छे निर
धारक । मोटे रे सब्द हला करे, कोई देव देवी
आवो इन वारक ॥ कोई सजन होवे अंजणा तणी
ते तिण वेग सुं आवज्यो धायक । उपसर्ग पनो
अति घणी, बसत माला बोले पुकारी धायक ॥

सती० ९७ ॥ तिन बन मांहि व्यन्तर जद रहे ते, वार जोजन लगो रूख वालक। ते जद कहे जदणी नणी, आपने शरणे आवी दोय बालकं। तिन सुं रक्षा करां आपां एहनी, इम चिन्तवी साद्रुलो रूप कीयो तेहक। तिन साद्रुला सिंहने परा जवी. काढ दियो दूर वननें ठेहक॥ स० ९८॥ सांहज देई अंजणां नणी, देवता बोले वे एहवी वायक। सतीया मांहि तुं निरमली, थांरा गुण पूरा मासुं कह्या नहीं जायक॥ हिव कलङ्क उतर्सी नाहरी. कुशले आवसी पवन कुमारक। थेंले मांमा थांहरा इहां आवसी, तुं निचन्त रह इन वनह मझारक॥ सती० ९९॥ एहवी वनन सुनी देवता तणा, वन मांहे दोनु रहे अवीहक। वन फल फुल तिहां वावरे, जिन धर्म तणी नहीं लोपे रे लिहक॥ सम्मकब्रत पाले निरमला, अहो निश करे छे जिन तनो जापक। तपस्या करे अति आकरी, अंजणा कांटे छे सघला पापक॥ सती० १००॥ सती रे शीरोमणि अंजणा, जाया हनुमन्त कुवारक। चैत्र मास धुर अष्टमी, पुष्य नक्षत्र आशो भीकारक। रात रा पाछला पहरमें, अंजणा जन्मीयो-

हनुमन्त कुमारक ॥ असुच टाली तिण अवसरे, दासीने कहे अंजणां आंमक। महोछव करसी कुण एहना, कटकमें गयोछे आपनो स्वामक॥स॰ १०१ ॥ चांदनी रात पूनिम तणी, अंजणा कर धर बैठीछे नन्दक। चञ्चल चपल सुहामणो, दीठा पामें घणो हरप आनन्दक ॥ हरप बोलावे रे मायड़ी, कुमर तणी अजेछे लघूजी वेसक। ताराने ताके रे वालूड़ो, जांने के चन्दने लेय झपेटक॥ सती॰ १०२ ॥ हिवे मासो अंजणां सती तणो, सूरसेन राजा तेहनो नामक। देसन्तर जावते पाछो वल्यो, आकासे विमांण थम्भ्यो तिन ठामक वन मांहि दीठी वे बालिका, हिचरज पामीने शो कवी नारक। जव मांमीये अंजणां ओलख्यो, नैणामें छूटीछे जल तणी धारक ॥ सती॰ १०३ ॥ गले लगी निहु घणि अरड़ी, ऐतले मामो आयो तत कालक। अंजणां ओलखिने मिल्यो, अंजणां रोवेछे आंसुड़ा रालक॥ मीलसुं अलगी हुवे नदी, आलक जिम गले विलगी छे ताहिक। जव खोलामें बैसा णि भीरपे, वाई हिव करसुं तुम्ह तणी आसक॥ सती॰ १०४ ॥ हिवे अंजणां कहे मामां प्रति,

नीकल्या, माता पिता आया त्यारें तिन वारक।
वांह काली पवन नें इम कहे, हिवे तूंतो जीमो
प्यारुं ही आहारक ॥ हुं वहुने आंण मङ्गावसुं,
पवन जी साह मोनें जोवे रे तामक। वांह गेहाय
माता कने, गयाछे राजा महिन्द नै गामक ॥ स०
११२॥ हिवे माता रोवे मुख ढाकने, कांम वमासि
नही किधो रे एहक। दल त्रणी जन नहि मोकल्यो
अंजणां नें नही राखी रे गेहक ॥ काचो रे वुध
नारी तणों, केतुमती राणी चिन्तवे एमक। धिग २
मुझ जीवत त्रणी, मै पापणि किधो अति त्रुएको
छे कामक ॥ सती० ११३ ॥ हिवे पवन जी कहै
मन्त्री त्रणी, हुं सासु सुसरा सुं किम करुं प्रणा-
मक। मांहरी मातानें परा त्रवी, तिनसुं सुसराल में
गई सांहरि सामक ॥ हिवे हुं ऊंचो होसुं रे किम
बोलसु, हिल मिल नें वात करुं ला केमक। वसे
अंजणां राणी मो ऊपरे, किन विध धरे लि हरख
नें प्रेमक॥ सती० ११४॥ मन्त्री कहे सुनो कुमरजी
आपतो गयाथा कटक मझारक। त्यांरेसु काढी
अंजणां त्रणी, आपरो दोष नही छे लिगारक॥
इम कहे पवन कुमर त्रणी, चाकर मेलीयो नगर

सझारक । कहें पवन जी आंण पधारीया, जव अञ्जणा नै पीहरे हुई चिन्ता अपारक ॥ सती० ११५ ॥ महिन्द कहे हुं महा पापीयो, मै दुष्ट अकारज कीधोरे जाणक । हांजि २ लोक माहरा घणो, पिण काहो नही कोई चतुर सुजानक ॥ ने हां लोक कथन वली कहे, तो माहरा मनरी उतरसी रीसक । नरक नीयाणो मै बांधीयो, हिवे दुष्ट कर्माथी केम छूटीसक ॥ सती० ११६ ॥ पवन जी आण पधारीयो, सांभल सासुंरे शिर पकड़ो झालक । पेट कूटे दोनू हाथसुं, उदर आधान किहां गई बालक ॥ मन माहे दुख वेदे घणो, जाने कोई जोरसुं लागाछे बाणक । अञ्जणा नो दुख वेदे घणी तिम २ बोले छे रोवती वाणक ॥ सती० ११७ ॥ साथे सेन्या लेई चतुरङ्गणी, सुसरो जवाईने साहमो जी जायक । बांह पसारी दोनु मिल्या, दोनारे दुख घणो घट माहिक ॥ जब पवनजी कहें राजा भणी, तुम पुत्रिने काढ़ी छे हम तणी मायक । ए दोस नही मूल माहरो, जब राजा सुं पाछो बोल्यों नही जायक ॥ सती० ११८ ॥ हिवे पवन जीने निज घर आणने, मरदन करने कीध सीना-

पवनजी ने उलष्यो, कहै अंजणां ने आव्योछे तुम तणो नाथक॥ जब अंजणां आय पाय पड़ि, खोला में बेसाड्यो हनुवन्त कुमारक ॥ सती० १२६ ॥ बसन्त माला आय पाए पड़ि, हीयासु जिड़ि वे पवन कुमारक। कहो प्रिया दुख तुम किम सह्या किम सही माहरि मायनी मारक ॥ किम करी वन फल बीनिया, किम करी रहि वनह मझारक किम करी काल गमावियो, किम करी पाल्यो हनुवन्त कुमारक ॥ सती० १२७ ॥ स्वामिजी आप कटक में पधारीया, सासरै पीहर म्हांने दीयोजी छेहक। तिन सु करि मै वनमें गई, वन फल भखने काढ़ी या दीहक ॥ तिहां मोटा मुनिवर भेटीया वले देवता कीधी छे हम तनी सारक। रात दिवस धरम पालतां, मामो लेई आयो इन नगर मझारक सती० १२८ ॥ वले वसन्त माला अने अंजणां, पवन ने बोलेछे जीम हिरहुई बाणक। आप किम कटक में संचस्या, किम सही राजा वरुण ना बाणक ॥ जब प्रवन कुमार हसकि कहै, मैं वरुण राजा सुं कीयो जुद्ध तेथक। जब भाव लागा ते साजा हुवा, जीत फते कर आयोछु एथक॥ सती०

१२९ ॥ हिवै अंजणां सती तिण अवसरे, सासु सुसरा नें लागी जी पायक। जब सुसरो आख्या आंसु भरे, मै कलङ्क देइने किधीजी अन्यायक ॥ अंजणां पाय नमी केहै, बापजी केम करोछो विलापक। दोस नही छै तुम तणो, पोते छै म्हारा बोहला पापक ॥ सती०-१३० ॥ वले माता पिता सुं जाय मिली, बाई बोजायां सुं अति घणो नेहक। मात पिता ते रोवे घणा, अंजणां मात पिता नें कहै छे तेहक ॥ थे चिन्ता करो किन कारणे, पोतेछे जी माहरे बोहला पापक। तिन कारणे मैं दुख भोग व्या, मूल न कर जो कोइ सन्तापक ॥ सती० १३१ हिवे हणु पाटन चालीया, अंजणा ने मामे आपि घणो आथक। साथे आयो बहु चायेवा, चतुरङ्गणी सेना लई सायक ॥ साथे ले परजा अति घणि, रतन पुरी आया मोटे मण्डाणक। उछरङ्ग मन माहे अति घणी, घर घर वरत्या छे कोड़ कल्याणक ॥ सती० १३२ ॥ हिव सीख देई मांमा तणी, अंजणा सतीने पवन कुमारक। सुख भोगवै संसारना, माहो माहि लगी रही प्रीति अपारक ॥ काल कितोक गया पछी, राजा राणी खारो जाण्यो संसा-

रक। राज देई पवन जी नणी, मोटे मएडाल लीधो सञ्जम जारक ॥ सती० १३३ ॥ पवन नरिन्द राज जोगवे, अंजणां राणी सु हैत विशेषक । हनवन्त कुमर विद्याजणे, बांनरी आदि विद्याजणी अनेकक चतुर विचक्षण अतिघणो, देस विचे परदेस मे हुवो जी विख्यातक । वसन्त मालारो मान वधारीयो, सगलाई पुछो करे तेह ने वातक ॥ सती० १३४ ॥ हिवे वरुण राजा तिन अवसरे, आपना पुत्रांने जांणी सजोरक। मन माहि धरे अति अभिमानक तिन लङ्का नणी दूत मोकल्यो; जो थारे जुद्ध करवा तनी जावक ॥ तो वीजा सुभट दल मोकली, तुम्हे एकर सु जावो मुझ आयक॥ सती० १३५॥ रावण सेना मेली घणी, एक तेड़ो मेल्यो रतन पुरी माहिक। जव पवन राय जावा ने सज हुवा, जव हनवन्त कुमार बोले एहवो वायक ॥ कहे कटक माहि हुं जावसु, जव अजणां सुं पवन जी कहे छे आमक। पुत्र तू अजे वालक अछे, कटक माहें नही ताहरो कामक ॥ सती० १३६ ॥ हनवन्त हठ कर चालीयो, माहिन्द पुरी जाय कियो जी मिलानक तीन पहर दल आफल्यौ, वन्धन बांधौ नाना ने

जायक ॥ सूरसेन राजा आय लाजीयो, बन्धन छोड़िने कीयो जी परनामक। कहे माहरी माताने राखी नही, तिन कारण मे आय कियो सग्रामक सती० १३७ ॥ हिवे हनवन्त आयो लङ्का मझे, साहमो आयोठे रावण रायक। हनवन्त कुमारने देख ने रावण पामीयो अति हरष आनन्दक ॥ बीड़ो झाली ने हनवन्त नीकलो, विजा पिण चाल्या अति घणा रायक। साझो आयो कटक वरण नो जुऊ हुवो घणो माहो जि माहिक ॥ सती० १३८ ॥ रावण की सेन्या देखी करी, सो पुत्र वरूण नो धाल्या तिण वारक। जुऊ करवा लागा तिण समे, लोहना बाण मुकै जाणै अङ्गारक ॥ वली गोला ने बाण बहे घणा, काम आया वड़ा२ जोधारक जब रावण की सेन्या नासी गई, सेंठो ऊभो रह्यो हणुवन्त कुमारक ॥ सती० १३९ ॥ घणा लोक कहे हणुवन्त ने, तु मात पिताने अल खावनो बालक तिण सुं तोने रणमे मेलियो, कटक मे तु वरण सुं जुऊ कीयां, कर जावसी तुंतोरे कालक॥ वलतो हणु वंत इम कहे, वरणने पुत्र मिली आवजो सायक। धातां कियां सुं खबर नहि बल तणी, खबर पड़े रणमे

वीररा हायक ॥ सती० १४० ॥ वानरी विद्या साधी करि, वानर रुप कीयो तिण वारक । वारे जोजन में वृक्षादिक होता, ते ले नाख्या वरुण नी फोज मझारक ॥ काना कतूहल किया वरुण नी फोजमें घले लांबो पुछ विकुर्व्यो तिण वारक । सो पुत्र वरुण राजा तणा, बांध लिया तिण पूंछ मझारक सती० १४१ ॥ रावण राजा कहे हणुवन्त ने, तु वानरी विद्या ने मेलदे दूरक । पछे जीत पामजे रण विषे, तो हूं जाणू तोने मोटको सूरक ॥ जव हणुवन्त विद्या मेलि वानरी, मूल गो रूप करी मे खेले बाणक । जव वरुण राज इम चिन्तवे, ए वालक दीसेछे मेहा बलवानक ॥ सती० १४२ ॥ हिवे जुद्ध करणने वरुण राजा ऊठीयो, हणुमन्त कुमर सुं मांडी वे राड़क । दोनु जना हाथ चालवे, तिहां मुष्टना वाजि रह्या परहारक ॥ रावण राजा तिन अवसरे, हणुवन्त ने उपर कीयो हायक । जव हणुवन्त वरुण राजा जणी, बांधीने नाखि दीयो रण माहिक सती० १४३ ॥ हणुवन्त बोले वन्धन तोंरु ताहरा जो रावण राजारे लागे तुं पायक । जव वरुण कहे त्रित राग ते विना, और रा पाय वांदु नही जायक

चारित्र लेनो माहरे, तव हणुवन्त वन्धन तोड़िया तामक । वरुण लीयो चारित्र वेराग सुं, तिणरा पुत्रने राज्य दीयो रावण रायक ॥ सती० १४४ ॥ रावण हणुवन्त ने प्रसंसीयो, तूं सूर वड़ो थारी लघु जी वेशक। तें मोटा राजा नें हगर्वीयो, रीझ देई आयो लङ्क नरेशक॥ परनाइ जानेजी आपणी सीप देई सनमान सतकारक। वले हणुवन्त मोटा राजा तनी, रुपवन्ती परन्यो एक हजारक॥ स० १४५ पवन नरिन्द राज्य भोगवे, माने ति राणी अंजणां नारिक। वसन्त माला सुं हेत अति घनी, वले मान तो छैं हणुवन्त कुमारक ॥ तें ससारना सुख भोगवे, हणुवन्त कुमर सहस नार्यां सहितक । रतन जड़ित महिलां मझै, माहो माहि लगी रहि अति प्रीतक ॥ सती० १४६ ॥ हिव काल कितोक गया पछें, अञ्जणा चिन्तवे चित मझारक। परभातें राजाने पूछने, लेणी सिरोमन संजम भारक इम चिन्त वि आई राजा कनै, हाथ जोड़ि वोलि सीस नमायक । आज्ञा दो स्वामीजि मोजणी, चारित्र लेई देउ करम खपायक ॥ सती० १४७ ॥ जव राय कहे अञ्जणा जणी, कोइक दिन रहो

राणी घरह मझारक । हिवणा पुत्र बालक अठे, पछै साथें लेस्या संयम भारक ॥ तव अञ्जणा हाथ जोड़िने ईम कहे, मोने काल विस्वास नही लगा रक तिण कारण दिक्षा लेस्युं सही, जब राजा पिण साथे हुवो छै तयारक ॥ सती० १४८ ॥ हिवे हणुवन्त कुमरने तेड़ने, पवनजी बोले छै एहवी वायक । अम्हे चारित्र लेस्यां वयराग सुं, हणुवन्त कुमर रोयो घणो तायक ॥ पछै राजा गादि वेसाण्यो मोटे मण्डाण सुं, वसन्त माला अञ्जणा पवनजी रायक । आज्ञा लेई हणवन्त कुमरनी, तीनुही लिधो संयम सुख दायक ॥ सती० १४९ ॥ मास मास खमन कियो पारणो, शरीर सुखाय दुरवल करी कायक । तिनारी न सां झाल दीसे जुई जुई, हल्या यां चाल्यां घणी वेदना थायक ॥ तीनु जना वेरागसुं, च्यारुं आहार पच खि कीधो सन्थारक । केवल ज्ञान उपायने, कर्म तोड़ि गया मुक्ति मझा-रक ॥ सती० १५० ॥ सतीने शिरोमणी अंजणां जी ॥ ® इति श्री अंजणां सतीरो रास सम्पूर्ण ॥

॥ ❀ अथ मैणरेहा जीकी चौपाई ❀ ॥

दोहा) जुवा मास दारू थकी, करे वेश्वा सुं जोग।
जीव हिंस्या चोरी करे, पर नारी नो जोग ॥ १ ॥

ढाल) विसन सातमो पर नारीनों, परतिख पाप दिखायो । रांवण पदमोत्तर मणरथ राजा, तीना रा नारी राज गमायो ॥ (राजवीयाने राज पीयारो० १) मनरथ राजा कर मन सौवो, जुग बाहुने मास्यो । आप मुंवोने राज गमायो, हाथ कछु नहीं आयो ॥ रा० २ ॥ रावण राजा पहिली हुवो, पछे पदमोत्तर रायो । तीजी कथा मनरथ राजानी, ते सुनज्यो चित लायो ॥ रा० ३ ॥ जम्बुद्वीप ना भरथ क्षेत्र मांहि, नगरि सुदंनसा भारि। धन सुं सम्पूर्ण देखतो सुन्दर, प्रजा सुखि राजारी रा० ४ ॥ मनरथ राजा रे धारणी राणी, रिद्ध

तणो विस्तारो । हाथी घोड़ा रथ पायक सेन्या, वरते चौथ्यो आरो ॥ रा० ५॥ स्व चक्रनें परचक्र केरो, विरूध नही तिन वारो। मनरथ राजारे जुग बाहू भाई, मांहो मांहि ठे प्यारो ॥ रा० ६ ॥ पांच इन्द्री तनो भोग भोग वतो, नाटक पड़े दिन रेणो त्रिविध परकार नी क्रीड़ा करतां, विषे विरून्ध लपटाणो ॥ रा० ७॥ मनरथ राजा राज भोगवतां, चड़ीयौ महिल उदारो । तिन अवसर में मयन रेहा दीठी, जुग बाहु नी नारो ॥ रा० ८ ॥ रूप देखीने राजा अचरज पाम्यो, अहो रूपज तुमारो ईन राणीने हुं राज मे राखुं, सुख विलसुं संसारो रा० ए ॥ मनरथ राजा कर मन सोवो, जुगबाहू नें बोलायो । करो सझाई आयुध सालानी, हूं देश लेवन ने जायो ॥ रा० १० ॥ हाथ जोड़ीने जुग बाहू बोल्यो, ओतो थोड़ो ठे कामो । राज विराजो राज सभामे, हुं जासुं भाई तामो ॥ रा० ११ ॥ मनरथ राजा राजी हुवो, हुकुम कीधो ठे भाई । देश कीह्लो कायम करि आवो, ले जावो फोज सझाइ ॥ रा० १२ ॥ जुगबाहु तो उठ्यो सेताब सुं हरख हुवो मन माहि, किधो कायम कर पाछो

आउं जब मुजरो करुं जाई ॥ रा० १३ ॥ ले फोजां जुगबाहु चड़ियो, मजला मजला जायो । जुगबाहु तो मनमे न जान्यो, मनरथ कीयो उपायो ॥ रा० १४ ॥ मनरथ राजा मयन रेहाने कारण, चारी वस्त्र मङ्गावे । गहनां जड़ावरा पहिरवाई सोहे, दासी रे हाथ पहुंचावे ॥ रा० १५ ॥ दासी राजारे ऊकमें ठाने वस्त्र लेई, देवे राणी ने जायो । मनरथ राजा चीज पठायो, तिनरी खबरन कायो ॥ रा० १६ ॥ मयन रेहा मनमाहि जान्यो, धनी चालोठ गासो मयनरेहाने ऊनी जाणी, जेठ पितारी ठामो ॥ रा० १७ ॥ ईम जानिनें राणी ऊरा लिधा, वस्त्र आभु-षण सारो । नेह सनेह रीवाज मेली, जाण्यो लागो ह्लारे लारो ॥ रा० १८ ॥ मयन रेहाने रीसज आई दीनि दासीनें ऊऊकारो । धनीतो ह्लारो परदेस सिधारो, राजा पड़ियो ह्लारे लारो ॥ रा० १९ ॥ दासी तो मनमें दिलगीर हुई, राजा पासे आई । मयन रेहातो राजा कोप करीनें, दीना वस्त्र वगाई रा० २० ॥ मनरथ राजा रातरे समै नें, हेलो मारेठे रायो ॥ रा० २१ ॥ मयनरेहा तो मनमांहे जाण्यो मनरथ राजा आयो । वीजो तो कोई उपाय न

दीसे, हुं सासुनें हूं रै जनायो ॥ रा० २२ ॥ मयन-रेहा तो गनी जायनें, दीनो छे जनायो । अमलां मिस तो माता जान्यो, बेटो जोलै आयो ॥ रा० २३ ॥ आतो महल बेटा जुगबाहुनो, महल पैली कानी थारो । बचन माता नो सांभल राजा, लाज्यो छे तिन वारो ॥ रा० २४ ॥ मेणरेहा ईम मनसें जांण्यो, पड़ीयो गदेसे माहरे । तो कासीद मेली धनीनें, वेगा आवज्यो ईन वारे ॥ रा० २५ ॥ बीती बात लिखी कागद में, जीवती जाणो मोनें तो पाछा घरे बेगा आवज्यो, दगो कीयोछे थानें ॥ रा० २६ ॥ कासीद कागद दीयो सीताब सुं जुग-बाहुने जाई । कागद बांचनें जुगबाहु जांण्यो, दगो कीयोछे भाई ॥ रा० २७ ॥ इम जानीनें राजा पाछो चलीयो, ढील न कीनो काई । मोहुरत नहीं राजा महल जांवण रो, निमती ये बात बताई ॥ रा० २८ ॥ जुगबाहु तो डेरो बारे कीनो, नगरी मे नहीं आयो मनरथ राजारो डर जाणीनें, राणी धनी कनें जायो रा० २९ ॥ मेणरेहा मित्र आप धनीरी, पर पुरुष प्रीत न जांणी । बिरत राखन आपरी सारू, जतन करेछे प्रांणी ॥ रा० ३० ॥ मेणरेहा तो पहुंती सिता-

वसु, विधसुं बात सुनाई । जुगवाहु तो मनमें न जान्यो, मारेलो थांने चाई ॥ रा० ३१ ॥ जुगवाहु ने आयो जांणीने, मर जपनो राजारे । मनरथ राजा करय विमासण, उमरावछे इनरे सारे ॥ रा० ३२ ॥ जुगवाहुने राणी कह्योछे, दगो करेलो चाई । साथ सामान छै इणरे सागे, हुतो पहिली मारूं जाई ॥ रा० ३३ ॥ चाई मारण राजा रातनें चाल्यो, चढीयो एक सखाइ । दोड़ी दार चाकर पालतां, गयो धकायनें माहि ॥ रा० ३४ ॥ मैणरेहा तो मनरी दाखवी मनरथ राजा आयो । राणी कहे सावधान हुवो, मारेलो थांने चायो ॥ रा० ३५ ॥ मैणरेहा तो न्यारी हुई, राजा नेड़ो आयो । जुगवाहु तो नेहरो सूतो, मनरथ घावज वायो ॥ रा० ३६ ॥ चाई मारने राजा पाछो वलियो, होय घोड़े असवारो । सरप पूठ डी खुर हेटै चीथी, खाधो छै तिन वारो ॥ रा० ३७ ॥ मनरथ राजा हेठो पडीयो, मरणे गयो नरक ततकालो खवर नहीं कोई राज सभामे, करला कीनो छे चालो ॥ रा० ३८ ॥ मैणरेहा तो कने आई, दुख धरती मन माई । मैतो थाने कह्यो छो महाराजा, मारेलो थांने चाई ॥ रा० ३९ ॥ मैणरेहा तो कहे

ते पूरा वैरी. सूंस लेता जे पालै ॥ रा० ५८ ॥ मित्र
होवे तो मरण सुधारे, करे पर उपकारो। दे शरण
हनां सुंस करावे, ते विरला सन्तारो ॥ रा० ५९
धन २ छे सन्सार में, मैणरेहा राणी, मोह धनी नों
निवास्यो। आप तनो नरनार जांणीनें, तिने उप
देस देईने तास्यो ॥ रा० ६० ॥ मैणरेहा मनमांहे
जाण्यो, रीसै पकडैलो मोने रायो। वेस बदलनै
परही नासुं, दासी नाम धरायो ॥ रा० ६१ ॥ केरा
मांहि सुं तो वारे निकली, गइ उजाड़रे मायो। पूरी
आपदा नही कोइ साथे, राणी ये कुमर जायो ॥
रा० ६२ ॥ जिन जायां दशोटन होता, बांटता
राजा वधाई। विषम विजोग मे कुमर जायो, जो
इज्यो करम कमाई ॥ रा० ६३ ॥ पापी पाछला सुं
राणी करपे, रिसै आवैलो कोई लारो। इम जाणी
नें कुमर उंचायो, हुइ करमारे सारो ॥ रा० ६४ ॥
कोमल कायाने कारण पड़ीयो, पांव वड़े नही ठायो
कुमर तो राणी निजती न जाण्यो, बालक मैले
मायो ॥ रा० ६५ ॥ चीर बिछाई ऊपर सुवाण्यो,
बाल विछोहो जाण्यो। होतव थारो होसी जिम
जाया, मैणरेहा दुख आण्यो ॥ रा० ६६ ॥ कुमर

मेल राणी आधी चाली, अन्न बिना सूनी काया कदे सु वा वड़ कुण मङ्गल गावे, करमा वैन दिखाया रा० ६७ ॥ घणा दासने दासी हुता, राज कुमार नी धायो । दोढ़ी परदा माहें रे होती, राणी एकली जायो ॥ रा० ६८ ॥ जाता २ आगे नदी आई, पाणी मे वस्त्र पखाल्या । सिनान करीने तीरज वैठी, ऊठी दुखरी झाला ॥ रा० ६९ ॥ कौन विजोग पड्यो मो साहे, किसे ठिकाने आइ । रोही मे भमती एकल ड़ी, रोवेठे विल लाइ ॥ रा० ७० ॥ किन घर जनमी किन घर आई, राजारी राणी कहाइ । साहिव नें माहरो मूवो मेली, हुं रोही मे आई ॥ रा० ७१ ॥ कुमरां विछोहो पड़ी मातामें, जुग वल्लभ लघु भाई । जुग वल्लभ ने पाछो मेल्यो, बालक छे वन माइ ॥ रा० ७२ ॥ महिल झरोखा सोभा जाली री, राज बीयां रूसनाई । कुण्डि साहिव जत्री मेली, हु आय वैठी रण माही ॥ रा० ७३ ॥ विषम उजाड़ ने तीर नदी नो, सुख नही तिल रती । मैनरेहा तो दुख कर दोरी, सङ्कट पड्यांछे सती माहि ॥ रा० ७४ ॥ झूरे घनी ने करे अणराई, दुख भर छाती फाटे । मैनरेहा नो दुख

प्रभु जाने, वैठीबै तट माटे ॥ रा० ७५ ॥ संयोग रूपिणी रूई हुंती, विजोगें तिण घालो, नाथ विहूणी झूखनी करती, आणी रणमे राली ॥ रा० ७६ ॥ देखो सगाइ इण संसार मे, बीछड़तां नही वारो। इम जाणीने सदगुरु सेवो, लाहो लेज्यो लारो ॥ रा० ७७ ॥ तिण अवसरे देवता इम जाणे डुख करे छै राणी। वै क्रियो रूप कियो हाथी रो रामत माड़ी पाणी ॥ रा० ७८ ॥ डुख विसारण विलम्ब न कीयो, सुड़ सुं ब्राले पाणी। डुख जरी ने हाथी दीठो, रामत देखे राणी ॥ रा० ७९ ॥ जिम जिम रामत देखे राणी, अचरिज रामत जारी। धर्म अंकुरो पुन्य संजोगें, आवै छे नर नारी ॥ रा० ८० ॥ देवत छे कोइ पर उपगारी, राणी नें सूंक सुं फ़ोलें। जितरें नेड़ा आय निकलिया, लेके विमाणमे मेलें ॥ रा० ८१ ॥ विद्याधर तो राजी हुवो, रूप घणो इण नारी। तुरत विमान ले पाछो वलियो सुख विलसा संसारो ॥ रा० ८२ ॥ मैनरेहा तो मनमे जाण्यो, किन दिश ए लेजावे। यातो नही दीसे छे आछो, रख्यो मुऊ शील खण्डावे ॥ रा० ८३ ॥ विद्याधर ने मैनरेहा पुछे, जाता किन दिश सदाई

अवेतो थे पाछा वलीया, कांइ दिल माइ आई॥ रा० ७४॥ जगवन्त नें तो दरशण जातां, तो सरिखा मिली नारी। इम जानीनें पाठो वलीयो, सुख विलसां सन्सारी॥ रा० ७५॥ मैणरेहा मीठा वचन दाखवे, जगवन्त दरशण आतां। मारग में थाने तुज मिली हु, नफो घनो दरशण करतां॥ रा० ७६॥ तीर्थंकर नो दरशण करतां, परसन होसी कायो। विद्याधर तो पाठो वलीयो, मैनरेहारे मन जायो॥ रा० ७७॥ समव शरण सु नेड़ो आयो विमान सुं उनरीया। कर वन्दना नें सुने बखाणो कारज सगला सरीया॥ रा० ७८॥ जुगबाहु तो देवता हूयो, ऊभ्या ठे ऊंघ में आणी। सेवक तो कर जोड़ी हरषित हो, जेजे करें मुख वाणी॥ रा० ७९॥ इन ठांमें स्वामी आय ऊपनो, हुवा अमरां नाथो। कौन गुरुनी सेवा किनी, दान दियो छे हाथो॥ रा० ८०॥ ज्ञान करीने देवता दीठो, पूरव जवनो विचारो। जुगबाहु तो म्हारो नाम ज हुतो मैनरेहा म्हारी नारी॥ रा० ८१॥ मैनरेहारे कारण मोने, मनरथ भाई मास्यो। दे सरणानें सुरु करायो मैनरेहा मोने तास्यो॥ रा० ८२॥ उपगारी नो

गुण जाणीने, देवता दरशण जायो। देखुं मैणरेहा कुण ठिकाने, बैठी समोशरण मायो॥ रा० ९३॥ परगट रूप कीनो ठे देवता, प्रभुने प्रदक्षणा दिधि साध साधवि प्रदक्षिण करिणे, मैणरेहा ने वन्दना कीधी॥ रा० ९४॥ परषदा देखीने हसवा लागी देव दिशे ठे गेहलो। अखीने तो वन्दना कीधो, जिनरो प्रभु तो उत्तर देलो॥ रा० ९५॥ जुगबाहु इणरो नामज हुंतो, मैणरेहा इणरो नारी। धरम तणो इणने साहाज्य दिधो, हुवो सुर अवतारी॥ रा० ९६॥ मैणरेहारे कारण ने, मनरथ जाइ मास्यो दे शरणा ने सूंस करायो, इणने मैणरेहा तार्यो रा० ९७॥ मैणरेहा तो मनसे जाण्यो, धनी दीशे ठे माहरो। इण अवशर मे संजम आवे, पठे विद्याधर नो नही सारो॥ रा० ९८॥ नरी परषदा में मैणरेहा उठी, बोलेठे कर जोड़ी। आज्ञा द्यो तो संजम लेऊं, टालुं भव तणी खोड़ी॥ रा० ९९॥ देव कहे थाने आज्ञा माहरो, ल्यो थे संजम भारो जुगबाहु तो उरण हुवो, मैणरेहा ने तारो॥ रा० १००॥ मने तो विद्याधर ल्यायो, परवश बात प्रकाशी। कहे विद्याधर कह्यो देवता, गयो विद्या-

भर नारी ॥ रा० १०१ ॥ मैणरेहा तो सञ्जम लीधा ज्ञान न्रणै गुरुणी पासे । विनय करी तें आज्ञा पाले, सुमति गुपति कर पासे ॥ रा० १०२ ॥ देवता तो मनमे हरषज पाम्यो, पूज्या प्रभुजी नां पायो साधु साधवी सर्व वांदीने, आयो जिण दिश जायो ॥ रा० १०३ ॥ देवता तो अपणै ठांमै पहुतो मैणरेहा सञ्जम पाले । बालक तो मारग मे सेझ्यो आपरा पुन्य लेन रख वाले ॥ रा० १०४ ॥ नातो कोई हिंसक नेड़ो आयो, नही कोई दंखी खायो । देखो पुन्याई ने प्रभाव थी, सुकृत कीनो सहायो ॥ रा० १०५ ॥ मिथिला नगरी नो पदम रथ राजा, चढ़ीयो शिकारज सोई । पाप करन्ता पड़े पाधरी पूरव सुकृत होई ॥ रा० १०६ ॥ कर असवारी राजा रणमें फिरता, जोवे जीव वन सब कोई । रन माहे तो बालक सूतो, दीठो राजा सोई ॥ रा० १०७ ॥ बालक नेड़ो राजा आयो, रूप देखने अच-रिज पायो । बालक कोई पुण्यवन्त दीसे, राजारे मन भायो ॥ रा० १०८ ॥ माहरा राजमे पुत्र नही छै, माहरे सहज में आयो । तो इन बालक नें करो लेऊं, सौपूं राणी नें जायो ॥ रा० १०९ ॥

कुमर लेईने राजा पाछो वलीयो, आयो राजा राज दुवारो । पुष्प माला राणी राय तेनावे, पुत्र दीयो छे करतारो ॥ रा० ११० ॥ नव मासातो जार मेछे, देवता पितर मनाशो । आपने पुरव पुण्य करीने कुमर सहज में आयो ॥ रा० १११ ॥ आपनां राजमे पुत्र नही छे, करो इनरी प्रति पालो । राजा लायक यो कुमर दीशे होसि राज रखवाल्यो ॥ रा० ११२ जाग जोलावन देई राणीने, नमीय कुमर खोलै घाल्यो । पुण्यवन्त राजाने आया पीछे, जोमियांनें मन चाल्यो ॥ रा० ११३ ॥ जोमीयां साहरे अनमी हुंता, कुमर राजमे आयो । जोमीशा सब माहरे चाकर हुवा, नमीय नाम दीरायो ॥ रा० ११४ ॥ नमीय कुमर पदम रथ राजा, दिन दिन वधतो होई । मात पिता वन्धव वीसाहो, ते सुनज्यो सहु कोई ॥ रा० ११५ ॥ जुगवाहु नें मणरथ मार्यो, विषया रस रे चायो । पाछा चलता नें सांपज खाधो, गयो नारकी मायो ॥ रा० ११६ ॥ दोनु राजा रो मरण हुवो, खवर हुई नगरी मांहीं मैणरेहा तो निकल नांठी, तिनरी खवर नही कांई ॥ रा० ११७ ॥ संसार नों तो कारज कीयो,

राज जुग वल्लभ नें दीयो। किणने दोसन दीजै रे प्राणी, करम आपरा कीयो ॥ रा० ११८ ॥ जुग बल्लभ तो राज करेछे वरतेछे चोथो आरो। बाप तणी मनमें थोड़ी आवै, पिन दुख वरने मातारो रा० ११९ ॥ नमी कुमर तो मोटो हुवो वैर पड्यो राजारो। नमी कुमर ने राज्य वैसाएयो सुख बिलसे सन्सारो ॥ रा० १२० ॥ जुगबाहु तो देवता हुवो, मेणरेहा सञम पाले। जुगवल्लभ नें नमी भाई, दोनु राज रखवाले ॥ रा० १२१ ॥ आठ करम छे महा जोरावर, जीवा नें फोड़ा पाड़े। भ्यारांने तो न्यारो कीना. फिर तब खेल दिखावे रा० १२२ ॥ दोनु राजा राज जोगवतां, अड़वी पड़ीछै सीमाड़ो। सीम आपनो राखन सारू. करे राज की राड़ो ॥ रा० १२३ ॥ जुग वल्लभ तो मनमे जाणे, आय लड़े दीशे छे कठारो। देखोने माहरी धरती तो लेशी, राज कीया अहङ्कारो ॥ रा० १२४ जुग वल्लभ तो फोजा ले चड़ीयो, कांकएरु सीमा जावे। नमी राजा मनमे कोप करीने, मनमे मगज न मावे ॥ रा० १२५ ॥ नमी राय तो करि मे सकाई, बोले छे बांकी वाणी। मरम मोसो

आज्ञा माङ्गि-मैतो संजम लीनो, जेव्या प्रभुरे पायो रा० १५३ ॥ दोनु राजारे मै वैर सुनियों, लड़सी माहो माई। घणा आदमी मरण पामसी, तिन कारण हुं आई ॥ रा० १४४ ॥ जुग बह्लज राजा बात सुनीणे चिन्ता फिकर मन आई• जुग बह्लज तो कहे मानाने, जाय मिलुं हुं जाई ॥ रा० १४५ ॥ ठीक नहीं ठे नमी रायने, ये है माहरो ज्ञाई। नही विस्वास राजवीयां-केरी, तिनसुं मिलुं पहिली जाई ॥ रा० १४६ ॥ जुग बह्लजनें तो दियो समझाई. नमी राय कने जायो। सतीयां निजर पड़ी राजारी, विनय करी सांमो आयो॥ रा० १४७ ॥ हाथ जोड़ीने राजा बोल्यो, महासती यां किम आई। कासुं कारण पड़ीयो थांहरे, इसड़े अवशर आई ॥ रा० १४८ ॥ किसुं कारण थांहरे दोनु राजारे, झगड़ो पड्यो माहो माई। फोज वन्धी थेतो झेली कीनो -तिन कारण हुं आई ॥ रा० १४९ ॥ बाप मार्योने मा निकल जागी, गई एकरे लारे। देखने ए म्हारी धरनी लेशी, कही सनमुख मातारे ॥ रा० १५० ॥ बेटा तो थे राज वीयांरा, बोलो बोल विचारो। झगड़ो थां उपर कुन आसी, जाईजो थारो ॥ रा० १५१

जुगवल्लभ ने तो पुठो मेल्यो, खवर पड़ी अनुसारे नांनो वालक जिम जाणीने, वात कही विसतारो रा० १५२ ॥ वात सुनी ने राजा लाज्यो, नीचो मुखकरी जोवे। नारी वचन कहियो माताने, राजा ने नही सोवे ॥ रा० १५३ ॥ नमी राजातो मन मांहि जांण्यो, जुग वल्लभ राजा भाई। नेह सनेह धरि दोनु वेटा रो, तिनसुं माजी आई ॥ रा० १५४ ॥ नमी राजा तो मिलन ने चाल्यो, जुग-वल्लभ साहमो जाई। हरख भावसुं वांह पसारी मिलीया दोनु भाई ॥ रा० १५५ ॥ एक न हाथी रे होदा वैठा, जुगवल्लभ नमी भाई। जुगवल्लभ रा रंग कानी, हुई अव हरष सवाई ॥ रा० १५६ लोक लडाई री वातां करता, लड़ता होड़ा होड़ी लोका मनमें अचरिज पांम्यो कांई कियो ठे ईन मोडी ॥ रा० १५७ ॥ वैर मिटाय ने मेल करायो घनां लोक हुवा राजी। घनां जीवांरा मांथा पडता राख्याछे इन माजी ॥ रा० १५८ ॥ लोक राजारे कुशल ज हुवो, घर घर हरख वधाई भली होज्यो इन सतीयां केरो, जस लीधो जग माई ॥ रा० १५९ राज कचेड़ी मे आयने वैठा, जुगवल्लभ नमी भाई

जुगवह्लभ सुख अथिर जानी नें, वैरागरी मनमें आई ॥ रा० १६० ॥ जुगवह्लभ कहै मोने दीक्षा लेन द्यो, राज करो महारायो । राज रिद्धने सर्व सम्पदा मे थाने भोलायो ॥ रा० १६१ ॥ जुगवह्लभ तो दीक्षा लीधो, हरख घनी मन माई । भाई विछोहो दुखरी लहरां, नमी कुमर नें आई रा० १६२ ॥ नमी कुमर तो राजा राज करे छै, राणी एकसो आठो । होवे नाटिक नें धुरे नगारा दोनु राजारो पाटो ॥ रा० १६३ ॥ दाघ ज्वरनें जोग करीनें, लेशी सञ्जम भारो इन्द्र परीक्षा करवा आशी, उत्तरा ध्ययन विस्तारो ॥ रा० १६४ ॥ दोन्या भायारे मेल करायो, मैनरेहा पाछो आइ । गुरुणी जीरे पाये लागने, विध सुं वात सुनाइ ॥ रा० १६५ ॥ मोटा राजारे मेल करायो, राखी घनांरी वाजी । मैनरेहा नां गुण जानीनें, गुरुणी हुइ छे राजी ॥ रा० १६६ ॥ छत्रीस हजार आर्य्या माहे, गुरुणी चन्दन बाला । तिनरे पाटे पदवी पाइ, शिष्यणी रतनांरी माला ॥ रा० १६७ चेड़ानी जो सात पुत्री, भगवन्त आप वखाणी, चेलणा कमलावती तीजी प्रभावती.चौथी रुखदत्ता

राणी ॥ रा० १६८ ॥ पांचमी पदमावती छठी कलावती, सुज्येष्टा सातमी जाणी। सङ्कट पड्या सती शील ज राख्यौ, दवदन्ती नल राणी ॥ रा० १६९ ॥ अञ्जणां सती छे महेन्द्र राजारी, विखो सह्यो वन मांही। सङ्कट पड्या सती पिन शील ज राख्यो, जश कीरती जग मांही ॥ रा० १७० ॥ सती द्रोपदी आगे हुई, जश लीधी जग मांही। मोटा राजारो विरोध मिटायो, मैणरेहा री अधिकाइ ॥ रा० १७१ ॥ संजम लेने सुकृत कीजो, मिनुख जमारो मत खोज्यौ। जिन शाशन में जिम मैणरेहा कीनी, तिम सब कोई कीज्यो ॥ रा० १७२ ॥ मैणरेहा तो दीक्षा लेइ, मन सुध संजम पालै। जिन मारग मे नांम दीपायो, भव दुखन सहू टालै ॥ रा० १७३ ॥ मैणरेहा तो कुल तारक हुइ, लज्या आपरी राखी। विखो सह्यो पिन शील न भांज्यौ, भगवन्त जेहनी साखी ॥ रा० १७४ ॥ जुगबाहु नें मैणरेहा राणी, जुग बल्लभ नमी भाइ। च्यारांरो तो कारज सिधो, मनरथ दुरगति मांही ॥ रा० १७५ ॥ विसन सातमो पर नारिनो, जीव घात घर हानी। मनरथ राजा

नरके पहुंतो, कुजश बांधनें प्रानी ॥ रा० १७६ ॥
एक कुविशन मनरथ सेव्यौ, बहू रुलीयो संसारो
सातो कुविशन जे सेवै प्राणी, तिनने दुख
अपारो ॥ रा० १७७ ॥ विषयारस ने विष सम जानी
सद गुरुनो सेवा कीजै । मनरथ राजा नो बात
सुणीने, पर नारी सङ्ग न कीजै ॥ रा० १७८ ॥
दान शील तप संजम पालो, दुखण सगला टालो
दया धरम री समता आनो, सुद्ध करी आचारो
रा० १७९ ॥ धरम दया ईं केवली भाख्यो, ते सांचो
करी जांणी । जे सेवे जांणी भवि प्राणी, ते पामे
निर वांणी ॥ रा० १८० ॥ जप तप संजम पालो
रे भाई, विषय विकार गमाई । जीव जि कै तो
शिव सुख पावे, वीर वचन मन लाई ॥ रा० १८१
॥ ईति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ श्री मैणरेहाजिकी चौपाई सम्पूर्ण ❀ ॥

॥ बुढ़ारी ढाल लिख्यते ॥



दोहा) ध्याज माता वीनऊं, गणधर लागुं पाय । वर्द्धमान चौवीसमा, वांदु शीस नमाय ॥ १ कन्याने जमाइ तणो, पइसो न लीजे कोय । बूढ़ाने परणावतां, गुण बूढ़ारा जोय ॥ २ (ढाल० १) इण पुर कंवल कोई न लेसी (एदेशी०) परदेशां सुं इक सेठज आयो, धन कमायने बहुलो लायो निरधनरे घर बेटी जाई, कुल कुटुम्ब ने तारण आई ॥ १ ॥ वरस इग्यार मे बेटी थाई, माय वाप जब हर्ष सवाई । तिन सेठसुं कीवि सगाई, माय बाप फिर बांटे वधाई ॥ २ ॥ रुपया नवसे आकरा लीधा, बट्टेरा फिर पाठा दीधा । करी सगाई नें लीया दाम, कन्या वेची पूरी हाम ॥ ३ ॥ सखरे लगन सावो थप वावे, घर सारु चलि जान बुलावे बींद बींद रो आयो जो भाई, तीजो भोजग चौथो नाई ॥ ४ ॥ (ढाल० २) महलां बैठी राणी कम-

लावनी (एदेशी०) वेटी कहे माता तुमे सांभलो सुनज्यो माहरी वात । रुपयांरो लालच थे देखीयो देस्गे मोने बूढ़ारे हाथ ॥ १ सांभल है मोरी माता, अवला वेटीरो जोरज को नहीं० ॥ मोल करायो हे माता माहरी, मुगता गिणायो दाम । आतो खरची थोड़ा कालरी, क्युं कर चलसी थारो काम २ सां० ॥ माल ले मोटीयार दीसे वापजी, मरोड़ राखे मोरी माय । रुपयां रो लालच हुवे घणो, तो परदेसां क्युं नहीं जाय ॥ ३ सां० ॥ मोटी हुवे घरमे भावड़ी, अवर ना नड़ीयो भरतार । उनरो तो जीवड़ो रहे हर्षमे, मोटो होय जासी दिन चार ४ सां० ॥ इग्यारे वरसां री माता भावड़ी, साठ बरसां री गले फांस । उणरो तो जीवड़ो रहे सोच मे, निश्चै रंडा पारी आस ॥ ५ सां० ॥ सासु सुसरा रो दुख हुं सहु, सोकरो सहु तुं कार । साठ बरसां रो मिलीयो भोकरो, क्यौ कर काढु जम वार ॥ ६ सां० ॥ बूढ़ो तो माता वैठो रहे, वालक [illegible] जाय । उनरी कैयततो ना कोइकरे, इए [illegible] लोकामे थाय ॥ ७ [illegible] ॥ धवला आया गया गूगला, [illegible] वेस । १.

फिग मिग करे, आंख्यां गड माहे पैस ॥ ८ सां०
दोहा) सेठजी आयो परणवा, ले साथे परिवार।
आगल घोले जांगड्या, गावे गीत रसाल ॥ १ ॥
आयने उतख्या बागमे, हुइ जीमन री रीफ। सखी
सहेली मन चिन्तवे, चालो देखनने बीन्द ॥ २
नाक झरे खाला पडे, नही ठै आंख्यामे जोस। करम
पातला बीन्दणी तणा, किनने दीजे दोस ॥ ३ ॥
ढाल० ३ (चौपइनी) बूढ़ो बीन्द परणी जन आवे
घोड़े चढ़ीयो नाड़ हलावे। माढ़ी मुठरे कलप
लगावे, आगला दॉत निजर नहि आवे ॥ १ ॥ देखै
आयने लोक लुगाई, हीरासी बेटीने चाख लगाई
बीन्दणी वरने जौवन आई, देखी वरने मुरछा गति
पाई ॥ २ ॥ कन्या ने हथ लेवो दिरायो, बीन्दणी
बेह सु नचेड़ो खायो। देखी वरने कूटे छाती, नलो
लायो ठे बावा गूंड़ो हाथी ॥ ३ ॥ सेठ परणी ने घर
ले जावे, लोक लुगाई देखन आवे। सेठजी कीवीथे
सखरी कमाई, वहु गुणवन्ती आई लुगाई ॥ ४ ॥
दोहा) वठतो सेठजी इम कहे, सांभल सुलक्षणी
नार। घरमे धन ठे अति घना, लाहो लो इणवार
॥ १ ॥ ए मन्दिर ए मालीया, सुख भोगवो संसार।

पूरव पुण्य पूरो कीयो, मो सरीखो मिलीयो नर-
तार ॥ २ ॥ कामन अन वोली रही, मनमें आणी
राग । थां सरिखी जोड़ी मिली, फूटो माहरो जाग
३ ॥ (ढाल० ४) पास जिनेसर पूरण आसा (एदेशी
मेतो मुगती माया खाटी, थे तो खावो घीने चाटी
चुल्हा में जावो घिरत नें वाटी, थांने देषने नितमे
कूटूं बाती ॥ १ ॥ तूनो बोले मूढा माहे सुं आंटो,
थारा पाकुं ली चोफेरा च्यारु दांतो । तूंतो रहे रहेरे
बूढा कॉड़ी, थारो शिर सुं फोकुंली हॅाड़ी ॥ २ ॥
ढाल० ५) वीर सुनो मोरी वीनती० (एदेशी०
साध नगरीमे आवीया, हुं दरशन नवि जायो जी ।
आठ पहर दिन रातरो, मोने धरम नवि सुहायो जी
१ पाप उदे तुं नारि मिली० ॥ केमे तलाव फोड़ावीया
केमे बाग लगाया जी । आठ पहर दिन रातरा,
काचा फल तोड़ीने खाया जी ॥ २ पा० ॥ माछी
झलीने अलसीया, लठ गिड़ोली घायो जी । उंदर
विल्ली सुं मरावीया, विलामे ऊना पाणी रलायो
जी ॥ ३ पा० ॥ (दोहा) हाथ जोड़ी नारी कहे
सांभल कन्त विचार । पूरव पाप मै किया, तुं
मिलीयो नरतार ॥ १ ॥ (ढाल० ६) हिव राणी

पदमावती (परदेशी०) केमे साध सन्तावीया, केमे महा सतीयां सन्ताई। केमे कुड़ा कलङ्क दीया केमे विरोध घलाई ॥ १ बात सुनो कन्त पाछली० कन्द मूल मै खाया घना, घरमे दव दीधा। सूंस लीया वीत रागना, कुड़ा कोराज पीधा ॥ २ बा० केमे ईंफा फोड्या घणा, माला पंखीना पढाया। केई लीला रुंख वढाईया, वनमे दव लगाया ॥ ३ बा० ॥ कामन टुमन मे कीया, काचा गरभ गलाया कें जीवाणी ढोल्या घणा, वाल्ह विछोह दिराया ॥ ४ बा० ॥ धरम नेम कीधो नहीं, बहुलो पाप कमायो। पाछला पापरे उदै, बूढ़ो वर मै पायो ॥ बा० ५ ॥ (ढाल३ जत्तनी देशीमे) धनीयज बोलें छे कर जोड़, हुं थारा माथारो मोड़। शिखर बन्ध देहरो, ज्यु थारा शिर रो सेहरो। भूखाने भोजन आधार, जीसो नारी ने भरतार ॥ १ ॥ पहिरो ओढ़ो सब शिनगार, मुख उजलो सुहागण नार। मोने मत करे तुं भांड़, मो मूवा होय जासी रॉड़ ॥ २ लांबी कॉंचली ने रातो वेश, भूंड़ो दीसमी थारो ला वेश। नहीं रुंलि हुं करतो भांड़, हुंतो परणी जहरी गॉड़ ॥ ३ ॥ कूड़ा लेख लिख्या करनार, तुतो

जोड़ी नही छे भरतार । पिता सा इना दीसो आप मै पूरव ले जव कीयो पाप ॥ ४ ॥ सेठजी आ सुणीय जलड़ी, रॉड़ वात म्हाने इसड़ी कही । कलह कारी क जीयारो मूल, धोला माहे पड़सी राहरे धूल ॥ ५ ॥ ठाली माहे धमीड़ो लीयो, परणतां कामज खोटो कियो । डुखड़ो कहुं किन आगे जाय नही दीसे घरे बाप ने साथ ॥ ६ ॥ (दोहा) वात सुणी नारी तणी, ऊठी मनमे झाल । बूढा पारो परणवो, हुवो जमारो खराव ॥ १ ॥ (ढाल ८) जत्तनी ठे०) सेठ सासुरे कने आयो, माहे सुजरो कहिवायो । पाछी आशीस केह वाई, दीधी तिहां गादी बिछाई ॥ १ ॥ सेठ सासुने जलम्यो कहावे थांरी बेटीने समझावो । बोले मूढ़ा माहे सुं वांकी सोने कहेरे बूढ़ा झाकी ॥ २ ॥ बिना बुलाई पीहर जावे, मन माने तो घरमे आवे । दिन चढ़ियां थवेरी ऊठे, अण सोझो अनाज कुटे ॥ ३ ॥ केतो रॉधे खीच अलुणो, के धोवो चर घाले लुणो । रोव्यां पुरसती करे तड़का भड़का, पाछो बोलुं तो मोड़े कडका ॥ ४ ॥ पाणी मांगु तो पटके लोटो, पाछो बोलुं तो ले दौडे सोटो । माता कहे सुनहे बेटी, इसड़ी किम

हुवे तुं धेठी ॥ ५ ॥ माता हुं थारा घरमे आई,
तेंतो रुपैया सुं चितलाई। तें तो सङ्का राखी नही
काई, मोने बूढाने परणाई ॥ ६ ॥ माहरा मनमे
घणो आईनो, पिन तेंतो आण्यो दादारो साईनो।
पीवे हो कोने बोलीने हरकु, जाणे जूत्यां इणरे वरकु
७ ॥ (ढाल ए) करम परीक्षा करण कुमर चल्यौरे
एदेशी) बेटी कहे पिताजी सांभलोरे, कीधो खोटो
थे काम। मोने दे धको देने नापी खाड़ मे रे, माहरा
गिणाया थे दाम ॥ १ ॥ (पूरीतो न पड़सी हो
बेट्यांरा दामसुं०) थांरीतो बेची बावा हुं बिक गईरे
हुंतो अबला गाय। रूर नही राख्यौ तुमे लोकीक
करोरे, हीयो कठोर छे मोरी माय ॥ २ पूरी० ॥
रुपीया मीठा कदे नही जांणज्यो जी, जेसो
रोसल जहेर। इणभव हूं तुं थांरी कीकरी जी,
काढ्यौ पूरबला भव वैर ॥ ३ पूरी० ॥ रोव्यां तो
खावो दिन दश गल गलीजी, माथे मुजनी पाग
म्हे म्हांरे पूठा सीध्याव स्यांजी, मत धरो हवे मन
वैराग ॥ ४ पूरी० ॥ (ढाल १०) मेहलामे बैठी
राणी कमलावती (एदेशी०) बाप कहे बेटी सुनो,
बोलो नी बोल विचार। दोरी तो पालीम्हे मोटी

करी, दुख देख्या तिनवार ॥ १ गुण गावो हे छेटी वापरा० ॥ बारे बरसां रो हु वर लावतो, उड़ पर देशां उठ जाय। सासुने सुसरा दगधा वता, कुढ़नो करती थांरी माय ॥ २ गु० ॥ जूव गई ए बेटी थारा तन तणी, हंसकर पूजी तुं गोर। पाछला पुण्य उदे करी, श्या मिलीयो छै थाने जोड़ ॥ ३ गु० ॥ जो घरमे धन छै अति घणो, इण धनने लागो खाय। आघो तो पाछो देख्यो नही, दीनो जनम गमाय ॥ ४ गु० ॥ इसड़ो बेटी तुं क्युं कहे, धनसुं पुरी होसी तेरी हुंस। रुपयां री लालच मै देख्या नही, वाई थारे गलांरो सूंस ॥ ५ गु० ॥ मनमे तो हुंस होती घणी, कर दीधी नीरास। ज्युं ज्युं पिता दुख देखसुं, त्यु त्युं देसुं दुरासीस ॥ ६ गु० ॥ (दोहा) माय कहे बेटी सुनो, बोलो बोल विचार। बाबा साहमी तुं बोलती, लाज नही छे लिगार ॥ १ ॥ (ढाल ११ कर मन हुटेरे प्राणीयां (एदेशी०) माहरा रुपियां माजी लेइने, घाटा छै पेई माहि। आगे दुख ज काढना, अब रोख्यां ताजी खाय ॥ १ बेटी कहे माता सांभलो० ॥ फाटा कपड़ा ते पहेरती, रहती लोकांरे दास। कपड़ा पहिरेरे तुं सावता माजी

माहरे परसाद ॥ २ बे० ॥ पगमे न हुन्ती पोलडी नहीं हुती बिठिया पास । तोड़ा घड़ाया थे बाजना, मै पूगी थारा आस ॥ ३ बे० ॥ तरकारीने थे तरसता नहीं कोई घालतो राब । अब बाबाजी जीमे राबड़ा ते तो माहरे परताब ॥ ४ बे० ॥ छाछ मांगन थे जावता, नहीं कोई घालतो आछ । अब धोली डुजे बारणे, माता माहरे परसाद ॥ ५ बे० ॥ जाई बाप बिलखा हुता, रहे तां लोकांरे दास । अब मरोड़ मे मावे नहीं, माहरा रुपियां रो गुआस ॥ ६ बे० ॥ ढाल० ११ जत्तनी देशी० ॥ बुड़ला ने रीसज आवे इणने लात्यां सुं घमकावे । देखे आण लोक लुगाई नारी तो निची धुन लगाई ॥ १ ॥ बुरा होइज्यो घरसा नाई, तिनसु इसड़ी कीधी सगाई । पूरव जन्म कीया पाप, इण घर दीधी मायने बाप ॥ २ मैतो खोटी करी कमाई, जारे बुढ़ा लारे आई । मोने जोड़ी रा मांगन आवता, फिर फिर ने पाछा जावता ॥ ३ ॥ तुं जागमे कठा सुं आयो, तो सुं हथ लेवो जुड़ायो । कन्त वाणी सुनी तिसुलो चढ़ायो, आंख्या में पिण लाली लायो ॥ ४ ॥ नीकल रे तु म्हारे घरसुं बार, फिर परण सुंजी डुजी नार

थेंतो अकल कठे गमाई, तुं तो ल्यावे ठे दूजी लुगाई ५। थारि साठीने बुध नाठी, हुंतो आगली कुट्ट गाती म्हे थाने दोनु मिलकर रोस्यां, थारा मूढ़ा सांमो क्यों कर जोस्यां ॥ ६ ॥ बावा रुपयां सुं चित लायो आपरा कुलने कालो लगायो। जब ओ रुपया पूरा पड़ जासी, बावाजी कॉई भाठा खासी ॥ ७ ॥ हीरां सेती खोलो भरीयो, परमेश्वर सुं नहीं डरीयो। बावा आगला भव रोदीसे नाई, म्हारा जनम ने चाख लगाई ॥ ८ ॥ जोड़ीरो वर नहीं लायो, हीरां रे गल पत्थर ल्यायो। ओरां रे वर साहमो जोऊं उठी सवारी भाजीने रोऊं ॥ ९ ॥ (ढाल० १२) सुगुण सोभागी हो साहिब माहरा (एदेशी०) हाथ जोड़ीने हुं कहुं कन्त ने, सांभल चतुर सुजान। सोभागी०। संसार दीसे ठे सहु कारीमो सुनो धरम णी वाण ॥ सो० काज सुधारो हो प्रीतम परलोक नो० १ ॥ सामायक पडिक्कमनो पोसो आदस्यो, नव तत्व सुं लावो प्रेम। सो०। श्रावक रा व्रत पाल्यो मन सुधे, चीतारो चौवदह नेम ॥ सो० २ का० ॥ शीयल व्रत आपे दोनुं आदस्यां, थेनो छुं अर पाई भरपूर। सो०। हीयो तो तरावो

हो प्रीतम मांहरो, तरुण वयमे सूर ॥ सो० ३ का० ॥ पृथिवी पाणी हो तेऊ कायमे, वाऊ वनस्पति माय। सो०। नरक नीगोदे हो आपे उपना वार अनन्ती आय ॥ सो० ४ का० ॥ मरण सिराणे हो प्रीतम आवीयो, तीन पिठे पड़ी विर माय। सो० समता मूको हो इन ससारनी, काम चोग द्यौ छटकाय ॥ सो० ५ का० ॥ (ढाल० १३) सुख कारण जवि यन समरो श्री नवकार (एदेशी०) माता कहे सुन वेटी, मत करो इयां सो वाद। इयांरा हुकम मे रहिने, चलवो दिनने रात ॥ १॥ घालक नें परनीयो, सोतो करगयो काल बूढ़ाने परनियो, हालरियो हुलराय।२।माजी सुतज्यो धरज्यो मनमे राग। थांरो तो कुठ नही विगड्यो, वेटीरा पतला जाग ॥ ३ ॥ (ढाल० १४ अरणक रि ठे) नव महिना लग जारो हुं मुई, दुख देख्या तिन वारोजी। तातो शीलो वेटी खायने, गरज कियो प्रतिपाल्यो जी ॥ २ मां सुं वेटी उवरण को नही० सील वोदरी तो नै नीसरी, पड़टे लेई सुं वानी जी. हाथा सुं वेटा तने जीमावती, पावती ठण्ढो पाणी जी ॥ २ मा० ॥ थारो रुपीया वेठी मेलीया, सादपा

छे गति माहोजी । एक दूखरे वेटि माय तनो, जनम
करण नवी थायो जी ॥ ३ मा० ॥ (ढाल० यत्तरी
वेटी चैना कहै सुण बाई, चिन्ता मत कर तुं बाई॰
बावल रुपीया रो चित ल्यावे, तरै बूढ़ा नै परणावे ॥
म्हारा बावल आगे जो रन हालै, वेटी रो कह्यो न
चालै । वाबो कोढ्याने परणावे, वेटी नाकां सल
नही लावे ॥ बावै चोरंग्या नें दीधी, वेटी काली
किना नहि कीधी । बलती बोलै छोटी बाई, चीन्ता
किया गरज न काई ॥ सखि सहेल्या हथाई जोडै
सुने देखी मुह मच कोड़े । घरनौ नाम लीया हुं
लाजुं, सखी सहेल्यां मे बोल न गाजुं ॥ (ढाल०
जगत गुरु त्रि०) बीरो कहै बेनड़ सुनो हे, एकज
माहरी वात । मात पिता हलकि कहता जि, लागे
आपणि जात ॥ (हे बेनढ़ मनरो रोस निवार०)
आपे दोनु उपनारे, मातारे गरज ज आय । माता
डुख देख्या घणाजी, कह्या कठा लग जायहे ॥
२ वे० ॥ लोकांने कह्या सुण्यारे, मत तोडी जे तान
हुं जाइ तुं बहनड़ी रे, म्हारी कह्यो तु मानहे ॥
३ वे० ॥ (ढाल०) बेनड़ कहे वीरा सांभलो, बोलो
बोल विचारो रे । जे बहनड़ हुंती नही, तो रहता

अकन कवारो रे ॥ (स्वारथ रातो वीरा सो सगा० १)
ओही मां जही बाप जी. तुही घडो मांहरो जाईरे
स्वावण नें मिली रोटड़ी, आख्यां शुदी पाठे आईर
स्वा० २ ॥ जानी मुड़े बोले नही, देखी मुह सच
फोड़रे। हाव नाव जठे हो रहा, जलटी फाडे
म्हारो खोदी रे ॥ स्वा० ३ ॥ ननदोई जीमन
आवीयो, मुहरे पड़े लालो रे। लुगाई यानें नेली
करें, देखो वाईरो नरतारो रे ॥ स्वा० ४ ॥ हु वालक
म्हारी अवसता, नर जोवन में सारोरे। रुपीयांरो
लालच देखीयो, किम काढु जम वारोरे ॥ स्वा०
५ ॥ मनुष जनम मैं पाइयों, अहिले जनन वीरा
खोऊं रे। थे सगलां एको मतो कीयो, किण किण
किणने वीरा रोऊंरे ॥ स्वा० ६ ॥ (ढाल०) काया
रीयाड़ी कारमी (एदेशी०) जानी कहे ननदल
सुनो, एकज मोरी बात। बुहारे लारे जावतां,
हुकम करे दिन रात ॥ ननदल गाई सांभलो० १)
नित नवा गाजा पहरति, नित नवला करो सिङ्गार
कुमी नहि किण वातरी, लोपे नही थांरो कार ॥ न० २
सौ वरस पुरा हुसि, रहसि थाहरो राज। धन
माल रहसि मोकलो, देंठी व्यौहर व्यौ व्याज ॥

न० ३ ॥ (ढाल०) थेंराखो मुनी ब्राह्मणि (एदेशी०) ननदल कहे जाजि सुनो, मोने मत करो जाड़ हो. थाहरि जायगा रो कोई नहि, मोने हुई चाह राड़ हो ॥ जाजि करम तणि प्रापत पाइये० १) वदाद कुवे जे डुवला, कांधो न नाखे कोई हो । कन्या मुखथि ना कहे, घर लावो माहरे जोयहो ॥ जा०२ कोई जिमे लाकुवा, कोई लुखा वाकस खाय हो. पेलारा मुख देखने, मुरख झुरे मन मांहि हो ॥ जा० ३ ॥ (ढाल० जत्तनी है) बेटी थारा माथा रो मोड़ो, तो ने इन विन किसकि ओड़ो इन सुहागण पणा सुं धाई, सामाइक करिस्सूं सदाई ॥ १ ॥ नव तत्व सदा मन धरसुं, तपस्या ने पोसो करसुं । घर सारु दान ज देसुं, मन मान्यो कारज करसुं ॥ २ ॥ सम्वत् अठार छत्तीसो आणी, मिग सर ब्रलि मास वखाणी । चन्द फकिर ए बखाणी, सुनज्यो कलजुग नीसाणी ॥ ३ ॥ ॥ इति श्री बुढारासो सम्पूर्णम् ॥ ॥

॥ ⊛ अथ जुवान रास ⊛ ॥
॥⊛ तिरीया चरित्र को चौढालीयो लिख्यते ⊛॥



पास जिणेसर पूरण आशा (एदेशी०) लख चौराशी मे चट कत आयो, मनुष जमारो दोरो पायो । नव महिना गरभ में ऊंधो झूल्यो, तद साहिब को नाम कबूल्यो ॥ १ ॥ कौल बोल ले बाहिर आयो, मात पिता मन हरष ज पायो । बालक नें तो आप रमावे, डुध बतासा मिसरी खावे २ ॥ चर जोवन में सुरत संचारी, सखरी जोय परणावी नारी । सुन्दर वरनें टीको दीयो, सखरे लगनें साहो लीयो ॥ ३ ॥ कन्या ने हथ लेवो दिरावे, ब्राह्मण मिलकर वेद भणावे । वहु लेकर के घरमे आयो, दत्त दाय जो बहुलो ल्यायो ॥ ४ मात पिता मन हरप ज थायो, राजी होकर घरमे आयो । वहु सासुरे पगमें लागी, शीली होय सपूती आघी ॥ ५ ॥ नानी वहूने लाड़ लड़ावे, मीठा २

भोजन खवावे । जिहां जावे तिहाँ साथ ले जावे
हीरा जड़ावरा गहना पहिरावे ॥ ६ ॥ सासु कहे
तें करी कमाई, बहु गुणवन्ती बहु घाँरे आई ।
म्हानी जूंतां दीन्हां काटे, ससुरा घरमें माड़णा माड़े
७ ॥ सासु कहे बहु सुखसुं बोलो, गहना लेकर
घूंघट खोलो । बहु सासुने दे ठग कारो, जाने कभी
नौसनी ठाडी चारो ॥ ८ ॥ सासु ननद रा ठांदा
जोवे, घर वार ने रोवणा रोवे । जब लागी लोगांरे
कांने, वात करे मालक सुं छांने ॥ ९ ॥ धनी वात
ने कान नही दीयो, मुंह को फेरके पाछो कीयो.
नारी खोटी करणा बोली, गहनां गांठां दीना
खोली ॥ १० ॥ जब धनीने आई है दया, तो ऊपर
है म्हारि पूरी मया. कहे धनीनें जुदो घर मांडो, नही
तर थांने करसूं भांडो ॥ ११ ॥ धनी बोले है सुन
हे नारी, तेतो सखरी बात विचारी । मैं इतना
दिन धनकुँ कमायो, थां लगता नित मिल के खायो
१२ ॥ तड़कै ऊठी नें कजियो करस्यां, धन बांटी
नें जुदो लेस्यां । तड़कै ऊठी हूं पीहर जाऊँ, फेर
बुलायां वलै नही आऊँ ॥ १३ ॥ जब सासु ले
धननें आवे, सासु कहे तुं बहु घर क्यों न आवे ।

वहू कहै घर लाय दगावो, मेरे नावें घर कूवां में जांवो ॥ १४ ॥ मे इनारे धरनो दीयो, अन्न खावन रो सौगन लीयो । सुनो सासुजी कर द्यो जूदी, नहीं तर करस्युं घनी फजीती ॥ १५ ॥ लोग लुगायां सुँ नहीं करसुं, बात जाय पञ्चामें करसुं. सासु कहे बहु तु नला आई, तें सगला कूलमें लाज लगाई ॥ १६ ॥ मां बेटानें मोटो कीयो, कांमन गारीते ने बश कीयो । सासू बहुने बेटो लड़िया, छाती माहे धमीड़ो धरिया ॥ १७ ॥ धिग धिगरे थारो जीयो, धन वांटीने आधो दीयो । मन को चाह्यो सो बहु कीनो, पहिली ढाल हुई पूरीयो ॥ १८

दोहा) हाथ जोड़ नारी कहे, सांभल कंत सूजान. कह्यो कदै लोपां नहीं, थांरा गलारी आन ॥ १ ॥ थांसुं मोह अती घनो, चकरी कोर समान । थांने कांई किसी हुयै, तो सती होऊँ थांरी आन ॥ २ ॥ जन्म दीयो मेरी मायड़ी, रूप दीयो करतार । पूरब पुन्य पूरा कीया, नर जोवन नरतार ॥ ३ ॥

ढाल० २) धनी बोले वे सुन नारी हे, आग्यां लोपी थारी मति हारी हे । थांरे कारण हु जूदो हुवो रे, मैनो लोगामें अपजश लीयोरे ॥ १ ॥ नवमास

कपटि अनुरागी मोटी । काची सगाई कुटुम्ब नी जानो, वीत राग नो धरम वखानो ॥ १३ ति० ॥ इति श्री जुवान रास तिरिया चरित्र सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ माजीरो रास ॥

आतो नाम धरावे माजी, आतो धानधीने सुं राजी रे माजी । धर्म करणने गेलिरें माजी, पाप करणने पेहली रे माजी ॥ १ ॥ धरम मे ताके लेरी रे माजी, पाप करणने वडेरी रे माजी । पुन करणो नहीं चावेरे माजी, वैठी टावरिया रमावे रे माजी ॥ २ ॥ पाछली रातरा जागेरे माजी, वासी दाने लागेरे माजी । काम करती नहीं थाकी रे माजी, सगलां पहली माड़े चाकिरे माजी ॥ ३ माजीने प्यारा टूकड़ारे माजी, खावे ठणा टुकड़ा रे माजी । पर जवरो कर झुलिरे माजी, रांध खवावे मूलिरे माजी ॥ ४ ॥ घरमें वहु सारे रे माजी, घरका गणरूकड़ा ताड़ेरे माजी । वेठी पूरसें जाणो रे माजी, जमी कन्दरो अथाणो रे माजी ॥ ५ ॥

माजी काढ़े मुढ़ासुं-गालिरे, माजी बोले आल पम्पालेरे माजी। माजीने डरी बुलावोरे, रायता मे लुण घलावोरे माजी ॥ ६ ॥ माजी जुंवा लीखा मोरेरे, माजी सुधस्यो जनम बिगाड्योरे। माजी कुल धण्या सुंजोली रे, माजी करदी थाली होली रे ॥ ७ ॥ माजी दीसें भीलमे जाभी रे, माजी दान देवेनने आभी रे। माजी करे हरिरी कतली रे, माजी बाठ ज घालें पतली रे माजी ॥ ८ ॥ माजी अनसोयो अनाज कुटेरे, माजी वाउकाय ने लुटेरे। माजी पात्र जणी नवी पोखेरे, माजी जिवांरा गला मोसेरे ॥ ९ ॥ माजी सबसुं घड़का बोली रे। थातो पेलारी बुधि तोली रे, माजी आश्रव आई चोथरे माजी ॥ १० ॥ लालच नहि हिवे पून्य पनानी माजी, तेह थी घरणा सगला राजी रे माजी। माजी पुन्य किया बहु चारोरे, जाने लिखमी रो अवतारोरे माजी ॥ ११ ॥ माजी ऊंची बैसें गादीरे, माजी सात पोतानी दादी रे। माजी दया धरम री नेमी रे, जिन जाया अर्जुन जीमोरे माजी ॥ १२ ॥ माजी परमाद मे नही पेसेरे, माजी सामाईक लेई बैसेरे। माजी बोल चरचा चीतारे

रे ॥ १३ ॥ माजी पड़िकमणो सुध जोवेरे, माजी अतिचार आलोवेरे । माजी हरी काय सब त्यागी रे, माजी जिन धर्मरी वड़ी रागी रे ॥ १४ ॥ माजी सुध सरधा पाईरे, माजी सबसे इधकी वाईरे. माजी पाछली रातरी जागेरे, तुमे सुनज्यो बाई नाईरे माजी । जिन सुकरत करसे एसरे, तेतो भव सागर थी तरसी रे ॥ १५ ॥ इति मांजी रास सम्पूर्णम्

॥ अथ चन्दन मलया गिरी वारता ॥

(दोहा)

कहां चन्दन मलया गिरी कहां सायर कहां नीर।
ज्युं ज्युं पडी अवस्था त्यु त्युं सहे सरीर १ ॥

स्वस्ति श्री विक्रम पुरे प्रणमी श्री जगदीश तन मन जीवन सुख-करण पूरण जगत जगीश २ ॥ वर दायक वर सरसती मति विस्तारण मात प्रणमी मन धर मोदसों हरण विघन सिघात ॥ ३ ॥ मम उपगारी परम गुरु गुण आकर दातार वन्दी ताके चरण जुग भद्रसेन मुनि सार ॥ ४

कहां चन्दन कहां मलया गिरी कहां सायर कहां नीर। कहीये तांकी वारता सुनीयो सब बड़ बीर ५॥ नगर मनोहर कुशुम पुर तिन भुवन विख्यात बाग बावड़ीयां है वोहत, सबे सुरग पुरी हे भ्रान्त ६॥ बसे विचक्षण लोक सब भोगी बसे जे ठयल, ठोर२ गावत हंसत खेलत करतज सयल॥ ७॥ शीतल जल सरोवर भरे करत मधुप झणकार। पनघट पानी भरणकुं लाखुं वहृत पनीहार॥ ८ गढ़ मठ मन्दिर ओर सब सब जैनका प्रासाद। फरकत ध्वजा मानुं सिखर करत गगनन सुं बाद ९॥ पवन वेग जित पवन जित पवन जिय चलति पञ्चगति धार। तरण तेजु तीखे तुरी करत हणण हङ्कार॥ १०॥ राजत है राजा तिहां चन्दन चन्द समान। न्याय वन्त नृप रामसो रूप रतन गुण खान॥ ११॥ तासुं प्रिया मलया गिरी शीलवन्ती शिर मोर। रूप वन्ती रति अपछरा औंन मैंनकी कोर॥ १२॥ मृग नयनी चन्द्रानना पिक वेनी मृदु गात। तनु चमकत घन दामनी उज्वल चन्द्रिका भांत॥ १३॥ अलवेली अलवेल गति काम कनक मद वेल। जानेके रति पति खेलकु

बिरच बनवायुं खेल॥ १४॥ प्रेम सरस जीनी रहत अपने पियाको सङ्ग। उदय अस्त जाने नही करत केली रति अङ्ग॥ १५॥ मालती फुल मलया गिरी पीउ उत्तम मकरन्द। मगन रहत भोगी भंवर चन्दन चतुर नरिन्द॥ १६॥ तसु सुत सायर नीर दोउं तुल नत्र चन्द दिनेश। मान हुई सरग वरज्या, गङ्गा ततु जग घेस॥ १७॥ इति श्री चंदन मलया गिरी बारता प्रथम कलिका० १॥ इक दिन चन्दन महल मंहि पोढ्यो थो निस चैन॰ प्रगट होय कुल देवता आय कह्यो हित वैन॥ १८॥ अरे हो चन्दन जागिहो कहि सूतो नहि मात। कहो क्या आज्ञा होत है आप कहो हित बात॥ १९॥ सुदेवी उवाच०) चन्दन तुम्ह जीव कष्ट है दोई सुत स्त्रीया समेत। सावधान तुम्ह करणको हुं आई इह हेत॥ २०॥ सुनत वेगी चिन्ता घड़ी अति अकुलांणो राउ। चन्दन सिरिओ कष्टकों पड्यो अचिंत्यो आउ॥ २१॥ (चन्दन उवाच० राजा चन्दन दीन हुई विनो करी ग्रहि पाय। कहि विध वूटीस मात जी सो कबु हेत वताय २२॥ फीर बोली कुल देवता तो जे दुरिय विनास

राज रिद्धि सुख छांड़के जे नजिहो वनवास ॥ २३ राजा मन्त्रि पूछ सब उठाइ प्रीयाने जाय। सूते बाल जगायके लीये गलेसें लगाय ॥ २४ ॥ राजा राणी निशिह नरी करि जीउ सुं इकरतार। अपने मन्दिर महिल जन छोड़ चले निरधार ॥ २५ ॥ रात बहुत बालक रोवत पावत नाहि न बाट। सुते इमकी उठले तलन न बिछावन खाट २६ ॥ प्रह फाटी परगटी नया मोरे माड्या सोर। बन २ चिरिया चह चही चकवा करत हिव कोर २७ ॥ तिहां पन्थ नव्यारे पड़े जिहां सहाई नाग कहां निकसें अब कहां बसें कितहुं न पायो थाग २८ ॥ भ्रमत २ आपद सहित दुख देखतही वस करम। आये च्यारुं कनक पुर कुशल खेम जिन धरम ॥ २९ ॥ तहां एक मसन्द जायके रहे छोर सकल मदमान' टहल दई तन धामकी सीर लीवी चाढ सुजान ॥ ३० ॥ देव सेव चन्दन करत राणी मञ्जल थाल। देखा हो गत करमकी गउ चरावत बाल ॥ ३१ ॥ इकदिन निज पिया कुं पूछ कर पाय पियाको बैन। जङ्गल चली मलया गिरी कोमल कठीया लेन ॥ ३२ ॥ बीन २ बन लकड़ी कीयो

जारठ्यो निज मथ, ले आई मलया गिरी सौदागर के सङ्ग ॥ ३३ ॥ पाकी जङ्गल लकड़ी अरू सुकी द्रुम कार । ले हो वीरा लकड़ी ठाढ़ी करत पुकार ॥ ३४ या कोयल कहु की किहां किस दरखत किस डाल सोदागर आयो निकस, ख्याली देखत ख्याल ॥ ३५ तेसैं जी मलया गिरी नागर चतुर सुजान । लेहु वीरा लकड़ी बोली मधुरी वाण ॥ ३६ ॥ मोर टे रसी ले गइ सरल सुहानो साद । मानु गिरधर लालकी वृज वंशीको नाद ॥ ३७ ॥ वंशी कौन वजाय है खवर करो किंहि ठोर । मदके माते बोल है किस वन कोइल मोर ॥ ३८ ॥ लागी हो तन तीर सी किधौं करवल की धार । काढ़ करेजो ले गई सौदागर को सार ॥ ३९ ॥ प्रगटी वेदन विरहकी मदन मरोस्यो गात । सौदागर को भुल गई सब सोदन की वात ॥ ४० ॥ अरु हो वंनशी कौन ही वजाइ है ना कोयल ना मोर । कोइ कहत है कठीयार ड़ी साहव चितकी चोर ॥ ४१ ॥ माहरी यासो क्या कहत है इह नही है साची वात । ऐसी कोउ न बोल है माहरी हुंनकी जात ॥ ४२ ॥ रुप रेख गुण आगली लक्षित सुगति मृदु हास । ऐसी

तैसी राखिये, आंखन हुंके पास ॥ ४३ ॥ चित चट पट लागी सुनत मुरि२ निरखत रुप । कठी यारी के दरसकी देखनकी रुइ चूप ॥ ४४ ॥ जावो मेरे यार तुम लेवो ताको बुलाय। राखेगो कोउ अवर जन बिचहीसे बिटासाय ॥ ४५ ॥ चाकर बन्दे हुकम के हुकम चढ़ायो सीस । सोदागर के आदमी धाए दश वीश ॥ ४६ ॥ री कठीयारी सुनत हें वेगि जारोटो ल्याव । साहिब तोकुं टेरहे उर होरमत जांह ॥ ४७ ॥ चलि आइ मलया गिरी सोदागर के सङ्ग । म्हार जरोगो युं कह्यो श्री रामजी सत्य ॥ ४८ ॥ (अथ आपदा वर्णनं०) वांहे बिलीये काच की अरु पीतरको पग वार। कर दोउं कङ्कन लाख के गळमे पोलन को हार ॥ ४९ ॥ कानन वीरुवा काचकी आनन उपम उपम चन्द । पहिरण चोसी मणीयन जग मणीण बिम्ब मन्द ॥ ५० ॥ पाउ पायल जरथकी तरु आका अणवट्ट । कांसीकी जे हरति हर वर वाजणी सुघट्ट ॥ ५१ ॥ मगन होय गयो रूपमे रङ्ग लागो चित चोल । सोदागर वोल्यो तवे अदभुत बोल अमोल ॥ ५२ ॥ आवो सुन्दर गुण गहो वैसो यो तुम नाम । हमकुं कहीये आपना

बाप दादाको नाम ॥ ५३ ॥ कौन जातके तुम कौन हो बसते हो किहुं देश । नीके मानस देखहो यो तुम कैसा वेस ॥ ५४ ॥ तव बोली मलया गिरी सुन सोदागर सेख । हम शिर अैसे दुखके लिखे विधाता लेख ॥ ५५ ॥ दुइ करि हरि पूजे नही वर तुलसी दल पान । नजन नज्यो न गुसाइयां ताके फल दुख जान ॥ ५६ ॥ वहोत नांत सेवै वहुत पट मएडप के देव । साहिव सिरजन हारकी पूरी नकरी सेव ॥ ५७ ॥ दुखीयां मानस जग नस्यो गये केते दुख रोइ । अब फिरि कोउ देखिहै तो हमसे दुखीय न कोइ ॥ ५८ ॥ नाम हमारे दुखीयन कौन जात कुल ठोर । हम साहिब के चोर है तुम्ह जानोगे कछु ओर ॥ ५९ ॥ इहां तुमकुं आये सुने कनक सहरमे अज्ञ । मै कठीयारी काठ को आई बेचन कज्ज ॥ ६० ॥ आये सो कीनी भली खरे हमारे भाग । हम सब लीनी लकड़ी जो चाहे सो मांग ॥ ६१ ॥ प्रीति क्रियाना ढोयके गांठ हिरदाकि खोल । करि कछु सोदा प्रेमका कही कछु सुरति का मोल ॥ ६२ ॥ (राजारी राणी वाक्यं०) सूरत मोल न समझुं प्रीत न

ज़ानु तेम। हम कठिया वेची वहुत कवहुं न बेचा प्रेम ॥६३॥ जान देहुं अवके समै प्रेम प्रतीत की बात। कितीयेक कठीया मारिहैं टके पॉचके सात ॥६४॥ साहिब बेगी दिवाइये ढीलन को नही काम। हम घर खाव्यो खाइये गांठ न दमरी दाम ॥६५॥ सोदागर कीं उ दीन्हे तबे गणि कठियन के दाम। कठियारी आशीस दे भलो करो तुहि राम ॥६६॥ (सोदागर उवाच०) री कठि यारी सुनतहै इहुड़े रोइ हुं ठोर। वहुत भरोठो ध्याइहै मति किहुं फिरीयोन उर ॥६७॥ लोभाणी मलया गिरी भोरी भोरें भाउ। दिनकी कठिया मारिहै उठ फिर देखत दाउ ॥६८॥ इक दिन साथ चलाय सब आप रह्यो रस हेत। दाम काज मलया गिरी आई कृत्त सङ्केत ॥६९॥ साहिव दमरे दिजीये तुम्ह पे रहे उधार। मसकल तोपे मांगिहै रोक पइसे च्यार ॥७०॥ पिउ२ करत मलया गिरी अरु भारत ड्ग दोउ नीर। घाल बहिलमे ले गयो सोदागर बेपीर ॥७१॥ पीउ विछुरत भ्रग ना मिलत नीद उचिट गई नास। सिद्ध वुध सुरत सब गई, गई भूख गई प्यास ॥७२

चन्दन विन मलया गिरी दिन २ सूकत जान। ज्युं जोगीसर जोगमे लीन रहे इक तान ॥ ७३ सुन्दर सोवत रातकुं ठतीया पर करि लाय। हृदय कमल चन्दन वसे कवहुं निकसन जाय ॥ ७४ ॥ चन्दन विन जे मलया गिरी, कैसें धरे ज धीर। झुर २ सुन्दर आपना पंञ्जार कीयो शरीर ॥ ७५ सोदागर उवाच०) री कठियारी क्या झूरहै करि इह वर मोय। पान फुल दिचं राखस्युं सुखनी सुन्दर तोय ॥ ७६ ॥ (राणी वाक्यं०) मरि हुं जरहुं जीवतें अवर तजुं हुं प्राण। इणभव चन्दन पिउ विना शिर न धरुंगी आण ॥ ७७ ॥ जिहि मुख रुचि अमृत विष क्युं पीजीये जो लख लागे भूख। तिन मुख विष क्यों पीजीये श्चाख्यो रस पीयूष ॥ ७८ ॥ इणि नयने सङ्कल्प कीये तिण मुख पीउं कोस। प्रीतम चन्दन ज्युं वीजो करुं तो हम पीवें कोस ॥ ७९ ॥ जिहां रङ्ग रस प्रीय कों निरख्यो चन्दन पीव। जिहां रङ्ग ठेरन निरख हुं जो कोउ हम वै जीव ॥ ८० ॥ अगनि साज जरवो जलो जलो ज विषको पान। शील खण्डनो ना भलो ना कुछ शील समान ॥ ८१ ॥ अहो वीर

मोहि छोड़िदे कहत न पावे अन्त । अपनो शील न खएड्डो कोन कोप्यो है चिर तन्त ॥ ७२ ॥ हिव राजा वर्नण०) गली २ देव फिस्यो ढुढ़ीर सब बन राय । पाई कहु न मलया गिरी रचि पचि बैठो आय ॥ ७३ ॥ चन्दन कुं मलया गिरी थी सुख दुखको ठाम । देव बिछोहा पारके कोन अधरम कीयो काम ॥ ७४ ॥ (इति चन्दन मलया गिरी वारता या द्वितीय कलिका०) बिलकत सायर नीर दोउं अरु पुछित विल बिललात । आज अजुहन आवही तात हमारी मात ॥ ७५ ॥ पूत तुम्ह मईया आतुहै धीरे रहो टुक बैर । सायर नीर दोउं खड़े तिहां रहे मातकुं हेर ॥ ७६ ॥ कैसें सायर नीर दोउं निरख रहे शृङ्गार । जैसें बरषा रुत समै चात्रक चोंच ल्ये पसार ॥ ७७ ॥ अरी हो मईया परी छोर सकल जञ्जाल । बेर कलेवा की जई करण हमारी सार ॥ ७८ ॥ मईया मईया करत है सादन वेरी मईया । बाठरु केसें जीवे गईया बिन दईया ॥ ७९ ॥ इक दुख त्रियके बिरहको देखत निज नैन । अरु सालत ते हृदयन से बालक मुखके बैन ॥ ८० ॥ रहि न सकत राजा-

तिहां सालति त्रिय अहि गए । करि कन्धे सुत ले चले चतुर समयं को जान ॥ ८१ ॥ इक त्रियके बिरह को देखत निज नयनाह । अरु साल हृदय मे बालक मुख बयनाह ॥ ८२ ॥ बहोत जूम अव गाह हीके आयो इक बन मज्भ । बहोत नदी अस वह रालही तिहां उतरणको नही हैय सज्भ ॥ ८३ तब पार उतारें नीरकुं पेठो सायर लेन. नदी बुहायो गयो साथ न सम्बल न सेन ॥ ८४ ॥ कहां चन्दन कहां मलया गिरी कहां सायर कहां नीर । ज्युं २ पड़े अवस्था त्युं २ सहे शरीर ॥ ८५ ॥ इति श्री. चन्दन मलया गिरी बारता त्रितिय कलिका० ३ ।

इक कलिया पटियन पायके बिलग्यो बॉह पसार । राजा चन्दन कुशल स्युं करम धस्यो ले पार ॥ १ ॥ ता तटि गढे आनन्द पुर एक नगर बिश्राम । राजा चन्दन पथिक ज्युं उतस्यो एकन धाम ॥ २ ॥ ता घर घरणी अति निपुण रसक ठ बीली बेन । अङ्ग २ जोबन नवल यरक रह्यो है फेन ॥ ३ ॥ चन्दन आवत देखके उठ दियो सन-मान । उतरो अपने जो धाम हुं हम तुम है पिहचान

४ ॥ जरि पानी झारी दइ अरु दॅातनकी दइ फार प्रेम निजर निरखत खरी मुखते घुघट काढ़ ॥ ५ कहोने अपने हृदयकी हमकु खरो विचार । कहां सो आयेहो वहुर कहां कुं चलन हार ॥ ६ ॥ कहा कहु तुमसें सुन्दर ना कछु कहनेकी बात । सुन्दर पूछो क्या कहुं टुटे तरवर बर पात ॥ ७ ॥ हमसों जले जो पंखीयन जिसका जङ्गल वास । इकठे मिलि चूनहि चुगे पलक न ठंके पास ॥ ८ ॥ हम सुं ते वन मृग जले दिन २ वन विचरन्त । रात २ मिल आपनी सुख दुख कथा करन्त ॥ ९ ॥ जैसी हमकुं रात है तैसाही दिन जाइ । जोगी जोगी कछु नही कस्यो बिजोगी माइ ॥ १० ॥ जोर नही जगदीस सैं नही करम सों जोर । किसकी जोड़ी जोरि है किसकी देतहै तोड़ ॥ ११ ॥ इकसठ रुप विलोकिकै अरु बिरही जन जान । सुन्दर मदना- तुर जई बोली तज कुल मान ॥ १२ ॥ तुम पर- देशी लोग हो कैंन किसीके हाथ । जो रहिस्यो तो जनम लग हम तुम्ह एकी साथ ॥ १३ ॥ चन्दन बोल्यो सुनतही सुन्दर कौन विचार । हम तुम जुरि है साथ कों शिर साधत करतार ॥ १४ ॥ बात

जइह है एसे हलकी जो तुम्ह जोरो जीव। तो
तवही ले अपनो मारुंगी निज पीव ॥ १५ ॥ त्रिया
विसाशन मत को करो त्रिया किसीकी नाहि।
जिन निज पीउकों बोलनो दीया ज करदम माहि
१६ ॥ वात सुनतही पापकी थरहर कम्पो अङ्ग।
विरत त्रियाकुं पायके राजा भयो विरङ्ग ॥ १७ ॥
चकिता चेकृश बहु भयो रह्यो चन्दन रैण। पोह
निकस्यो उह धामतें राम २ कर सुख दैण ॥ १८
चल्यो चन्दन पहियज्यो भजि साहस बर वीर।
मानहुं दुख निवाणतें निकस्यों बाहन तीर ॥ १९
दृष्टि परी चम्पक पुरी दीस न लागो भाए। प्रिय
सङ्गम सूचक भये सुख सम्पत्तिके सेण ॥ २० ॥
चन्दन वन्दें सुकुन सब निहुर २ चिहुं ओर। करि
प्रणाम कीवी विनती अरु विनती करत कर दोउ
जोड़ ॥ २१ ॥ जङ्गल जीव तुम जीव हुं तुम जग
मेटन दुख। प्राण प्रियासुं जब मिले तो हूं पाउंगा
लख ॥ २२ ॥ उपवन कों सनमुख भयो आवत देख
नरिन्द। बोल२ आशीस दें मार२ खग वृन्द ॥
२३ ॥ सूतो सरवर पाल परि चन्द जपत अनन्त
आय रह्यो है निकटही आपदही को अन्त ॥ २४

अब उह नयरी उह सनै कौन भेयो विरतन्त। राजा मूवो अपुत्रीसो दिरव्यन पञ्च मकन्त॥ २५॥ आये सरवर पालि परि जिहां सूतौ थो राउ पञ्च दिव्य शिर लगनमें परगट भयो सुभाउ॥ २६॥ गय गाज्यो हय हणहण्यो गज शीर ढाल्यो नीर। दीजै चामर वालका धर्यो छत्र शीर धीर २७॥ जाग्यो चन्दन चमकिकै प्रगट्यो पुन्य पंडुर कुआर कुम्भ न ज्यो चढ्यो ज्युं उदयाचल सूर॥ २८॥ वाजा वाजे हरपके गाजे गुहिरङ्ग नीर। मानहु भादव मेहकी घटा उमन्की भर नीर॥ २९॥ वेदीयन अरु वन्दीयन रच २ गुण अनहद उची कर भुजा दाहणी उचरे जय २ शब्द॥ ३० गृह २ द्वारें गली २ सजन वसन धर प्रीत। गावत लागी कुलवधु मिलि मङ्गलके गीत॥ ३१॥ गावत तान अनुप स्वर वजावत वंशी वीण। नृत्यत अति नव नायका घुमत रसलय लीण॥ ३२॥ चन्दन परजा परिवार सों वीकृत चिहु दिस चौर। देखत शोभा नगरकी पैठो गढकी ओर॥ ३३॥ करि २ सुगंता आंझरी हलि २ उमङ्ग उछाह। विविध वधायो नागरी चन्दन मलया नाह॥ ३४॥ चन्दनें

बैठो तखति सिर कीनो परजा उद्दार । बागा सबही पहरायके करे सबही मनुहार ॥ ३५ ॥ चन्दनकी डुहाइ फिरी देश २ पुर गाम । बागो फेस्यो सुजसको प्रगट्यो चिहुं चक नाम ॥ ३६ इति चन्दन मलया गिरी बारता चतुर्थ कलिका सम्पुर्णम् ॥ ७ ॥

हिवे राजा बिन मलया गिरी बिन सायर बिन नीर । सब डुख सुख याद हुए चढ़ी सवाइ पीर ॥ ३७ ॥ तिय जन परजन सुजन जन कवि जन कीने खवास । चन्दन बिन हुंनको चढ़े ज्युं अवीरके पास ॥ ३८ ॥ जइया कुंन गत होयगी उहकी सिरजन हार । एक धस्यो उह तीर पै एक धस्यो उह पार ॥ ३९ ॥ मुई न जानु जीवती छोड़ी थी निरधार । उह अवस्था सुख डुखकी कोन करेगो सार ॥ ४० ॥ प्रिया पियारे बोली बिन खरे डुखारे प्रान । चन्दन अङ्ग न लगिहै पांन पांन पर ध्यान ४१ ॥ न जानुं कोंन दिस रहन है कोंन जांत किहि रूप । कहां करुं जावुं किहां युं चिन्ते निसिदिन भूप ॥ ४२ गाथा० ॥ मडुर सुं रेन झरन्तो चकोर दिठी सुतिमेसो चन्दो । हंसोजम सर सरीयं

समरे मणिस्सरो रम्मं ॥ ४३ ॥ अब सुत सायर नीरकुं कोन भयो बिरतन्त । सुनीयो छोगो कान्ह है बिछुरण जोर सम्बन्ध ॥ ४४ ॥ अब आयो इक सारथ जहां देखे चित अनुकूल । दुहुं तट दुइ बालक तिहां बांधे तरुके मूल ॥ ४४ ॥ सूरत मूरत नान्हड़ी कनक बरण मृदु गात, मुह कमला ना पुहप ज्युं आखीयां टपकत नीर । अपनी मइया कुं झूरत है ज्युं पञ्जरके पंखी कीर ॥ ४६ ॥ पाउ नकों पनही नही नही गातकुं चीर । नाच्यो नाटक देव जहां मानहु आप शरीर ॥ ४७ ॥ निरखी बालक दीनता सारथी देखी भयो दीन । अपने सुत करि कटिग्रहे सम्पत ज्युं जल मीन ॥ ४८ ॥ जब आये यौवन समै जुगल किशोर कुमार । काव न लागे सुभटजुं तव पाँचु हथीयार ॥ ४९ ॥ जिह के पुरुषा कारसों होत आनङ्क सहेच । जानन लागे कुमर सब ठल करिणके पर पञ्च ॥ ५० ॥ विनयवन्त बिद्या निपुन रूपवन्त गुण गेह । रहत परसपर नेह भरि एक जीव दोय देह ॥ ५१ ॥ एक समे मिलि चिन्तव्यो अवइसि माङ्गा सीख । अपनो खाव्यो खाइये लहीये करम परीख ॥ ५२ ॥ पढ़

प्रर आत्ता कीजीये सुश्ये टाक्ष पर्सार । जइया इन विधि पुरुषको रहत न पुरुषाकार ॥ ५३ ॥ एक सींह सा पुरस इयां हुइ एक सजाय । आन पराइ ना करे जो शीर तूटी जाय ॥ ५४ ॥ गाने वयुंइ ना रहे राज वीर्य रवि तेज । निकसे स्वारथ बाइ स्यों प्राइ विचा हित हेज ॥ ५५ ॥ चलि आये चरुपक पुरी जिहां पिताको राज । कोटवाल की चाकरी रहे ससूल सकाज ॥ ५६ ॥ सौदागर नी लइकने चलि आयो उह नयर । सङ्ग लीयो मलया गिरी रहत महलसे घेर ॥ ५७ ॥ जात २ की नो गई ले सोदागर पेस । राजा सुं सोदागर जाय लिख्यो बसियो हे उह देस ॥ ५८ ॥ देस २ परदेश की जो रसाल अनूप । मादि २ कछु मांहिहै अति ही रिझाणो भूप ॥ ५९ ॥ सोदागर सलाम करि इक दांइ निहियार । साहिब हुनकु दीजीये आपनें चोकीदार ॥ ६० ॥ कोटवाल कुं हुकम कर तबही चन्दन राय । कोटवाल ले सङ्ग दीये सायर नीर बुलाय ॥ ६१ ॥ कमर कटारी बॉकड़ी अरु बॉकी तरवार । आये सायर नीर दोउ कहत हुस्यार २ ॥ ६२ ॥ जागन पोहरो देतहे कांधे खेश समसेर ।

साथी सायर नीरको उठ बोले तिह बेर ॥ ६३ ॥
छिटक रह्यांहै चन्द्रमा हसत रहीहै रात । आज
कहो हो सुभट वर कतुक नवली बात ॥ ६४ ॥
बोले सायर नीर दोउ बातां जगमे होय । निज
पर बीती सब कहे अपनी बीती कहे सोय ॥ ६५
पर बीती तो बोहत ज कहे कहत जिहाँ तिहाँ
लोक । हमको कहीयो माड़के अपनी बीती होय
६६ ॥ कहाँ २ वे बन्धव बध्या सुबती जातही यांह
मा सोदागर ले गयो बाप रह्यो नदी मांह ॥ ६७
सूतीथी मलया गिरी सुन जागी उठि धाय ।
अङ्गज सायर नीरके लागे उरसों आय ॥ ६८ ॥
लागी बिरह जोगकी दुखनी सांझ बिहाल । सङ्गम
जल शीतल भयो मिटा सु बिठरे बाल ॥ ६९ ॥
अङ्गज बोले मातकुं सोय रहो अजा रात । टो
सोदागर रायपें न्याय करे सम्प्रात ॥ ७० ॥ बात
भई अब सायसे चल्यो हुहै जप जाप । मात बिछोही
बालकों मुख देख्याही को पाप ॥ ७१ ॥ सोदागर
मनमे लख्यो जो अब जीवते माल । नहिं तो रूव
मधाईये पांणी पहली पाल ॥ ७२ ॥ निकरयो पोह
पीछी नह जैरन भन्यो त्रिभार । सङ्ग लेह मलया-

गिरी पूंहच्यो राज डुवार ॥ ७३ ॥ खबर जाय दीवान वई लोकां राय हजूर । बूजो सोदागर कहाँ अदभुत वस्त असेस ॥ ७४ ॥ ले आगे मलया गिरी धरीय हेतु तुम्ह पेस ॥ ७५ ॥ न जानु इह पदमणी न जानु रति रम्न । मैतो पाई वन मझे ले ऊठी न जानु सम्न ॥ ७६ ॥ नयन नयनार जुं जुरतही त्रिय पिछाणी राय । पुलकन लागे अङ्ग सव हरख्यो दधन समाय ॥ ७७॥ राणी ले महला धरी चन्दन वसुधा नाथ । कहिहै कर्म विचारणा दीये कपोलन हाथ ॥ ७८ ॥ येतें सायर नीरजी कारण विरह जआल । आये चन्दन रायवें लागे करण पुकार ॥ ७९ ॥ महाराज चिरंजीव तुम्ह पूरण त्रिभुवन आस । मात हमारी दिराइये सोदा गरके पास ॥ ८० ॥ अङ्गज वाणी सुनतही प्रगट्यो नवल सनेह । चन्दन हग शीतल भई भई प्रफुलत देह ॥ ८१ ॥ राय लाय करि अंगुरी प्रेम रङ्ग जिय मान । जिहाँ थी जननी जनमकी खरे कीये तिहाँ आन ॥ ८२ ॥ जाय मिले सुत मातको वार वरस के अन्त । राय पियारे सुत लखे लख्यो न राम- महन्त ॥ ८३ ॥ राजा जाको भेद सब कह्यो सरुप

अमूल । राणी तिहाँ घुंघट कीयो मूर मूख के अनुकूल ॥ ७४ ॥ कुमर पिता पायन परे नार लख्यो उरिसङ्ग । असुअनकी धारा छुटी मातु न्हवरावै अङ्ग ॥ ७५ ॥ दुख गयो मन सुख भयो भागो बिरह बिजोग । राजा राणी सब मिल्या देखो करम संजोग ॥ ७६ ॥ राजा बोल्यो क्या करां सोदागरकुं दण्ड । छुटहै गुनहा रायके हम तुम प्रीत अखण्ड ॥ ७७ ॥ सोदागर छोड्यो तबे राय सुनाबत बेन । सपरिवार सुख भोगवे जान इन्द्रमइ अेन ॥ ७८ ॥ जाइ लई निज फुनि पुरी मिले सजन सब लोग । चन्द्रसेन कहै पुन्यतें भये वंछित भोग ॥ ७९ ॥ ❁ इति सम्पूर्णम् ❁ ॥

दोहा) चन्दन की चुटकि भलि, गाड़ा भला न काठ पण्डित तो एकी भला, मूरख भला न साठ ॥ १ ॥ नीच तणों नवि कीजे सङ्ग, जो कीजै तो होवै भङ्ग । हाथ अंगारो गहे जु कोय, के दाझै के कालो होय १॥ ओ हीयो होय हाथ, तो कुसंगी केता मिले । चंदन भुजङ्गा साथ, लाग न लागे किसनीया ॥ २ ॥ गोखा गण्डक गुलांम, बुचकारयां मांथे चड़े. ए कल्यां आवे कांम, नरमीं भली न नाथीया ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सती सुभद्रा चौपाई ॥

(दोहा) शिव दायक लायक सदा, कञ्चन वरण शरीर । सासय नायक शिवगति, नमो २ महावीर ॥ १ ॥ काम गवि कामति दीये, प्रौढ़ पयोहर च्यार । तिम जिन वाणी रस लीये, धर्म है चार प्रकार ॥ २ ॥ दान शील तप भावना, चारुं मुक्ति निदान । पिण इहां अधिक वखाणीये, शील रत्न परधान ॥ ३ ॥ शील सिरोमणी मुकुट सम पाओ निर अतिचार । वरणु शीलोपदेश श्री सुभद्रा अधिकार ॥ ४ ॥ ढाल० १ (कुंवर हाले एहनी०) चम्पा नगरी अति चंगी जी कांई सेठ वसे सुभद्र । मोरा लाल० । तस पुत्री है दीपती, जी कांई, सुभद्रा परिणामे भद्र ॥ १ मो० ॥ धन० २ सुभद्रा सती, साचो तेहनो शील । मो० । शील सुं देवता जी कांई, निरमल गङ्ग सलील ॥ २, मो० धन० ॥ सुन्दरी बेटी साहनी जी कांई परणी

मिथ्याती गेह । मो० । सासू फासु तेह थी जी। काई. घरमें मां धेख करेह ॥ ३ मो० ध० ॥ बसनो मिथ्याती घरें जी कॉई. पाले वो आचार । मो० । पय काँजी रखवालवी जी कॉई, एह खगो सुविचार ४ मो० ध० ॥ नरभव लाधो नीठसुं जी कॉई, पाम्यो आरज देस । मो० । उत्तम कुल इन्द्रि पाँचे जी कॉई. लम्बो आयु विसेष ॥ ५ मो० ध० ॥ देह नीरोगी सद्गुरु साधनी जी कॉई, सुनवो सरधा थाय । मो० । उद्यम कर करणी करें जी कॉई, जनम मरण मिट जाय ॥ ६ मो० ध० ॥ ए जोग. वाइ पामने जी कॉई, औहली गमे× गमार । मो० पिछताषो करसें पछे जी कॉई. जीतें हार जुवार ७ मो० ध० ॥ देव नमं अरिहन्त जी कॉई, गुरुते सूधा साध । मो० । धर्म केवली भाखीओ जी कॉई रत्न त्रयी ए लाभ ॥ ८ मो० ध० ॥ प्रातें पड़िकमणो करें जी कॉई, देव ध्यान दो पेहर । मो० । सन्ध्या सामायिक आचरें जी कॉई. सासु नणी लागें जेहर

× यषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञान न शील न गुणो न धर्म । ते मृत्यु लोके भुवि भार भूता, मनुष्य रूपेण मृगा श्चरन्ति ॥ १ ॥

ए मो० ध० ॥ (दोहा) सासू कहै रे सुलखणी, ए केहवो पाखण्ड । जेन फेन जाना नहीं, त्रिण सिरे छे मन ॥ १ ॥ गोपी वल्लभ गरुड़ ध्वज, हरि मुरारी देव । कुञ्ज नवन राधा रमण, तेहनी कर तुं सेव २ ॥ इण घर ए सोजे नहीं, नित तुं जपे जिनेश इण घर त्रिहुं रिख्या करें, ब्रह्मा त्रिणु महेश ॥ ३ परहो करी पारस प्रभु, भजले जग करतार । कुञ्ज विहारी सुं विहर, गिरधारी उरधार ॥ ४ ॥ एह वचन श्रवणे सुनी, सती विचारें चित्त । ए धर्म किहां इण जावने, जिम निरधनने वित्त ॥ ५ ॥ ढाल० २ चामड़ लीनी०) सुन सासड़ली जैन तणी जग कोन करेछे होड़ । पीये छासड़ली दधि तणो सुं जाने स्वाद निचोड़ ॥ जिन घर धनु हूँ सुरभी निहां आणे मोली कुन करची, किहां घृत रसने किहां चिरची ॥ १ सु० ॥ किहां आंधा किहां चसमीनो किहां कम्बल किहां पशमीनो, किहां गंयवर किहां ससलीनो ॥ २ सु० ॥ किहां सरव बने किहां मेरु, किहां साहुने बलि किहां हेरु, किहां रयनी किहां उजवेरु ॥ ३ सु० ॥ जे जगमे वस्तु श्री कारेंछे, ते हितकर माणी धारेंछे, सहू

जैन धर्मने छोरेंछे ॥ ४ सु० ॥ जे जिन नाम बिसारेंछे, ते अहिल जमारो हारेंछे. गोबरसे केसर सारेंछे ॥ ५ सु० ॥ जिहां दोष अढारें रहित देवा, नित करीयें गुरु निगरन्थ सेवा, जिहां जीव दया धर्म निज मेवा ॥ ६ सु० ॥ केई अन्य देव रमणी रसीया केई ममता जाल रहे फसीया, घणो राग द्वेषसे उलसीया ॥ ७ सु० ॥ (दोहा) वचन सुनी बहु घर तणा, सासु बोलें आन । रे कुल हीन कुलखणी, इम कां बिदें निकाम ॥ १ ॥ आदि युगादि निष्णु मन, जैनतो थयो अवार । पाणो दोड़े मोड़ पिण, पूगें नही असवार ॥ २ ॥ (ढाल० ३) सुन बहु बड़ली लाजलड़ी, तुज माहि न दीसे ज्ञान रती रही लाड़लड़ी नान्ह पणाथी नाम धरावें मनी. तुं जैन जती गुरु मानेछे, ते रहता मेले वानेछे, ते पाप करे बहु छानेछे ॥ १ सु० ॥ ते दूषन दोषें मुड़ा छे. ते भिक्षा जोगी जूडाछे रहे करमे कोढी कुंडाछे ॥ २ सु० ॥ ते भिक्षा ले घर अनजानी, नित पीना धोवनरो पाणी, तु आविका हुइ सुन वाणी ३ सु० ॥ तुं धरम कारण मुहु बांधेछे. पिण नयना नयनतो सांधेछे, सुं नचिन्ती परणे कांधेछे ॥ ४ –

तुं दीसें घड़को बोलीठे, वलि कुमद्दतनी टोली
तुं निज स्वारथ ने जोलीठे ॥ ५ सु० ॥ नणद कं
सुन भोजाई. किन कुगुरें तुझने भरमाई तूं ना
कड़े श्रापद श्राई ॥ ६ सु० ॥ खाली फोकट फु
राई, तुझ मातायें जर्णीस्युं खाई. फिर परणीरे
डुजी नाई ॥ ७ सु० ॥ (दोहा) सर्नी कहे सुजग
सुनो, जैन समो नहीं धर्म । जिन पाल्यां शिव
सुख लहै, तुटे श्राठुं कर्म ॥ १ ॥ चन्दन ठांडे
मक्षिका, रासज तजें निवात । दिनयर न घूदड़
तजें, तिणनो स्युं बिगड़ात ॥ २ ॥ सुनी बचन
सासु कहें, बेटाने समझाय । बहुयर घर वर जोगी
नहीं, धरम जुदो न खटाय ॥ ३ ॥ (ढाल० ४)
श्रैसी कलहे गारी. निज बेटाने बचन कही जर-
मावै । बसो मुझमुं न्यारी, ए हमना घर मांही
नाहि खटावे०) बहु नहीं है ए वाघो, इण तुझ
लिरिषो तो वर लाधो, हीरानें गल पत्थर बांध्यो
श्रै० ॥ ए सात कहे सतरे जोड़े, ए क्रोध करे कही
थे थोड़े, घड़े फूंठाने कोरा फोड़े ॥ श्रै० २ ॥ ए
निज इछायें रहे सूती, वलि बात बणावे ठे डुती
मोड़े कड़का दे निपूती ॥ श्रै० ३ ॥ तुं पद्मन

मुझ मीकरडो, यह लिखी तुझ तीकरको, किहां इस्सुनें किहां फरको ॥ चौ० ४ ॥ (दोहा) मानानो जंगीयो, कन्त लड़े दिन रात। सती विचारे चित्तमे, जेही मात तेही जात ॥ १ ॥ पर्व दिवस पोषध दिने, सासु जलावे काम। सती सील सन्तोष में नाणे कर्म विराम ॥ २ ॥ निर्धन कवियन न गाथि पति, कठिन चन्द्रमा वङ्क। हिम हिमाल खारो उदधि, सतीयें चढ़े कलङ्क ॥ ३ ॥ (ढाल० ५ सुर सागर वह दे जस्यो एदेशी०) एक दिवस एकज पर्णो हांकि (जतियण चम्पा नगर मझार० अति मह धारी आवीया। ज०। होके जित्या काम विकार ॥ १ ॥ (धन २ ते मुनि होके जति-यण जिण कलपी अणगार०) तप जप कर काया कर्मो होके। ज०। निर्मम निर अहङ्कार, सील सरोवर झूलता होके। ज०। षटकाया आधार २ ध० ॥ क्रोध मान माया नही होके। ज०। लोभरणो नही रख, साकर टाकर सम गिणे होके ज०। सजीया सत्र पर पक्ष ॥ ३ ध० ॥ रिपे आचारें उजला होके। ज०। पुष्कर पत्र अलेप, निरञ्जण मुनि संखज्यु होके। ज०। चेतन जेम अलेप ॥ ४

ध० ॥ संघ दिहाड़ै विहरतां होके । ज० । क्षुधा टालन दे.प. साधो जाड़ो दै देहनं होके । ज० । अधवाधे सन्ताप ॥ ५ ध० ॥ सिंघादिक सुं टलैं नहीं होके । ज० । रूपैं नहीं जी दयाल, खूनैं काटो कांकरो होके । ज० । न करैं सार सम्भाल ६ ध० ॥ जग टाल्या जत २ तणा होके । ज० । मेरु जिम्या धीर. पड्यो आंखमे तिणखलो होके । ज० नयन करैं तिण नीर ॥ ७ ध० ॥ ऊच नीच मझिम कुलैं होके । ज० । जमता घर २ वार. सुजड्या घर आवोया होके । ज० । सासू हूप अपार ॥ ८ ध० सनी देख साधु जणी होके । ज० । कहैं धन दिहाड़ो आज, मुक्त माझा पाता ढल्या होके । ज० सिध्या वंछित काज ॥ ९ ध० ॥ अमनादिक आदर घणे होके । ज० । विहगावें सुध भाव, सासू ढल तार्कै म्वड़ी होके । ज० । जिम मूसक ने बिलाव १० ध० ॥ वेहरंता निजरे पड्यां होके । ज० । मुनी हृष्टी नो सल्ल, मुनी दुख पावै अति घणो होके । ज० । ए कांहुं मर्दी पल्ल ॥ ११ ध० ॥ ज्यां सुख पावे संजमी होके । ज० । अय संजम नी वृद्धि धर्म साहज करतां थका होके । ज० । अष्ट सिद्धि

नव सिद्धि ॥ १२ ६० ॥ (दोहा) नीची तरे कीरी मई, फेरी जिह्वा फेर. टीकी मुनी मस्तक दर्गी, सती न दीठी नेह ॥ १ ॥ साधु परीसा हटा वीयो, सती न दोसण काय । सासू कहैरी सांपणी ए वहुयर तुं जोय ॥ २ ॥ साधु चल्या बाजार में लोकां दीठी तह । साधु सिर बिंदी चढ़ी बड़ी हुमावण एह ॥ ३ ॥ सुजड़ा थाजें सती, तिण वीधा ए काम । नरनें नवी खबरां पड़ै नारी नेणा* विराम ॥ ४ ॥ मोर मधुरता मत तजै. गिलें सपुत्रो साप । काम वसे आतुर थई न गिणै पुण्यनें पाप ॥ ५ ॥ सुणी वचन लोकां तणां, सासु सुसरा कन्त । सतीनें निज्रठी घणी टीकीने धिर. तन्त ॥ ६ ॥ राज लगे चाबी हसें ए नाता तुण नार । थोड़ा सुखनें कारणें गई जमारो हार ॥ ७ निसर मांहरा घर थकी, वहु दिन राख्यो मान । बादगु सोनो सोवनो जे तोड़न लागो कान ॥ ८ ढाल० ६ सोजवियां एहनी०) सती मन चिन्ते

---

* अश्वप्लुत माधव गर्जनञ्च, स्त्रीणां चरित्रं दुरपत्व भाग्य । अवर्षणवा प्यति वर्पणञ्च, देवा न जाना ति कुतो मनुष्यः ॥ १ ॥

इण निरतन्ते, ठत्र एक ने आज। जो हुं कक्ष न उतरे, लोक न पतरे, खाऊँ न जित रे नाज॥ जिन धर्म हराई, एह बुराई, कर आई सन्सार (१ सेवो मन सुद्धे पाप निरुद्धे सील बड़ो आधार०) में पाप न कीधो, दोस न दीधो, लीधो नहीं कांई चोरी। जे सील सछाई, देव बड़ाई हरसै अघाई मोरी॥ इम दिन त्रिहुँ मिता, थइ सचिन्ता, प्रगट्यो देव उदार॥ २ से०॥ तुं वयुं सिदावे, सुर गुण गावे, सब थस आं तोरे। चम्पा कर दहण, तुझ दुख कहण रोस चड्यो मन मोरे॥ तव सती कहै जाई, एह बुराई, दुख दाई है अपार॥ ३ से०॥ तुम्ह एह जलाइ, तेज बताइ, निज घर जाइ बैठो। जिन धर्म बड़ाइ, सील दुहाई, चित लाई कर सेवो॥ एह सुण बाता, देवत जातां जड़ीया पञ्च दुवार ४ से०॥ चम्पा ना स्वामी, अति बहु नामी, अरि मर्दन भूपाल। नृप हुकम ज चल्ले, द्वारज खुल्ले, रथन हल्ले माल॥ तव नृप कहै पायक, सेना नायक ल्यावो गज श्रंगार॥ ५ से०॥ ५ ...

नर मण खावे, दांत धजावें जोड़ी। स...

चुह्यो सरकावे, तेहने जावें कीड़ी

सरीयो, नृप मन झरीयो, बोलावें सिरदार ॥ ६ से० मानी मछराला, हाथ चडाला, डुंदाला वर बीर। चढ़ २ कर घोड़े, मूछ मरोड़े, तोड़े तरकस तीर॥ एहवा पाखरीया, रोसें भरीया, पिण इण आगे सब छार ॥ ७ से० ॥ बोले बहुनट्टा, चारण भट्टा पेट पलट्टा सूर। मोड़ी ए सांकल, जिम अहि कड़ल, सङ्कट करयो दूर॥ सबही मन योसे, होठ मसोसे, जीसै नावे तार ॥ ८ से० ॥ नृप कहे मद छकी, देवत चकी, मेरी करीये सेव। एहवे आकासे, देव प्रकाशे, खुल जासे तत सेव॥ कर काचो तन्तन, चालनी वन्धन, कूप थकी ग्रहे वार ॥ ए से० ॥ (दोहा) छांटे सीलवती तिणे, जलकर च्यारूं द्वार। तो उघड़े चम्पा पुरी, तुम हम एह करार ॥ १ ॥ सुण वाणी हरख्यो नृपति, मुक राणी सब कोय। सील सयाणी छे सही, करूं पारख्या जोय ॥ २ ॥ कुवे कांठे राणीयै, चालणी बाध्यो तार। उपाड़तां उछल पड़ी, चालनी जल कूप मझार ॥ ३ ॥ राणी मुरझाणी थई, वांणी वदै न कोय। स्याणी आणीनें करो, कहानी जुगो जुग होय ॥ ४ ॥ पुरमें पड़ह बजाड़ीयो, साहमी नावे

नारि। जिम कोरव पाठा धस्या देषी देव मुरा।
५ ॥ फिरतो फिरतो आवीयो, सुभद्रा घर वार
पग लागी सासू तपै, सती ज थई तिवार ॥ ६
ढाल० ३ एक दिवस लङ्कापति एहनी०) सास
कहै सुनरी बहु, सील वस्यो तुक तन बहु तन
बहु०। आगे लजायां हम नणीयं ॥ १ ॥ तेहनं
विकथा नहीं मिटी, अब तुं दरबारे चढ़ी घा०
केहो सुजस तुं खाटसें ए ॥ २ ॥ राणी जोर न
चालीयो, नृप सिर नीचो घालीयो घा०। तुज
मन हूंस अवे घणी ए ॥ ३ ॥ नव कुली नाग न
फुण करै, गोह जिको लुकती फिरै लु०। काकिड़ो
पच्चरङ्ग करै ए ॥ ४ ॥ आ अब गरज किसी सरै,
पाणी तुकसु न निसरे नि०। लोक हसाई छै
घणी ए ॥ ५ ॥ सासू वयण काने सुनी, बहु ने
समता अति घणी अ०। ततखिण तिन पड़ हो
ठव्यो ए ॥ ६ ॥ कूवा कांठें आवही, सहु मण
अचिरज पावही पा०। अरिमर्दन राजा नम्यो ए
७ ॥ कहै नृप इणहीज टाकड़े, जिन धर्म नी
खबरां पड़े ख०। सती एक नगरी सहु ए ॥ ८ ॥
काचें तांतण चालणी, उं रासी कर चालणी चा०

जांणे वज्र तणी कड़ी ए ॥ ९ ॥ सील सहाई देवता, ऊभा तेह अदेवता अ० । काम करण उंता चलाए ॥ १० ॥ चालणी एते जल जस्यो, सती ये कर ऊंचो कस्यो ड० । जल काढ्यो कूवा थकी ए ॥ ११ ॥ सहू कोइ धन २ उचरे, सती तिहांथी सञ्चरे सं० । आवी पोलि जिहां जड़ी ए ॥ १२ ॥ जल कर लेई छिड़कीयो, ततखिण चुल्यो खड़कीयो ख० । पहिली पोल तो ऊघड़ीयो ॥ १३ ॥ इम दूजी तिजी पोली, जल छांटीनें इण खोलीयो इ० चोथी पोलि आवी चली ए ॥ १४ ॥ हुइ आकासे सुर वाणी, ए रहवा द्यो सह नाणी स० । अन्य सती ए उघाड़ सें ए ॥ १५ ॥ सहु कोइ मन अचिरज थया, सती तणा गुण सन्थुया सं० । धन २ सील सिरोमणी ए ॥ १६ ॥ पुष्प वृष्टि तव सुर करें आव्या तिनही ज अवसरे आ० । सुभद्रा जस उचरे ए ॥ १७ ॥ कहैं देवत राजा भणी, सती सि दावी अतिघणी अ० । तीन दिवस नो पारणो ए ॥ १८ ॥ सीलें सङ्कट सब टल्या, सासु सुसरो तव वटा स० । कन्त नम्यो कर जोड़ने ए ॥ १९ ए अत्र गुण सब माहरा, खमीये सील

व० । राजादिक सगला कहे ए ॥ २० ॥ सुजनें रान न रीस जी, अद्यो संयम सु जगीसें जी सु० । कर्म निकाचित तोड़ीया ए ॥ २१ ॥ सीलें सङ्कट सहु टलें, अणचिन्ता सज्जन मिले स० । जयकारी नाजै सहु ए ॥२२॥ डायण सायण भूतडा, जक्ष राक्षस वे किन्नरा कि० । पाय नमी सेवा करै ए २३ ॥ धूर सती ब्राह्मी सुन्दरी, ऋषभ देवनी किंकरी दि० । चन्दन बाला चिरञ्जीवो ए ॥ २४ राज मती मोटी सती, द्रुपद सुता मृघावती मृ० नेड़ानी साते सती ए ॥ २५ ॥ कोसल्या सुलसा-वती, सीता कीर्त्ति निरमली नि० । अगनि राशि जल कर दीयो ए ॥ २६ ॥ पाण्डव मातानें सिवा सती गुण गावो सुख लहिवा सु० । मूल मन्त्र ए धर्मनो ए ॥ २७ ॥ कलशः) गुण गणा लंकृत, हरण दुरमति श्री आचार्य सामजी । तस चरण सेवा तारा चन्दजी, करी अति अभिराम जी ॥ अनोप चन्द जी तास शिष्या, आदरी आनन्द धरी । तस चरण सेवक विनय चन्दे, ढाल सातु ए करी १ ॥ इति श्री सती सुजडा चौपाई सम्पूर्णम् ॥

॥ ❀ अथ धर्मचरित्र लिख्यते ❀ ॥

॥ दोहा ॥

गुरु सम जग दाता नही, गुरु बिन ज्ञान न होय।
ऋद्धि सिद्धि वंछित फले, पाप पङ्क सवि धोय ॥ १
अन्धा मारग चालतां, सुझे नही गमार।
आसा रख गुरु नाम की, उतर जाय भव पार ॥ २
गुरु वाणी विसतार है, किहा लगि करुं वखान।
मन वच काया वस करो, चेतन होय कल्याण ॥ ३
दान सील तप भावना, इह च्यारो जग सार।
इह कथा धर्म राय की, सुणी उ हृदय विचार ॥ ४

ढाल०) जग जीवन जग वालहो (एदेशी०
चम्पा नगर सुहामणि, किहां लगी कहुं विस्तार० लालरे० १ चम्पा०॥ तिहां एक मुनीवर आविऊ, अवध ज्ञान भरपूर। लालरे०। एकाकी विचरें सदा, तप जप में जिम सूर ॥ लालरे० २ चम्पा० नाम विमलेस्वर चारणो, आये नगर मझार० ८

मास खमन को पारणै लेय विसुद्ध आहार॥ लालरे० ३ चं० ॥ इम मुनी विचरे गोचरी, सुद्ध आहारने काज। लालरे०। श्रावक कहैं सुनो साधुजी, कृपा करो ऋषिराज ॥ लालरे० ४ चं० ॥ चोमासो प्रभु किजिये, जीव दया मनलाय। लालरे०। हित जाण मुनीस्वर रहा, चेतन सिव सुख पाय॥ लालरे० ५ चं०

॥ दोहा ॥

चोमासो मुनिवर रह्या, श्रावक सुने बखान।
धरम देसना दे मुनी, धर्म ते ऊपजे ग्यान ॥ ६
धरम समो नहि वालहा, धरम समो नहि मीत।
धरम करो रे प्राणियां, कटे मरण की भीत ॥ ७

ढाल०) धर्म दया करो प्राणीया०) उत्तम नर भव पायेरे, दान सीयल तप भावना। कीजे मन वच कायेरे ॥ ८ ध० ॥ काम क्रोध मद परि हरी समता मनमे आनी रे। इह सन्सार में कोइ न अपना, इह बुं चित्तमें जानी रे ॥ ९ ध० ॥ मात पिता सुत कामणी, स्वारथ के सब कोइरे। जा दिन आयु पुरी भइ, राख न सके कोइरे ॥ ध० १० ॥ ईन्द्र नरिन्द्र सवि गया, जे उपजे ते जासी रे। पाप करे नरकादिक पामें, धर्म करै

शिव वासी रे ॥ ११ ध० ॥ देव धरम गुरु सेविये जाते होय छुटकारोरे। मन वच्न काय थिर के राखो चेतन होय जव पारोरे ॥ १२ ध० ॥

॥ दोहा ॥

देइ देसना मुनी रह्यो, चतुर सुन्यो दे कान।
श्रावक एक कुष्टी हतो, ते बोल्यो धरि ध्यान ॥ १३
करजोरे श्रावक कहै, अरज सुनो मुनि राज।
कुष्टी अङ्ग मेरो भयो, ताको करो उपाय ॥ १४

ढाल०) कपुर हुइ अति० (एदेशी०) वलतो तव मुनिवर कहे रे, सुन श्रावक मन लाय। कर्म जो कोई करेरे, भोगे विन किम जायरे ॥ प्राणी कर्म करे ते होय०) जोर न चाले कोयरे. प्राणी कर्म करे ते होय० १५ ॥ सुख दुख सव कर्म करे रे। हियड़े विमासी जोयरे ॥ प्रा० १६ ॥ श्रावक वेकर जोरि ने रे, भाषे वचन रसाल। श्री गुरु किरपा करोरे, तो जावे सकल जञ्जाल रे ॥ प्रा० १७ ॥ तुम जग जीवन जग धनी रे, तुम जग तारन हार। मेहर करो सेवक भणी रे, तो नही लागे वाररे ॥ प्रा० १८ ॥ कुष्टी कहे प्रभु सांभलोरे, श्री गुरु गरिव निवाज। चेतन को

सुख ऊपजे रे, दया करो ऋषि राजरे ॥ प्रा० १९

॥ दोहा ॥

मुनी कहे सुन प्राणीया, इक उपाय है एह ।
तीन वस्तु जिन जीतिया, तासुं मिलाउ देह ॥ २०
कञ्चन काया होयगी, दूख जावै सब दूर ।
मन वच काया वस करो, सुख उपजे भर पूर ॥ २१

ढाल० (चौपाई) तव इह कुष्ट तुम्हारो जाय, कीजे श्रावक एक उपाय । तब श्रावक वन्दन कर चले, मारग जातां लोग सुं मिले ॥ २२ जासुं मिले सो दूर दूर करे, तब श्रावक पाछे को फिरे । फिर पाछे आयो मुनिवर कने, जासो मिले सो दूर कहे मने ॥ २३ ॥ मुनिवर कहे असो मत करे, तीन वस्तु जीतो सो हूं परे । उनसे जाय मिलो तुम आज, सफल होय सब तुमरो काज ॥ २४ ॥ तब कुष्टी पूछे, सीस नेवाय, कोन देस उनको मुनि राय । प्रभु नाम प्रकासो उनपे चलों, गुरु प्रताप जायके मिलों ॥ २५ ॥ मुनिवर बोले वचन हुलास, कासी देस है तिनको वास । धरम राय नाम मन भाव, मन वच काया वस कियो राव ॥ २६ ॥ (दोहा) सुनत वैन श्रावक

उठे, मिटेगो अङ्ग कलेस । दिन अष्ट मारग चले पहुंचि कासी देस ॥ २७ ॥ देख्यो नगर सोहावनो काहु न पूछ्यो बात । चहुंटा विच जब आवित, सूर्य अस्त भइ रात ॥ २८ ॥

ढाल०) सुन बहनी प्रीउड़ो परदेशी (एदेशी० आयो नगर विच श्रावक कोढ़ी, खाली हाट सोयो ओढ़ी०) थाको मगको निद्रा आई, सोय रहे हित लाइरे ॥ २९ आयो० ॥ मोह निद्रामें जे नर सोवे, धर्म तना फल खोवेरे । सोय रहे ते मूल गमावे, जागे शिव सुख पावेरे ॥ ३० आयो० ॥ इहां श्रावक सुतो निचन्तो, धर्म सदा गुणवन्तेरे धर्म राय दुकानमे रहतो, उदर पीर दुख सहतोरे ॥ ३१ आयो० ॥ पहर एक रैन जब आई, धर्म दुकाने बहाइरे । आय निज मन्दिर में सुतो दीपक जिहां नवि हुतोरे ॥ ३२ आ० ॥ पीर घणी सुत्यो धर्म ज्ञानी, स्त्री भेद न जानी रे। आगे अचरिज होय घनेरो, चेतन चेत सवेरोरे ॥३३ आ०॥

॥ दोहा ॥

रूपवती तिय रायकी, आन पुरुष सुं प्यार ।
अर्ध रात जब वितिया, तब आयो ते जार ॥ ३४-

रङ्ग रस कहे बातड़ी, सुन प्यारी हित जान।
गृह मेरे इक काज है, तुरत देउं रति दान ॥ ३५

ढाल०) वंछित पूरण आदि नमो: (एदेशी०
प्रेम विलूधी जे नारी, निपट कपट ते विभचारी.
थिर नही चित अपनी राखे, मिथ्या वचन सदा
भाखे ॥ ३६ ॥ जार लेई मन्दिर चाली, निज
प्रीतम सूतो नहि भाली । पलङ्ग विठाइ मद
माती, इक पाया पड़ियो पिय छाती ॥ ३७ ॥
बांका सेज भई ज्यारें, पच्छर तीन धर्यो त्यां रे.
ते ऊपर बैठ रमे नारी, पर पुरुष सुं करे यारी ॥
३८ ॥ कोई नही जाने मन जाने, पिण पाप रहे
नही छाने । पिय हिऊ पर रख पाया, आन पुरुष
सुं करे माया ॥ ३९ ॥ धरम राय सुतो देखे, सुन्न
ध्यान में मौन भये पेखे । इक तो पीर उदर भारी
दूजे हिय विच पलिङ्कका भारी ॥ ४० ॥ निज पतनी
कूकर्म करे, धर्म देखे मनमां न धरे । एतो कर्म
किया पावे, विन भोगे कहो किम जावे ॥ ४१ ॥
कोऊको दोस नहीं दीजै, झुठी माया कोन पतीजै
तन धन जोवन नही आपना, च्यार दिनाको सब
सुपना ॥ ४२ ॥ मात पिता भगनी भाई, बेटा

वेटी कुटम्ब लोगाई । स्वारथ की इह सब नाता
प्रान चले कोई सङ्ग नही जाता ॥ ४३ ॥ धरम
देख पाये शिक्षा, प्रात होय तव ल्यूं दिक्षा ।
मन मनमें चाव धरम लावे, उदर पीर दूख दुर
पलावे ॥ ४४ ॥ सुख उपजो दुख सब जागा,
निश्चै दिक्षा मन लागा । मन वच काया-वस
कीन्हा, चेतन मनसुं दिक्षा लीन्हा ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

धरम राय सुन ध्यानमें, वहु विध करे विचार ।
प्रात होय दिक्षा लेउं, व्रत पालुं निरधार ॥ ४६
मन वच काया वस कियो, धरम राय सुन ध्यान ।
आगे अचरज अवर है, श्रोता सुनो दे कान ॥ ४७

॥ सोरठ ॥

पहर पाछली रात जार उठे तिय पासते, रस
क्रीड़ा कर जात । पहुंचे मन्दिर आपने ॥ ४८ ॥
कामनी रही जो सोय । पिय हीय उपर पलङ्ग धर
प्रातसमे जब होय ॥ उठी त्रिया सुख सेजते ॥ ४९

॥ दोहा ॥

नयन खोल देखे त्रिया, पिय उर पलङ्ग पाय । थर
हर कम्पित भई अति, मुख ते बोलन आय ॥ ५०

(ढाल०) ललनाकी (एदेशी) धरम रहे सुन ध्यानमे, नहि बोलें मुख वात. ललना। मन्दिर ते आये वारणे, कुष्टी लगाड्यो गात ललना॥ ५१ ध०॥ धरम राय कहे तेह सुं, किम लागे तुम अङ्ग ललना। बात कहो हिय खोलके, बांधो तुम तन रङ्ग ललना॥ ५२ ध०॥ कुष्टी कहैं प्रभु सांभलो, तुम सम जग नही कोय ललना। कुष्ट रोग गयो माहरो, तुम तन जल सुं धोय ललना॥ ५३ ध० धन धन साधु मुनिस्वरा, जिन दिन्ही उपदेश ललना। आज मिली सयल वातड़ी, मेट्यो अङ्ग कलेश ललना॥ ५४ ध०॥ धरम कहैं मुनि किहां वसे, दरशन कीजे जाय ललना। श्रावक कहैं चम्पा नगरी, तिहां आये मुनिराय ललना॥ ५५ ध०॥ सर्व वात कहि खोलके, मुनि राख्यो मोहि लाज ललना। चेतन को सुख ऊपजे, महर कियो जिन राज ललना॥ ५६ ध०॥ (दोहा) सब विरतन्त श्रेणीक कह्यो, धर्म सुण्यो चितलाय। धरम कथा ईह जानिये, चेतन कहे बनाय॥ ५७॥ धर्म-राय जब भाखीया, सुन श्रावक मोहि वात। दिक्षा, लेउं मुनिवर कने, हूं चालों तुम साथ॥ ५८॥

ढाल० (चौपाईकी) कहें श्रावक चलो तुम आज, सुफल होय सब तुमरो काज । चम्पा नगर चले तब राय, अष्टदिनामे पहुंचें आय ॥ ५९ ॥ जिहां बैठे सुख उपजे सार, जिन कलपी जिनवर सम जान, धरम देख बांधो सुज ग्यान ॥ ६० ॥ हाथ जोड़ कहें धर्मराय, चारित्र पालो मन वच-काय । कृपा करो सेवक पर आज, दिक्षा दीजै श्री मुनिराज ॥ ६१ ॥ नाव चारित्री मुनिवर जान दिक्षा दीऊ मन सुद्ध आन । चारित्र ले धर्म किरिया करें, तप जप संजम व्रत आदरे ॥ ६२ ॥ थिति पूरो तब अनशण कियो, मुकत पन्थको मारग लियो । ऐसो समझ पालो जिन धर्म, कहे चेतन लागे नहि कर्म ॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥

धर्म दया नहि छाड़िये, धर्म सदा सुख देत ।
धरम करे जे प्राणिया, ते पावे शिव खेत ॥ ६४
कथा सरस धर्म रायको, पूरो भयो सुजान ।
पढ़े सुने जे भावसुं, ताको होय कल्याण ॥ ६५
सम्बत् अठारे तीससे, आसो सुदि सुज जान ।
ग्यारस दिन रविवारको, चेतन कियो बखान ॥ ६६

नगर अहमदा बादमे, कथा कियो सुखसार ।
जै नर चित दे सांभले, ते उतरे भव पार ॥ ६७ ॥
हाथ जोड़ शिरनायके, चेतन लागे पाय ।
भूल चूक जो बातमे, ते क्षम जो मुनिराज ॥ ६७

॥ इति श्री धर्म चरित्र सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ डोकरीनी बात ॥

एकदिन राजा भोजने माघ पण्डित, सहेर से कोस दोय माथे एक बागछे । तठे गया, जाय नें पाछा आपरे सहेर आवताथा ; सो आतां मारग भूला । तरे राजा भोज कहे वा लागोके, सुनो माघजी ? आपे मारग भूला, तरे माघजी पण्डित कहे, सुनो प्रथवीनाथ एक डोकरी गो हुरो खेत रखवाले छे ; सो उनने पूछने ठीक करो । तरे दोउ असवार चाल्या, डोकरी कने आया ; आयने बेहुज जना राम राम कीधो । डोकरी

कहे, आवो वीरां राम राम। तरे डोकरी बोली, वीरां थे कुनछो ? बाई मेतो छां बटाऊ। बटाऊतो दोय, तिके किसा ? ऐकतो सूरज, बीजा चंद्रमा वीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई मेतो छा प्राहुना प्राहुना तो दोय, तिका किसा ? एकतो धन, बीजो जोवन ; थे किसा प्राहुना ? वीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई मेतो छां राजा। राजा तो दोय तिका किसा ? एकतो चन्द्र राजा, बीजो जम राजा ; थे किसा राजा। वीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई मेतो छां साधु। साधु तो दोय, तिके किसा ? एकतो सीलवन्त, बीजो संतोषी ; वीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई मेतो छां ऊजला. ऊजलातो दोय, तिके किसा ? एकतो साधु; बीजा पाणी ; थे किसा ऊजला ? वीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई मेतो छां परदेशी। परदेशी तो दोय तिके किसा ? एकतो जीव, बीजो पवन ; थे किसा परदेशी ? वीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई मेतो छां गरीब। गरीबतो दोय, तिके किसा ? एकतो गलीरो जायो, बीजो भक्त जन ; थे किसा गरीब ? वीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई मेतो छां धवला.

धवलातो दोय, तिके किसा ? एकतो बलद, बीजो कपास ; थे किसा धवला ? वीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई मेतो डां चतुर । चतुर तो दोय, तिके किसा ? एकतो अन्न, बीजो पाणी ; थे किसा चतुर ? वीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई मेतो डां हारिया । हारिया तो दोय, तिके किसा ? एकतो बेटी दीधो तिको हारिया, बीजो माथे देणो तिको हारिया । तरे कोकरी कहेवा लागी, तूतो राजा भोज छे, ओ माघ पण्डित छे । इतनि बात पूछने कोकरीने, नमस्कार करीने, असवार होई ; आपरे सहेर आया ॥ ईति कोकरीनी वात सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ सारबोल सिझाय लिख्यते ॥

चौपाई) भगवति भारती चरण नमेवी, सद्गुरु नाम सदा समरेवी । बोलीस चोपई ऐ आचार; जोई लेजो जाण विचार ॥ १ ॥ पण्डित तेजे नाणे गर्व, ज्ञानी तेजे ज्ञाने सर्व । तपसी तेजे

न धरे क्रोध, करम आठ जीपे तेजोध ॥ २ ॥
उत्तम तेजे बोले न्याय, धर्म तेजे मनमे जाय।
ठाकुर तेजे पाले वाच, सदगुरु तेजे जापे साच ॥
३ ॥ गिरुच तेजे गुणे आगलो, स्त्री परिहार करे
ते भलो। मेलो तेजे निन्दा करे, पापी तेजे हिंसा
आचरे ॥ ४ ॥ माता तेजे जिनवर तणी, कीरति
तेजे बीजे सुणी। लबधि तेजे गौतम गण धार,
बुद्धि अधिकी अभय कुमार ॥ ५ ॥ श्रावक तेजे
लहे नव तत्व; कायर तेजे मूके सत्व। मन्त्रवरो
ते श्रीनवकार, देववरो ते मुगति दातार ॥ ६ ॥
पदवी ते तीरथंकर तणी, मति तेजे उपजे आपणी
समकित तेजे साचु गमें, मिथ्याति तेजे कु लोकमे
७ ॥ मोटो तेजे जाने पर पीड़, धनवन्त तेजे भांजे
भीड़। मनवशि जाने ते बलवन्त, आलस थी
अधिको पुन्यवन्त ॥ ८ ॥ कामी नर ते कहिए
अन्ध, मोह जाल ते मोटी फन्द। दारिद्री तेजे
धर्म हीण, दुरगति सारु लेते दीण ॥ ९ ॥ आज्ञा
ते जिहां बोली दया, मुनिवर तेजे पाले क्रिया।
सन्तोखी तेजे सुखिया थया, दुखिया तेजे लोभे
ग्रह्या ॥ १० ॥ नारी तेजे होवे सती, दरशन ते

उघो मुह पती । राग द्वेष टाले ते यती, सुधर्म जाने ते जिन मती ॥ ११ ॥ काया तेजे शील पवित्र माया रहित होय ते मित्र । वडपणि पाले तेजे पुत्र धरम हाणि पाड़े ते सत्रु ॥ १२ ॥ बयरागी तेजे विरमे राग, तारू ते भव तरे अथाग । रौरव नरक तणो ए माग, भाग हणी जे मरणे जाग ॥ १३ ॥ देह माहि सारी जीह, धरम थाये ते लेखे दीह । रसमाहि उपसम रस लीह, थुलभद्र मुनि माहे सिंह ॥ १४ ॥ साचुं जपे ते जिन नु नाम, योगी तेजे जीपे काम । न्यायवन्त कहिये ते राम, जिन धरमी वसे ते गाम ॥ १५ ॥ एह बोल बोल्या मै खरा, सार न थी एह थी उपरा । कहे पण्डित लखमी कल्लोल, धरम रङ्ग मन धरजो चोल ॥ १६ इति श्री सारबोल सम्पूर्णम् ॥ ॐ ॥



॥ अथ सोले सती सिझाय ॥

श्री आदिनाथ आदे जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये ए । परभात उठीने मङ्गलिक

कामे, सोले सती नाम लीजिये ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी भरतणी बेनड़ी ए, घट घट व्यापक अक्षर रूप, सोले सती माहे जे वडि ए ॥ २ ॥ बाहुबल भगनी सतीय शीरोमणि सुन्दरी नामे ऋषभ सुता ए। अङ्ग सरूपी त्रिभुवन माहे, जेह अनोपम गुण जुता ए ॥ ३ ॥ चन्दन बाला बालपना थी, सीलवती सुद्ध श्राविका ए। उड़द ने बाकुले वीर प्रतिलाभी, केवल लहि व्रत भाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुवा धारणि नन्दनि राजमति नेम वल्लभा ए। योवन वेसे कामनी जीतो, सञ्जम लेई डुरलभा ए ॥ ५ ॥ पांच भरतारी पाण्डव नारी, द्रुपद तनया वखाणिये ए। एकसो आठे चीर पूराणा, सील महिमा तसु जाणि ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृप नि नारि निरूपम, कौशल्या कुल चन्द्रिका ए। सील सलूणी राम जनेता, पुन्य तणी परि नालिका ए ॥ ७ ॥ कोसंबि ठामे सतानिक नामे, राज करे रङ्ग राजियो ए। तस घर घरणी मृगावति सती, सुर भवने जस गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची सील नि, काची राची नहि बिषिया रसे ए। मुखड़ा जोता

मूरख कुं पण्डित करे, गुरु किरपा जब होय ॥ सा० १ गि० ॥ गुरु देवी गुरु देवता, गुरु सुं पावै ज्ञान सा० । अहनिश गुरुपद सेवीये, जगमें वाधे वान सा० २ गि० ॥ गुरु बिन धरम न सूझती, गुरु बतावे धर्म । सा० । जीवा जीव विचारना, गुरु सुं पावै मर्म ॥ सा० ३ गि० ॥ सूत्र अरथ सिद्धांत णी, आवै गुरु परसाद । सा० । गीतारथ सब जग कहै, न करे वाद विवाद ॥ सा० ४ गि० ॥ अवगुण परिहर गुन महो, सुगुरु सिख मनलाय । सा० बलहारी गुरुदेव की, चेतन लागे पाय ॥ सा० ५ गि० ॥ इति सिझाय ॥ ॥ ॥

ढाल०) वंछित पूरण० (एदेशी०) घटके पट खोलो प्राणी, मत बिसरो गुरुकी वाणी । घर घर मत डोलो भाइ, निज आतम सुं परचे लाइ ॥ १ तुझ में है तेरा प्यारा, तुं मत जाने कहुं है न्यारा. ज्ञान दृष्ट सु दिल देखो, आप में आप सदा पेखो २ ॥ पर सङ्गत की छोड़ो माया, फिर नही पावै मनुष्य काया । मात पिता सुत निज दारा, सब है स्वारथ के परिवारा ॥ ३ ॥ धन जौवन थिर नहि

रहे, जिम कर अंजुली नीर बहे। वहते जल कर धो लीजे, गिरुवा गुरू की सेवा किजे ॥ ४ ॥ तप जप की महिमा भारी, मत बिसरो कोइ नर नारी आतम सिख्या जो जन गावै, सुद्ध चेतना अविचल पावै ॥ ५ ॥ इति सिझाय ॥

ढाल०) आषाढ़ भूत अणगार जी रे (एदेशी० टेक न छोड़ो पुन्य की रे, निरखो आप सरूप रे। चतुर नर०) पर सङ्गत नहि कीजिये (होलाल०) निज घटके पट खोलियै रे, देखो अगम अनुपरे चतुर नर० ॥ परम पुरुप परमातमा होलाल ॥ १ पञ्च महाव्रत आदरे, पालो निरती चाररे। च०। जीव दया चित धारियै होलाल। असत वचन नवि बोलिये रे, लागे दोप अपार। च०। अदत्ता दान चोरी तजो होलाल ॥ २॥ विषय विकार कुं जीतियै रे, पञ्च इन्द्री वस आनरे। च०। परिग्रह ममता छोड़ियै होलाल; पञ्च सुमत मनमें धरोरे, तीन गुपत तूं जानरे। च०। अष्ट प्रवचन माता जली होलाल ॥ ३॥ तप जप सञ्जम साधनारे, कीजे मन वच कायरे। च०। सुद्ध होय निज

आतमा होलाल ; पावे शिव सुख सास्वता रे, जब जय के डुख जाय रे । च० । आनन्द मङ्गल उपजे होलाल ॥ ४ ॥ इह शिक्षा नर मानियें रे, सदगुरू कहे समझाय रे । च० । चेतनता सुध कीजिये होलाल ; धरम करो नर नारीया रे, डुख सङ्कट सवि जाय रे । च० । सुख सम्पति विलसे सदा होलाल ॥ इति सिझाय ॥

ढाल०) सनेहि की (देशी०) ठीक रखो मन आपनो, चञ्चल चित्त निवार० (सनेही०) ध्यान करो निज आतमा, एक सरूप विचार ॥ स० १ ठी० ॥ बीजी डुविधा छोड़ियै, तीनो धरम संभाल च्यार कषाय ने परिहरो, पांच विषय सुख टाल ॥ स० २ ठी० ॥ षटकाया प्रति पालिये, सुक्षम बादर जांन । स० । सात बिसन को त्यागिये, जगमे बाधे बान ॥ स० ३ ठी० ॥ आठो मद नवि राखिये, लागे दोष अपार । स० । नवमे सीयल सुहामणी, ते पालो नरनार ॥ स० ४ ठी० ॥ दसमी धर्म सदा धरो, साधन की वह रीत । स० । चेतनता सुद्ध होयके, अविचल कीजे प्रीत ॥ स० ५ ठी० ॥ इति

ढाल०) ढएकून ऋषने वन्दना हुं वारी (एदेशी० कोलो मति सन्सार में हुं वारी०) थिर मन कीजै ध्यानरे हुंवारी लाल० ॥ १ को० ॥ मात पिता सुत बन्धवा हुवारी, वनीता सहु परिवार रे । हुंवा० । ए सवि स्वारथी जानियै हुंवारी, कोइ न चाले लाररे ॥ हुं० २ को० ॥ तन धन जोवन कारिमा हुं० । सन्ध्या रङ्ग समानरे । हुं० । क्षिन इकने फिर जायगा । हुं० । समको आप सुजानरे ॥ हुं० ३ को० तप जप सञ्जम कीजिये । हुं० । नेम धरम चित लायरे । हुं० । तो सुख पावे आतमा । हुं० । जनम मरन दुख जायरे ॥ हुं० ४ को० ॥ फिर नहि जग में अवतरे । हुं० । पावे अविचल धामरे । हुं० । चेतनता सुध होय के । हुं० । सारे आतम कामरे हुं० ५ को० ॥ इति सिझाय ॥

ढाल०) धनरा ढोला (एदेशी०) ढाल धरम कर लीजियेरे, खड्ग क्षमा चित धार । मन ना मान्या । मोह वली जग जानियेरे०) तिण सु तुं मति हार ॥ गुन ना गेहा० १ ॥ हँस करे जुद्ध मोहसुं रे, जीतो तो सुख होय । म० । जो हारे

जवमे पड़ेरे, ते जाने सहु कोय ॥ गु० २ ॥ पुन्य उदै जिव जीतियोरे जागे मोह मिथ्यात । म० । मोक्ष नगर मे आयकेरे, जीते वैरी सात ॥ गु० ३ केवल पदवी सम्पजै रे, विलसे सुख अपार । म० निरंजय रूप सुहामणो रे, शिव सुन्दरी घरनार गु० ४॥ अविचल लीला तेहसुं रे, जीव करै दिन रैन । म० । चेतन चेतो आपको रे, तो पावै सुख चैन ॥ गु० ५ ॥ इति सिझाय ॥

ढाल०) निरखि २ तुझ विम्बने (एदेशी०) तन धन जोवन कारिमा, जातन लागे वार ॥ जविक जन सांजलो०) अनादि काल जमतो फिरे, नहि पावै जव पार ॥ ज० १ ॥ पूरव पुन्य उदे जई, पाये मानव देह । ज० । उत्तम जैन धरम लही, परमातम सुं नेह ॥ ज० २ ॥ अविचल आतम सुख मिले. उपजे अनुजव ज्ञान । ज० । केवल महिमा सुर करे, जिन कीन्ही निज ध्यान ॥ ज० ३ ॥ धरम सुकल दोय ध्यान में, सुख पावे जव पार । ज० । आरित रौद्र परिहरो लो छुटे सन्सार ॥ ज० ४ ॥ सु गुरु सीख स्रवमे

करो, नर नारी चित लाय । भ० । चेतन ता सुध कीजिये, भव भवके दुख जाय ॥ भ० ५ ॥ इति

(ढाल०) राम चन्द्रके बाग, चम्पा मौर रह्यो री (एदेशी०) थिर मन कीजै ध्यान, चल चित दूर करौ री । तो पावै सुख पूर, माया ममता हरो रि ॥ १ ॥ ईह सन्सार असार, मत कोइ आय परोरी । दान सीयल तप भाव निश्चै चित्त धरो री ॥ २ ॥ निज घट निरखो आप, आतम राम खरो री । परमातम सुं प्रीत, कर मन काज सरो री ॥ ३ ॥ कीज्यो धरम विचार, पुन्य सुं पाप टरो री । दुरमत कीजै दुर, विषय सुं आप करो री ॥ ४ ॥ ईह शिक्षा मन धार, घट विच ज्ञान भरो री । चेतन ता कर सुद्ध भव जल आप तरो री ॥ ५ ॥ इति सिझाय ॥ ० ॥ ० ॥

ढाल०) रसीया की (देशी०) दान सीयल तप भाव सदा धरी०) जिन सुं पावै हो पार सुज्ञांनी० १ दा० ॥ मोह ममता नहि राखियै, चाखियै समता हो नीर । सु० । चञ्चल चपला चिन

सुख कारी रे०) इह भव जस कीरत बधेरे लोक पर भव मुक्त मझार ॥ सु० १ बो ॥ अमृत बानि सुहामणी रे लाल, कोकिल कन्ठ रसाल । सु० । भाषा सुद्ध कर आपनी रे लाल, पञ्च महा व्रत पाल ॥ सु० २ बो० ॥ क्रोध मान माया तजो रे लाल, लोभ लहर कर दूर । सु० । देव धरम गुरु सेवियेरे लाख, ऊपजै सुख भर पूर ॥ सु० ३ बो० राग द्वेष नहि कीजियेरे लाल, एक सरूप निहार सु० । निज घटके पट खोलियैरे लाल, कीजै ज्ञान विचार ॥ सु० ४ बो० ॥ आतम ध्यान सदा सुखी रे लाल. परमातम गुन जान ॥ सु० ५ बो० ॥ इति

ढाल०) कपूर होय अति उजलो (एदेशी० भव भव भमतो जीवड़ो रे, लाख चौरासी रुप । जो नहि चेतै आपकुँ रे, तो पावै भव कूप रे ॥ प्राणी० १ ॥ भुले मत सन्सार (आंकणी०) दान सीयल तप भावना रे, धरजो चित्त मझार । ध्यान धरो निज आतमा रे, मन्त्र जपो नवकार रे ॥ प्रा० २ ॥ क्रोध मान माया तजो रे, लोभ लहर कर डुर । पञ्च महाव्रत पालिये रे, उपजे सुख भर

पूर रे ॥ प्रा० ३ ॥ जीव दया गुन बेलड़ी रे, असत्य छादत्त त्याग । मैथुन परिग्रह छोड़िये रे मनमे राखै वैराग रे ॥ प्रा० ४ ॥ सु गुरु सीख सुन लीजिये रे, कीजै आतम काम । चेतन ता सुद्ध होयके रे, पाये अविचल धाम रे ॥ प्रा० ॥ इति

ढाल०) सुन बहनी पीवड़ो परदेशी (एदेशी मोह ममता तजि दीजे प्राणी, समता निज मन आणिरे । इस पुदगल को सङ्ग न कीजे, निज घट आतम लीजैरे ॥ १ मो० ॥ परवश जीव रहे लपटाइ, सुख दुख सहतो भाईरे । तन धन यौवन माल खजाना, सन्धा रङ्ग समझानारे ॥ २ मो० ॥ मात पिता सुत बन्धु दारा, स्वारथ के परिवारारे । इह सब तेरा काम न आवे, आप किया फल पावेरे ३ मो० ॥ दान सीयल तप भावना धारो, धर्म दया मत हारोरे । निश्चल ध्यान एकमन राखो, आगम बचन भाखोरे ॥ ४ मो० ॥ सुगुरु सीख मानो नर नारी, तो पावै गत सारीरे । चेतनता सुध आप सम्भालो । पञ्च महाव्रत पालोरे ॥ ५ मो० ॥ इति

ढाल०) कोइलो परवत धुंधलोरे लो (एदेशी योग जतन चित धारियेरे लो, दूर टले दुख दर्दरे ज्ञविक जन०) जप तप संजम साधनारे लो, कीजै मन आनन्दरे ॥ ज० १ यो० ॥ पंच महाव्रत पालियेरे लो, साधुको आचाररे। ज०। पहिलो व्रत सुद्ध कीजियेरे लो, जीवा जीव निहाररे ॥ ज० २ यो० ॥ खटकाया प्रति पालियेरे लो, सुक्षम बादर जानरे। ज०। मृखा वाद नही बोलियेरे लो, मत ले अवत्ता दानरे ॥ ज० ३ यो ॥ चौथो व्रत चोखो करोरे लो, पंच विषय सुख त्यागरे। ज०। परिग्रह ममता छोड़ियेरे लो, लोभ लहर सुं जागरे ॥ ज० ४ यो० ॥ समतामे सुख सास्वतारे लो, पावै अविचल धामरे। ज०। चेतनता सुद्ध होयकेरे लो, सारे आतम कामरे ॥ ज० ५ यो० ॥ इति

ढाल०) गिरुवारे गुण तुम तणो (एदेशी) राग द्वेष नहि कीजियै, परिहर ममता मायारे। समता सुं कर प्रीतड़ी, वसिकर मन वच कायारे १ रा० ॥ तन धन यौवन कारिमा, कर अंजलि जिम पाणी रे। खिण इकमे खिर जायगा, पुदगल

थिर नहि जानो रे ॥ रा० २ ॥ मात पिता सुत बन्धवा घर घरनि परिवारारे । ए सब स्वारथ के सगे, कोइ न जासी लारारे ॥ रा० ३ ॥ जग बीच तेरा कोइ नही, तू एकाकी अकेला रे । जो अबके नही चेतिया, फिर न मिले इह वेलारे ॥ रा० ४ ॥ लोरा सुनी नर नारीयां, सु गुरु वचन इम भाखे रे । चेतनता सुद्ध होयके, राग द्वेष नहि राखेरे ॥ रा० ५ ॥

ढाल०) थारा मेहलां उपर मेह झबुके बीजली होलाल (ए देशी०) लोभ दूर कर दुर, परिग्रह छोड़िये होलाल । तो पावे शिव वास करम बन्ध तोड़िये होलाल ॥ क० १ ॥ लोभ से दुरगत जाय, जगतके प्राणियां होलाल । ज० । अति लोभे होय हान, सागर दत्त वाणिया होलाल सा० २ ॥ लोभ न कीजे लिगार, च्यार मा ते वड़ो होलाल । च्या० । पहुचे दसम गुण ठान, लोभ थी फिर पड़ी होलाल ॥ लो० ३ ॥ लोभ महा रिपु जान, मुकत मग रोकियो होलाल । मु० । लोभ तजे जे जीव, तिन्हे नवि टोकियां होलाल ॥ ति० ४ ॥ अविचल पावे धाम, सदा सुखसें रहे होलाल

स०। वाचक ऋद्धि विजय नो शिष्य, चेतन ईम कहै हो लाल ॥ चे० ५ ॥ इति सिझाय ॥

ढाल०) आठे ढाला की (देशी०) शत्रु मित्र समान. राग द्वेष मत आन (आठे ढाल०) धर्म दया चित राखिये जी, पञ्च महा व्रत धार ; पालो निरति चार । आठे० । असत वचन नवि भाषियैं जी ॥ १ ॥ चोरी अदत्ता दान. लोच तजो गुण खान । आठे० । विन दीधे लीजे नही जी, जो चाहे शिव धाम ; तो तजिये सुख वाम । आठे० । [illegible] नलो ना कही जी ॥ २ ॥ परिग्रह कीजे [illegible], सुख उपजे भरपूर । आठे० । तप जप सञ्जम [illegible] जी, काय सकत पचखान ; थिर मन [illegible] ध्यान । आठे० । समता निज मनमें धरो जी [illegible] मन वस आन. सुगुरु वचन सुन कान [illegible] आठे० । बोलिये बोल सुहावणो जी, पाये नर अवतार ; अबके तुं मत हार । आठे० । तो पावै मन [illegible] जी ॥ ४ ॥ ज्ञानी ज्ञान विचार, मत जरमे [illegible] । आठे० । तुजने [illegible] धणी जी, चेतन चेतो आर, मत करजो कोइ पार आठे० । सुख

सम्पति पावे घणो जी ॥ ५ ॥ इति सिझाय ॥

ढाल०) नदी जमुना के तीर उड़े दोय पंखिया पदेशी०) षटकाया प्रतिपाल दया चितमें धरो, सुक्षम बादर जान क्रिया व्रत आदरो । प्रथवी कायनो जीव जगतमें जानिये, अप तेऊ और वायु वनस्पति मानिये ॥ १ ॥ एकेन्द्री थावर जान चलन को सुध नहीं बिनो चौरिन्द्री पंच ए त्रस काया कही । जीव दया गुण वेल सदा मनमे रखो पंच महाव्रत पाल मुकत के सुख लखो ॥ २ ॥ झुठ न बोलिये वेन अदत्त न लिजीये, चोरीमें बहु पाप विषय नहि कीजिये । परिग्रह ममता छोड़ मुनि. समता गहो, निर दुखन ले आहार सञ्जम मे थिर रहो ॥ ३ ॥ मन वच काया सुद्ध करो व्रत पालना थिर मन कीजे ध्यान चपल चित टालना । इण करनी कर साध चले शिव धाम में, अविचल पावे वास परम पद नाम में ॥ ४ ॥ इह शिक्षा नर नार सुनो प्रति बोधना, कीजे आतम ज्ञान अभिन्तर साधना । पाये निज घट रूप सरूप सुहामणा, चेतन ता कर सुद्ध मिले मन भावना ॥ ५ ॥ इति

राजुल इकवीसी कहुं, सुणज्यो चित्त लगाय ॥ १
(चित चलीयो रहनेम नो०) देखी राजुल रुप।
दृष्टान्त देने राखीयो, पड़तो भव जल कूप ॥ २
(ढाल०) राजमती इम विनवै हो, मुनिवर मन चलीयो तु घेर०) थोड़ा सुखने कारने हो। मु०। क्युँ हारे नर भव फेर ॥ १ ॥ सुनलुं साधजी हो० मुनिवर मन चलियो तुं घेर। मु०। पञ्च महाव्रत आदर्या हो। मु०। मेरु जिनगे भार, वमीयागी पश्चा करोहो। मु०। धृग थारो अवतार ॥ सु० २ मु० चि० ॥ वैरागे मन वालने हो। मु०। लीधो सञ्जम भार, अब कायर होवे किसु हो। मु०। देख पराई नार ॥ सु० ३ मु० चि० ॥ राज पन्थ ने छोड़ नै हो। मु०। उजड़ मारग मत जाय, इमरत भोजन चाखनै हो। मु०। अब कूकस किम खाय ॥ सु० ४ मु० चि० ॥ गज असवारी छोड़ने हो। मु०। खर उपर मत बैस, सुरग तणा सुख पायने हो। मु०। पाता लां मत पैस ॥ सु० ५ ॥ चन्दन बाल कोयला करे हो। मु०। आंबो काट बबुल. कुंण बांधे घर आगणे हो। सु०। ज्यूं कांई थारो सूल ॥ सु० ६ ॥ घर घर फिरसी गोचरी हो

मु० । देखी स सुन्दर नार, इड नामा अपनी परे हो । मु० । फिरतां न लगसी बार ॥ सु० ७ ॥ वर्मी या नै थांडो मती हो । मु० । गन्धन कुलमलि होय, रतन चिन्तामण पायने हो । मु० । कांच माहे मत खोय ॥ सु० ८ ॥ कुल मोटा आंपा तणो हो । मु० । तिन साहमो तु जोय, काम जोगने तुं वाञ्छसी हो । मु० । जसो न केहसी कोय ॥ सु० ९ ॥ गोवाल चणखारी सारिखा हो । मु० । हमाल उठायो जार, बोझ मजुरी अरथीयो हो । मु० । नहीं माल सिरदार ॥ सु० १० ॥ घणो रुप नारी तणो । मु० । वस्त्र गहणा सार, देख देखने सी दावसी हो । मु० । जासी जमारो हार ॥ सु० ११ मन गमता इन्द्री तणा हो । मु० । सुख विलसे घर माह, त्या अस्त्री न्यारो रहे हो । मु० । त्यागी कह्या जिनराय ॥ सु० १२ ॥ आवे वैश्रमण देवता हो । मु० । नन कुबेर नी जात, सुपना मे वाञ्छा नहीं हो । मु० । थारी कितनीक वात ॥ सु० १३ ॥ जिहां तिहां ई विचरसी हो । मु० । नगर ने वलि ग्राम, अस्त्री देखी चित डोलसी हो । मु० । नारी नरक नी ठाम ॥ सु० १४ ॥ सह सरीखा घर नहीं

हो । मु० । नही सरषी नार, केई झुराने केई जलाहो । मु० । चलीयो जाय सन्सार ॥ सु० १५ ब्राह्मी सुन्दरी वेहनसी हो । मु० । सतिया मे सिरदार, करणी करते गयाहो । मु० । नाम लिया निसतार ॥ सु० १६ ॥ तीर्थंकर वाईसमां हो । मु० । जगमे मोटा सांय, बालपणे तज नीसर्या हो । मु० । बन्धव सांहमी जोय ॥ सु० १७ ॥ नारी दुखनी वेलड़ी हो । मु० । रमणी दुखनी खांण, इम जांणी ने चेतज्यो हो । मु० । कहीयो हमारो मांन ॥ सु० १८ ॥ वचन सुणी राजल तणाहो । मु० । हीयो ठिकाणे आय, धन धन तुं मोटी सती हो । मु० । गई मुगत मझार ॥ सु० १९ ॥ ए दोनु उत्तम हुवा हो । मु० । पाम्या केवल ज्ञांन, ए दोनु मुगते गया हो । मु० । कीजै तिणारो ध्यान, सु० २० ॥ सम्वत् अठारे बावन हो । मु० । आसन मास मझार, चोथमल कहै पिपाड़ मे हो । मु० । सुदी पञ्चमी मङ्गल वार ॥ सु० २१ सु० चि० ॥

॥ इति रहनेम राजमती सिझाय सम्पूर्ण ॥

॥ रात्री भोजन सिझाय ॥

पुन्य सञोगे मानव भव लाधो, साधो आतम काज। विषया रस विष सरिखो जाणो, इम भाखे जिन राजरे ॥ प्राणी रात्री भोजन वारो० १ ॥ आगम वाणी सांभलि करिने, समकित गुण संभारेरे। प्रा०। दान सनान ने आहुति भोजन, ए टलो रात्रि न कीजे। ए सवि करवी सुरज नी साखे, नीति वचन समझी जें रे ॥ प्राणी० २ ॥ पशु पंखी उत्तम विण पाले, रात्री भोजन टाले। तुमे तो मानव नाम धरावो, किम सन्तोष न आनोरे ॥ प्रा० ३ ॥ अभक्ष बावीस ने रयणी भोजन, दोष कह्या परधान। तिण कारण रात्रे मत जीमो, जो होय हियडे सांन रे ॥ प्रा० ४ ॥ जूंकड़ी ने करोलियो माखी, भोजन माके आवे कोढ़ जलोदर वमन करावे, ए हवा रोग उपजावे रे ॥ प्रा० ५ ॥ बहु भव जीव हिंसा करतां, पातिक जेह उपायो। तेहवो एक तलाव फोड़ यामां, दूखण सुगुरु बतायो रे ॥ प्रा० ६ ॥ एक सोत्तर भव लगे सरोवर फोड़ाया, एक दव दीधे पाप। अठक्षोत्तर भव लगे दव दीधां, एक कु विण

जनी व्यापार रे ॥ प्रा० ७ ॥ एकसो चमालीस भव लगे कीधा, कुविणज ना व्यापार । कूड़ो एक कलङ्क देयन्ता, तेहवो पाप नो पोखरे ॥ प्रा० ८ ॥ एकसो एकावन भव लगे दीधा, कूड़ा कलङ्क अपार । एक वार सील खण्ड्यां तेहवो, अनरथ नो बिसतार रे प्रा० ९ ॥ एकसो नवांणुं भव लगे खण्ड्या, सील विषय सम्बन्ध । तेहवो एक रात्रि भोजन मां, कर्म निकाचित बन्धरे ॥ प्रा० १० ॥ रात्रि भोजन ना दोष घणा छे, कहतां नावे पार । केवली कहेता पार न आवे, पूरव कोड़ि मझार रे ॥ प्रा० ११ ॥ एहवो जाणी ने उत्तम प्राणी, नित चोविहार करीजे. मासे मास पाप क्षमन नी, लाभ ईसी विध लीजेरे ॥ प्रा० १२ ॥ मुनि लावन्य नि एहि सिखा-मनी, सांभल जो नर नारी । शिव गति तणा सुख बिलसो भविका, मुक्ति तणा अधिकारी रे ॥ प्रा० १३ इति रात्री भोजन सिझाय ॥ ⊛ ॥

॥ ⊛ तमाखू नी सिझाय ⊛ ॥

प्रीतम सेती बीनवे, प्रेमदा गुणनी जाण । मेरे लाल०) मन मोहन इम कन्तने, सांभल

उम उपजे, नर पञ्चेन्द्री जीव। मे०। ऐथ असं-ख्याता कह्यां, श्री महावीर जगदीश॥ मे० ११ क० जलमां जीव कह्या घणा, संख असंख अनन्त। मे०। नील फुल तिहां उपजे, अग्नि प्रजाले जन्तु मे० १२ क०॥ तमाखू पीता थकां, ए छह काय हणाय। मे०। जोति घटे नयणा तणी, सासे देह गन्धाय॥ मे० १३ क०॥ घड़ी दोय जे व्रत करो सेवो श्री भगवान। मे०। दया धरम जाणी करो, सेवो चतुर सुजान॥ मे० १४ क०॥ चतुर विचारी समझिए, धरिए धरि सुभ ध्यान। मे०। आणन्द मुनि इम उच्चरे, ते लहे कोड़ कल्याण॥ मे० १५ क० इति तमाखू नी सिझाय॥ ॐ॥

॥ ॐ अथ आउषानी सिझाय ॐ॥

घे घे मुनिवर वेहरण पांगुर्या रे (एदेशी०) आउषो तूटो साधो को नहीं रे, विण कारण न करो जीव प्रमाद रे। जरा आयाने सरणो को नहीं रे, हिंसा छाड़ि ने दया पालरे॥ आ० १॥ कुटम्ब कबीलो नारी कारणे रे, मुरख संच्या बहुला पापरे। चोर तणी परें छणी झुरसी रे, सहसी इह

लोक परलोक सन्ताप रे ॥ आ० २ ॥ ऊँचा चिनाया मन्दिर मालिया रे, दे दे धरती ऊपरी नीधरे। इक दिन अनजाणो ऊन्ही चल्योरे, सुख दुख सहसी आपणो जीवरे ॥ आ० ३ ॥ चक्रवरत हरिदल रामो के सबोरे, जोय जो बलि इन्द्र सुरारो नाथरे। ऊगो ऊगी ने उवेहो आथम्यां रे, जोय जो कोइ अचरिज वाली बातरे ॥ आ० ४ ॥ अथिर सन्सार तजी मुनि निसख्या रे, करतां मुनि नव कलपी विहार रे। भारण्ड पंखी नी दीधी उपमारे, न धरे ममता नेह लिगार रे ॥ आ० ५ ॥ चारित्र पाले रूड़ी रीत सु रे, देवें मुनि अपनो उपदेश रे। तिको मुनिवर सिध सीझने रे. जस लेई इह लोके परलोक रे ॥ आ० ६ ॥ सवद रूप देखी समता धरोरे, मत करो मुनि नणियारो अभिमान रे। रूप चोथमल्ल सुत्र देखने रे, जोड़ कीधी जालोर मझार रे ॥ आ० ७ ॥ इति आउषानी सिझाय ॥ ® ॥

॥ ® अथ नारी सिझाय ® ॥

मूरख कुँ भावे नहि रे, चतुर करो विचार। जो सुख चाहो जीवको, तो मत कोइ परणो नारी

रे (साहिब के लोको, मति कोइ परणो नारी रे०) १ ॥ जवही वात चलावत, तवही लागे प्यारी. जव एक घरमें ले आवे, तवही मांचै थारी रे ॥ सा० २ ॥ घरमे आय हुकम चलावे, देखो कामन गारी । जांत जांत की वस्त्र मङ्गावे, सुध बुध खोवै सारीरे ॥ सा० ३ ॥ मानिक ल्यादे मोती ल्यादे, गहणा ल्यादे जारी । ज्युं त्युं करके मुजने ल्यादे, नही तर करस्युं खोवारी रे ॥ सा० ४ ॥ साड़ी ल्यादे लॅहगा ल्यादे, चोली साथ किनारी । सांच कुट कर मुझकुं ल्यादे, नही तो होसि ख्वारी रे ॥ सा० ५ ॥ काजल बिन्दी टिकी ल्यादे, करूं सिङ्गार तयारी । रङ्ग रङ्गीली मेहन्दी ल्यादे, हुं कहुं तोहि पुकारी रे ॥ सा० ६ ॥ सूवा सालु मोहि रङ्गाय दे आछो पीय हुंवारी रे ॥ सा० ७ ॥ कथ चुना पान तमाखु, खावा कुं सोपारी । रङ्ग रङ्गीली चुड़ा लायदे, तो जाउॅ बलिहारी रे ॥ सा० ८ ॥ सिर बांधन कुं कङ्गही लायदे, पायन कुं पैंजारी । सुई विना हुं क्यासुं सीउं, लाईयो एक बुहारी रे ॥ सा० ९ ॥ लुण तेल घृत सीधा ल्यादे, वेगी करुं तयारी । इक लकड़ी का भारा लाय दे, कहती

कहती हारी रे ॥ सा॰ १० ॥ हलदी हींग मिरच विन फिकी, श्रादन देत तरकारी । हुवा महिना पैसा कारण, फिर फिर जाय पनिहारी रे ॥ सा॰ ११ ॥ उखल लायदे मुसल लायदे, घट्टी लायदे भारी । छाज विना में कैसे फटकुं, कहती २ हारी रे ॥ सा॰ १२ ॥ जो जो मांगु सो सो लायदे, तो जाउं वलिहारी । जो मांगु सो वस्तु ल्यादे, क्याने निखटु ब्याही रे ॥ सा॰ १३ ॥ इन जव मांहे खेल खिलावे, परजव में दुःख जारी । एक बात सुनो जव जीवां, नारि तजो निरधारी रे ॥ सा॰ १४ ॥ क्या छोटी क्या मोटी नारी, सबही विष की वेल वैरी मारे दाव सुं रे, य्या मारे हँस खेल रे ॥ सा॰ १५ ॥ नारी नही या नाहरी रे, वाघणि वड़ी बलाय जीवत चुटै कालजो रे, मुवा नरक ले जायरे ॥ सा॰ १६ ॥ सील वरत तुम चोखी पालो, जुं पामो जवपार । हेत जुगत कर गुरु दे शिक्षा, श्रागै इछा धारी रे ॥ सा॰ १७ ॥ इति नारि सिझाय ॥

॥ ❀ अथ सप्त व्यसन सिझाय ❀ ॥

सात विसन नारे सङ्ग मता करो, सुण तहनो सुविचार (विवेकी॰) सात नरक नारे जाइ.

सातेई आपे दुःख अपार०) ॥ वि० १ सा० ॥ प्रथम जूवा नेरे बिसन पड्यां थकां, पाण्डव पांच प्रसिद्ध । वि० । नल राजा पिन इन बिसने पड्यो । खोइ सहु राज रिद्ध ॥ वि० २ सा० ॥ दूसरे मांस भक्षण अवगुण घणां, करे पर जीव संहार । वि० । महा सतक नी नारी रेवती, नरक गई निर धार ॥ वि० ३ सा० ॥ तीजे मदरा-पान बिसन तजी, चित धरि बड़ी चाह । वि० । दीपायण रूप दुहव्यो जादवे, द्वारका नो थयो दाह वि० ४ सा० ॥ चौथे बिसने बेस्या घर बसै, लोक में न रहे लाज । वि० । कयवन्नादिक नो गयो कायदो, कुबिसन नेरे काज ॥ वि० ५ सा० ॥ पाप आहेडे कुविसन साच वे, प्राणी हणीये प्रहार । वि० । मारी मृगली श्रेणिक नृप गयो, पहिली नरक प्रसिद्ध ॥ वि० ६ सा० ॥ छठे चोरिने बिसने करी, जीव लहे दुःख जोर । वि० । मुञ्ज देवराज ये मारीयो, चावो लुण्डक चोर ॥ वि० ७ सा० ॥ पर स्त्रीय सङ्गत कुबिसन सातमे, हाणि कुजस बहु होय । वि० । राजा रावण सीता अपहरी, नास लङ्कानो रे जोय ॥ वि० ८ सा० ॥ इम जाणी

भव्य तुमे आदरो, सीख सु गुरुनी रे सार। वि०। इण भव परभव आनन्द अति घणा, कहै प्रेम सी सुख कार ॥ वि० १० सा० ॥ इति सप्त व्यसन सिझाय सम्पूर्णम् ॥ ® ॥

॥ अथ चेलणा महासती सिझाय ॥

वीरवांदी वलतां थकां जी०) चेलणा दीठोरे निग्रन्थ। राति वन मांहि काउ सग्ग रह्यो जी, साधतो मुगतिनो पन्थ ॥ वी० १ ॥ वीर बखानी राणी चेलणा जी, सतीय शिरोमणी जाण। चेड़ा राजानी साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परमाण वी० २ ॥ सीत ठांढार सबलो पड़े जी, चेलणा प्रीतम साथ। चारिती यो चीतमे वस्यो जी, सो बड़ि बाहिर रह्यो हाथ ॥ वि० ३ ॥ ऊबक जागी कहै चेलणा जी, किम करतो हुस्ये तेह। कुमती मन मांहि ए कुण वस्यो जी, श्रेणिक पड्योरे सन्देह ॥ वी० ४ ॥ अन्ते उर परो जाल ज्यो जी श्रेणिक दीयोरे आदेस। भगवन्त सांसो भांजियो जी, चमकियो चित्त नरेस ॥ वि० ५ ॥ वीर वांदी वलतां थकां जी, पैसतां नेगर मझार। धुवानो

घोर देखी करी जी, जा जाइरे अजय कुमार ॥ वी० ६ ॥ तात नो वचन पाली करी जी, व्रत लियो अजय कुमार । समय सुन्दर कहै चेलना जी, पामियो जव तणो पार ॥ वी० ७ ॥ इति चेलना महासती सिझाय ॥ ❀ ॥

॥ अथ प्रक्रिमण सिझाय ॥

करि पड़िकमणो जावसु०) दोय घड़ी सुज जाण (लालरे०) परजव जातां जीवने, सम्बल साचो जाण ॥ ला० १ क० ॥ श्री मुख वीर समुच्चरे, श्रेणिक राय प्रति बोध । ला० । लाख खण्डी सोना तणी, दीये दीन प्रति दान ॥ ला० २ क० ॥ लाख बरस लग तेहने, इम दीये द्रव्य अपार । ला० इक सामायक नी तुला, नावै तेह लगार ॥ ला० ३ क० ॥ सामायक परसाद थी, लहिए अमर विमान ला० । धरम सींह मुनिवर कहै, मुगति तणो ए निदान ॥ ला० ४ क० ॥ इति

॥ ढण्ढण ऋषि सिझाय ॥

ढण्ढण ऋषि दरशणकि, बलीहारी । हेजि थांरे सुरतरी वलिहारी ॥ ढ० ॥ निर्जरा करणी

दोनु थाँरी, परमेश श्री नेम उचारी। यादव कुल थे ऊंचो जी लीया, अदभुत करणी थाँरी॥ ढ० १ षटमास थया अन्न जल लीधाँ, लिधो अभिग्रह धारी। मुझ लब्धिको अहारज लेवो, जाव जीव पण धारी॥ढ० २॥ गाथापति देख श्री पति भक्ति, प्रतिलाभे कर मनुहारी। अहार पाणी ले प्रभु पें आया, नहि वह्यलब्धि तिहांरी॥ ढ० ३॥ मोदक पर ठवण काजे चाल्या, दीया करम वीदारी। मुनि राम कहे जिन साशनमें, मुनि बड़े तप धारी॥ ढ० ४॥ इति

॥ सिझाय ख्याल की चाल॥

म्हांरा गाढ़ा मारु वसौनी आजकी रैण में एदेशी० (म्यांरा भोला जीवड़ा०) लेवोनी खरची जोयने, जीवा मारग विषम अपार। म्हारा भोला जीवड़ा खरची लेवोने विचारने (टेर०) तुं स्युं करो जीवड़ा दीशेछे तु मूढ़ गिवार॥ म्हा० १॥ तन धन यौवन कारमी जी, जीवड़ारे सियांही को थांही म्हा०। एकन साथे चालसी जीवड़ा, दरिये खाली मत तूं जाय॥ म्हा० २॥ दान सुपातर दीजीयें

जीव असंख मरे है । अगनि आरम्भ निवार, गुरु के बचन खरे है ॥ १० ॥ एक अगनि कण जीव, पोस्त बीज सम काऊ । करे तो द्वीप न मांइ, वड़ी तीन दिन आऊ ॥ ११ ॥ जिलादिक वन मांहि, पावक दाह करइया । फिरे है नगन पग निचे, दुरगति दुःख भरइया ॥ १२ ॥ पवन काय के जीव, बहुत बसे इक ठांहि । सब पर होय दयाल, हिन्सा पंखा मांहि ॥ १३ ॥ सुइ ठिड सम बात, जिव असंख मरै जी । लिक समान शरीर, करै तो दीप भरे जी १४ ॥ पवन आऊ उत्कृष्टि, तिन हजार बरस की- पवन करे ते गुलाम, कहिये दर नहि तिसकी ॥ १५ वनस्पति मति तोड़ो, जीव बसे इक ठांइ । संख ऽसंख ऽनन्त, दोई भेद इन मांहि ॥ १६ ॥ साधारण चौदे लाख, दश प्रत्येक वखानी । साधारण मे जीव है, ऽनन्त कहे ज्ञानी ॥ १७ ॥ कोमल जे फल फुल काल पत्र कन्द जेते । जमहे परव जिस कालहे, साधारण तेते ॥ १८ ॥ तिल सम इस तन मांहि, जीव कहे कहे जेते । तीन कालके सिद्ध कीजे, एक न तेते ॥ १९ ॥ सास उसास इक मांहि, जनम मरण करे जी । साढ़े सतरे बार, आऊ वड़ीग धरे

जी ॥ २० ॥ है परतक्ष मे जीव, संख ऽसंख परमाना
उत्कृष्टो याको आऊ, वर्ष सहस दश जाना ॥ २१
फल दाहक तोरन द्वार, देखे काछी प्राणी । जग
हुं कहावे, गवार दुरगत्ती आगवानी ॥ अब छठी
त्रस काय विती, चौरन्द्री जाती । दो दो लक्ष पर-
मान, बे इन्द्रि संख्याती ॥ २२ ॥ ऽलसीया कृमि
लट जोक, आऊ बड़ी वर्ष बारे । बहुत बसे जल
माहिं, ताते छानि त्रस टारे ॥ २३ ॥ चेंटी खटमल
कांस, जुंवां कांन सलाई । गति ते इन्द्री जांन,
जीव दया करो जाई ॥ २४ ॥ आठ दिना ऊनंचास
उत्कृष्टो जिन जापी । चौइन्द्री भ्रमर पतङ्ग, मछर
कङ्कर मर्ष ॥ २५ ॥ बीछू मकोड़ा आदि, आऊ बड़ी
छ मासीज । ए काटे आय, ज्ञानी तोऊन विनासे
२६ ॥ नर पशु पंखी मच्छ्यादि, पञ्चेन्द्री जानो ।
जो ए करे बिगार, तोबी करूणा आनो ॥ २७ ॥ देव
नरक उत्कृष्ट, आऊ सागर तेतीस । जघन सहस
दश वर्ष, जापी श्री जगदीश ॥ २८ ॥ ऊत्कृष्टी पल्य
तीन नर, पशु आऊ बखानी । मछ सरप देखी
आऊ, सुं पूर्व कोड़ी परवानी ॥ २९ ॥ देव नरक
तिरिजञ्च, च्यार २ लक्ष जानी । चवदे लाख मनुष्य

सब लक्ष चौरासी ॥ ३० ॥ पञ्च इन्द्री बल, तीन
आऊ सास । इन दश प्रान न मांहि, थावर के चउ-
ाषी ॥ ३१ ॥ विकल त्रय छे सात, आठ प्राण क्रम
ोजी । धरे असनी सन्न, पञ्च इन्द्री नव दश जी
२ ॥ छ पर्जाय आहार है, शरीर फुनि इन्द्रि ।
ास उसास त्रापा, मन्न चार धरि इक इन्द्रि ॥
३ ॥ विकल असन्नि कों पांच, सन्नी को छे जानो ।
जीयन के भेद, गुरु मुख सुं पहिचानो ॥ ३४ ॥
र्यात्ती छकाय, होय पर्या धारी । सुक्षम बादर भेद
ह्या, सिद्धान्त मझारी ॥ ३५ ॥ लोक आकाश
ाकार, पूर रही छे काया । घट मांहि जि तुम जानो
ान बच काया ॥ ३६ ॥ (कलशः) यह जान
निशि दिन दया पालो, भविक शिव सुख दायरे
ाव २ तणो यह कुटम्म आपनो, लखो मन बच
ायरे । पट काय में मिथ्यात के, बस रुलत जिव
अपनो कियो । अब तरण तारण जान लीजो,
ारण श्री जिन राजको ॥ जग मांहि भवो भव
ासित समकित, चरण तुम वन्दित रहुं । निज
ास लिखि यह, आस पूरो और कछु मैं ना
ाहुं ॥ ३७ ॥ इति छैकायानी बिनती ॥

॥ सिझाय ॥

नीहाल देकी देशी०) दस पच खांणे जीवड़ो जी कॉइ, पांमे सुख अपार । करतां एक नवकार सी जी कॉइ, सौ बरस नर्क निबार (तप समो नही जगतमे जी:, सुख तणो दातार० १ ॥ (टेर बीजो पोरसी वर्ष सहस नी जी कॉइ, साढ पोरसी दस हजार । पुर मढ लक्ष एक बर्ष ना जी कॉइ, एकासणो दश लक्ष धार ॥ त० २ ॥ नीवी तोड़े कोड़ बर्ष ने जी कॉइ, दश कोड़ एकल ठाण । सौ कोड़ एकल दत वहे जी कॉइ, आंबील सहस कोड जांण ॥ त० ३ ॥ सहस दश कोड़ उपवास मे जी कॉइ, छठ तणो तप तप धार । लक्ष कोटी वर्ष पावही जी कॉइ, अठम कोटी दश लक्ष टार ॥ त० ४ ॥ कोटा कोटी बर्षनो जी कॉइ, दसम उस्म करे कर्म । मुनिराम कहै तप किजीयै जी कॉइ, पांमस्यो शिव पुर शर्म ॥ त० ५ ॥ इति

॥ अथ कलियुग बिनती ॥

ढाल०) देखो भाई कलियुग आयो, दुनिया पलटी जायछे० (आंकनी) तिन भवनका नाथ

दे० १७॥ पर नारिको पाप घणाछे, पुरष परायो त्याग छे। तो सील बरत पे खएंचै छे, जो खोटी गतिमें जायछे॥ दे० १८॥ कन्या बड़ी सयानी करि करि बूढ़ाको परनाय छे। तो पूंजो लेता दाम चुकावे, मीठा जोजन खायछे॥ दे० २०॥ गालि गीतमें ख्याल तमासे, रात्यौ खड़ा रहाय छे। तो कथा धरम को चरचा सुनतां, आंखा नीन्द जरि आयछे॥ दे० २१॥ अवै जगत में जांग तमाखु, सूँघे पीवे खाय छे। तो स्वामी जति सन्यासी जोगी, औवी अमल वधाय छे॥ दे० २२॥ एकादशी करै छे, निरजल सो तो व्रत फल पायछे। तो जांति जांति का स्वाद चनावें, पेट जस्यो फल जायछे॥ दे० २३॥ ज्योंही को तो खावे पीवे, ज्यांसूं बड़ो कहाय छे। तो ज्यां ईको गुण वीसर जावे, ऊलटो वैर कराय छे॥ दे० २४॥ अवै जीवके क्रोध घणोछे, मांन बड़ाई गाय छे। तो लोज घणौ करि कपट करैछे, हरिया वृक्ष कटाय छे॥ दे० २५॥ पूजा करतां जाप जपन्तां, मन थिरता नहि पाय छे। तो मोन धारके माला फेरे, मनमे मतो कराय छे॥ दे० २६॥ विना अरथ ही झूठा बोले, कुड़ी साष जराय छे। तो चुगली

करिके गॉव लुटावे, दौ दे आगि लगाय छे ॥ दे० २७ ॥ बड़ा जीव कुं मार्‍यां सेती. हत्यारो कहवाय छे। तो छोटा जीव हजारां मारे, सोक्यौ भूख्या जाय छे ॥ दे० २८ ॥ राग द्वेष कुं छोड़े छे सो बैरागी सुख दाय छे। तो अब बैरागी भेक धारके, सस्त्र बांधि लड़ाय छे ॥ दे० २९ ॥ पोथि पाना प्रभुकि मुरति, पुजे मुगति बधाय छे। तो भूखा मरता बेचन जावे, सारो नरक कमाय छे ॥ दे० ३० ॥ चोरी निन्धा आछी लागे, जूवा खेलवा जायछे। तो ज्ञान गोठिकी सङ्गति बैठा, घरका राड़ि कराय छे ॥ दे० ३१ ॥ जैसी रचना वरते जगमे, तैसी जोड़ जुड़ाय छे। तो गावे देवा ब्रह्मचार यो, सुनतां आनन्द पायछे ॥ दे० ३२ ॥ इति कलियुग विनती

॥ ® जिलेकी चाल देशी ® ॥

सहीयां ए (नेमीसर वनड़े ने गिरनारी जातां राख लीजोए०) समुद्र बीजे जीरा लाड़ला हे मा हल दल दोनु लार, पिताजीने जाय केजो हे मा ने० १ ॥ नेमिसर वनड़ो वनो एमां। सहियाए खूब वनी है वरात, ऊची चढ़ झांक लीजो एमां

दे० १७॥ पर नारिको पाप घणाछे, पुरष परायो त्याग छे। तो सील वरत पे खर्ए छे, जो खोटी गतिमें जायछे॥ दे० १९॥ कन्या वड़ी सयानी करि करि बूढ़ाको परनाय छे। तो पूँजो लेता दाम चुकावे, मीठा भोजन खायछे॥ दे० २०॥ गांलि गीतमे ख्याल तमासे, रात्यौ खड़ा रहाय छे। तो कथा धरम को चरचा सुनतां, आंखा नीन्द भरि आयछे॥ दे० २१॥ अवै जगत में भांग तमाखु, सूँघे पीवे खाय छे। तो स्वामी जति सन्यासी जोगी, औवी अमल वधाय छे॥ दे० २२॥ एकादशी करै छे, निरजल सो तो व्रत फल पायछे। तो भांति भांति का स्वाद वनावे, पेट भर्यो फल जायछे॥ दे० २३॥ ज्योंही को तो खावे पीवे, ज्यांसूं बड़ो कहाय छे। तो ज्यां ईकौ गुण वीसर जावे, उलटो वैर कराय छे॥ दे० २४॥ अवै जीवके क्रोध घणोछे, मान बड़ाई गाय छे। तो लोभ घणो करि कपट करैछे, हरिया वृक्ष कटाय छे॥ दे० २५॥ पूजा करतां जाप जपन्तां, मन थिरता नहि पाय छे। तो मोन धारके माला फेरे, मनमे मतो कराय छे॥ दे० २६॥ विना अरथ ही झूठा बोले, कुड़ी साप भराय छे। तो चुगली

करिके गाँव लुटावे, दौ दे आगि लगाय छे ॥ दे० २७ ॥ बड़ा जीव कुं मार्‍यां सेती, हत्यारो कहवाय छे। तो छोटा जीव हजारां मारे, सोक्यौ भूख्या जाय छे ॥ दे० २८ ॥ राग द्वेष कुं छोड़े छे सो वैरागी सुख दायं छे। तो अब वैरागी भेक धारके, सस्त्र वांधि लड़ाय छे ॥ दे० २९ ॥ पोथि पाना प्रभुकि मुरति, पुजे मुगति बधाय छे। तो भूखा मरता बेचन जावे, सारो नरक कमाय छे ॥ दे० ३० ॥ चोरी निन्द्या आछी लागे, जूवा खेलवा जायछे। तो ज्ञान गोठिकी सङ्गति वैठा, घरका राड़ि कराय छे ॥ दे० ३१ ॥ जैसी रचना बरते जगमे, तैसी जोड़ जुड़ाय छे। तो गावे देवा ब्रह्मचार यो, सुनतां आनन्द पायछे ॥ दे० ३२ ॥ इति कलियुग बिनती

॥ ❀ जिलेकी चाल देशी ❀ ॥

सहीयां ए (नेमीसर बनड़े ने गिरनारी जातां राख लीजोए०) समुद्र बीजे जीरा लाड़ला हे मा हल दल दोनु लार, पिताजीने जाय केजो हे मा ने० १ ॥ नेमिसर बनड़ो बनो एमां। सहियाए खूब बनी है बरात, ऊंची चढ़ झांक लीजो

ने० २ ॥ नेमिसर तोरन आयो एमा । सहीयाए पशुवन करी छे पुकार, उलट रथ फेर चला एमा ने० ३ ॥ तोड़ा छे काकन मोर सा हेमा । सहीयाए तोड़ा छे नौसर हार, दीक्षा उन आदरी हेमा ॥ ने० ४ ॥ हमहि प्रगट त्यागस्यां हेमा । सहीया ए जाय मिलुं गिरनार, करम फन्द तोड़सा हेमा ॥ ने० ५ ॥ सेवक अति सुख पायके हेमा । सहीयाए मांगेछे शिवपुर बास, दया मारी लिजीये एमा ॥ ने० ६ ॥ इति पदं ॥ ७ ॥

॥ अथ वैराग्य लावणी ॥

अब तन दोस्ती है इह मस्ती, काया मएफुल की सासो स्वास समर ले साहिब । आउ घटे दिलकी खबर नहीं है जुगमें पलकी०) सुकृत करणा हो सो करले, कुन जाने कलकी ॥ ख० १ ॥ तारा मएफुल रवि चन्द्रमा, सबही चलाचल की । दिवस च्यार का चमत्कार है, बीजलियां झलकी ॥ ख० २ ॥ यो जुग है सुपने की माया, ओस बून्द जलकी ।

श्रेनस जावतां वेरण लागे, दुनिया जाय खलकी। ख० ३ ॥ हंसा है देही मे जब लग, खुसी है मङ्गल की। हंसा छाड़ चल्या जब देही, मिट्टि जङ्गल की ख० ४ ॥ मन मावत तन चञ्चल हस्ती, मस्ती है बलकी। सदगुरु अंकुश दीया आनके, घाता नइ चलकी ॥ ख० ५ ॥ मात पिता सुत वन्धव जाइ, सब जन मतलब की। काया माया सबे कारमी, तेरे कबकी ॥ ख० ६ ॥ झुठ कपट कर माया जोड़ी, कर बातां ठलकी। पाप की बोझ बंधी शिर पे, कैसें होय हलकी ॥ ख० ७ ॥ देव धरम साहिब को समरण, ए बातां थलकी। राग द्वेष ऊपजे नहीं जिनकुं, बीनती अखैमलकी ॥ ख० ८ ॥ इति

॥ सातवार लावनी ॥

करताहै कोन किसका ॥ इह चाल ॥ (तुम सात वारमे खरची बांधोरे एक दिन जांवणा०) टेर० सात वारमे सबको जाना, जिसमे क्या है फेर। रङ्क रावकुं सबकु चलना, खरची ले लो लेर ॥ ले लो खरची लेर फेर पिछतावसो। बन्धी मुठी आय खाली होय जावसो ॥ तु० १ ॥ सूर्यवारमे सूर्य

ऊगे नित, आयू खाए ले जावे । घटी जावे सो पीछीनावे. रवी तो एम जतावे ॥ खरची बांधसो, मुनि लोकांसू प्रीत सैठी थे साधसो ॥ तु० २ ॥ चन्द्रवारमे करो चांदणो, तेरा घटरे माय । जिन सेतातो मिटे अन्धेरो, घट पट प्रगट दिखाय ॥ आखरतो जावणा । राख्या न रहै लाख मेह अरु पांवणा ॥ तु० ३ ॥ मङ्गलवारमे मङ्गल वरते, धर्म कियां सुख पासी । धर्म विना तो खाली जासि, आखर तुं पिछतासी ॥ शास्त्र गाय छे । आंकी जली न वांकी जली, आंख फिर मिचवाय छे ॥ तु० ४ बुधवारमे बुध बिचारो, जन्म मरण मिटजाय । राग द्वेषने पतला पाड़ो. जिणरो नाम कषाय ॥ पातली पाड़सो । ज्ञान थकी म्हों ध्यान समाधी चाड़सो ॥ तु० ५ ॥ गुरुवारमे गुरु चेतावे । ऐसा करो व्योपार । जिस में नफा हुवे अनन्ता, वाह वाह करे सन्सार ॥ ज्ञान कर हेरसी । तु सूतो छे कूण नीन्द, मोत आय घेरसी ॥ तु० ६ ॥ शुक्रवारमे शुक्रन करलो, धरले गुरुके ध्यान । गुरु बिना कछु पता न लगे, मत कर गुरुसे मान ॥ ज्ञांन उर राखजो । सुधरे जिम परलोक, वचन सुध भाषजो ॥

तु० ७ ॥ थावर वारमे थिर नही रेहना, चलना बीश्वा वीस। जैन धर्म शुद्ध पाल जोसरे, पाली मारो रीस ॥ जश थे लिजीयो. मुनिराम कहे सात-वारमे, सुकृत किजीयो ॥ तु० ८ ॥ इति सातवार लावनी सम्पूर्णम् ॥ ® ॥ ® ॥

॥ लावनी ॥

पुनः) गोरी चली सासरे फेर कबितो आना एदेशी) गत वस्तुका सोच कभी नहि करना०) सुख दुख किसके हाथ, मेटे कुन मरणा (पटेर) एक धनवन्त नरका पुत्र बडा गुणवन्ता, कृतान्त पकड़े आंन प्रांन कियो अन्ता। अब रोवे पिटे बाप अति अरडन्ता, रोक्या न रुके लेह मोह दुर-दन्ता ॥ माता झूरे रे पुत्र त्रिया कहे कन्ता, था पूरव जनका वैर अहो जगवन्ता। इम बाप रोवे विललाट अरे पुनवन्ता, दुर्लभ तुझ दरशन ऐसे विलपन्ता ॥ तुं छिनमे गया छिटकाय विधन्स करि घरणा ॥ग० १॥ इण रीते वीते षटमास बास भये सुना, बास्यो श्मशाने बाप रोवे तिहां दूना. दिवांन गये समझाय एक नहि मानां, लोकहास्य घरहानि

कहे कफ खाना. घरके कहे दुख पाय करे जो सयांना, जिसका उत्तम उपगार जन्म परमांना। एक चतुर बिचक्षण पुरुष सूनी इम कांना, कहे एक रात्रि बिच मिटाऊं ताना, यह उत्तम आचार टारे दुख परणा ॥ ग० २ ॥ जब आयो पुनमकी रात, बावु जहां होता। रुदन किये इण जांत सकल सुन रोता ॥ सुनत हिया फट जाय, भेद नहि पाया कूण रोवे तुं केम बावु बतलाया। मेरेतो पुत्रका दूख कलेजा जलता, तुं रोवेहे किन काज कायर हिय गलता। में रोऊं छुं चन्द्रमा काज सच मैं बोलुं, बावु कहे मे तोय मूरख सम तोलुं। करें लोक उपहास उसीसे मरणा ॥ ग० ३ ॥ आवे न चन्द्रमा हाथ प्राण जो खोवे, तुंज सरिखा मूढ होवा नहि होवे. मै प्रतक्ष देखूं आंख इसीकुं रोता तुजे दीसें नही तेरा पुत्र प्राण क्युं खोता। चन्द्र मिले नही मोय पुत्र किम तेरा, दोनूं झूठी बात ज्ञान कर हेरा। सुन बावु कु आया ज्ञान अज्ञान सब हटीया, आया अपने गेह प्रभुकुं रटीया। मुनीराम कहे सब बात हियामे धरना ॥ ग० ४ ॥ इति लावनी सम्पूर्णम् ॥ ® ॥

॥ लावनी ॥

लाज मोरी रखले भवानी० (एचाल) चारकी उत्तर ही कहना, मै तुझे देताहुं मैना ॥ च्या० ॥ मोह जुत देह कौन कहीये, जगतमे आश्चर्य को लहिये । को पंथ्य का वात सर दहिये, च्यार ए उत्तर ही चहीये ॥ उत्तर च्यार कह दीजीये, तो जीत्रे बन्धु एक तोय. मोय सूनेश चायहै, सुनता आनन्द होय ॥ धोय पीठ मुहमे जल देना ॥ च्यार के उत्तर सुन लेना मै तुझे देताहुं मैना०) च्या० १॥ पञ्चवा छठे वासर जाई, साक को पचते घर माई. किसिका देना सिर नाई, नोकरी चिन मौज करे चाई ॥ राई नर पर बस नही, करज किसीका नाही. निंद आपकी छठत हे, मोद जुक्त जग मांहि. जहां कछु लेना ना देना ॥ च्या० २ ॥ वातना जगमें कछु छानी, दिन दिन मरता है प्रानी । पाव रुप्य रहते अज्ञानी, पापमे हो रहै अगवानी ॥ मांनी नर जग एहवा, म्हें कदे न मरसां कोय । आंख्यां मरता देखहि, क्या इनसे इचरज होय ॥ कोयतो अमर नही रैणां ॥ च्या० ३ ॥ पन्थ नही एकसा सारे, मुनिका मत पिणहै न्यारे । अन्य मत

एक नही प्यारे ॥ पन्थ कोनहै सच्चलो, कोन सा चले सन्त. महन्त गये जिण मारगे, सो साचो है पन्थ ॥ तन्त तो पन्थ उसें वैना ॥ च्या० ४ ॥ मोहको कटाहे जगजारी, रात दिन रुप इन्धन जारी। रवीज्यां अगनी हे न्यारी । पचावे कालही अधिकारी ॥ पचे प्राणी मात्र जे, क्या वात इसीसे और । मुनिराम कहे धर्म ना करे, ते नर जङ्गली ढोर ॥ और क्या इधक इस सें कैना ॥ च्या० ५ ॥ कहे सो धन्धू जीव जीयलाऊ, नृप कहे नकुल जोयो चाहूं. भीमार्जुन मांगो समझाऊ, माद्रिको वंसही रखवाऊ ॥ कुन्ति नांममे राखहूं, माद्री नकुल रखाय । सूरकहे धन्य तुम धीरता, महिमा करी सुर राय ॥ आय मै देखो निज नैना ॥ च्या० ६ ॥ इति लावनी सम्पूर्णम् ॥

॥ लावनी ॥

बालम लोटोरे० (एदेशी०) सुखिया घरमे जनमीयो, दुखि थयो किण काज ॥ (कर्मको आंटोरे०) (कोई न खोलन हार०) ॥ कर्म० ॥ दुखी थकी सुखीयो थयो, केई कग्ता दीसे राज

क० १ को० ॥ एक आतमा खोजन हार । क० । घंडा तपस्वी आवक्तीया, केइ पाले छे ब्रह्मचार । क० केई श्रेणि चड़ पाछा पड्या, पणिकुन पेले पार ॥ क० २ को० ॥ सिद्ध साधक बहू देखीया. फिर्यो फकीरां लार । क० । ग्रह गोचर केई पूजिया पूज्या पर्वत पहाड़ ॥ क० ३ को० ॥ किण विध कर्मज बांधिया, किण विध दिवी अन्त राय । क० । लाख उधम कर देखिया, पिण कुंण नहीं सम्यौ बताय क० ४ को० ॥ कोई श्रावक धोरी वाजीया, निन्दा करत अपार । क० । साधुकी करणी करै, पड्या निन्दा के लार ॥ क० ५ को० ॥ अरिहन्त नो विरहो पड्यो, अध्ययो केवल ज्ञान । क० । पूर्व भारी-विछेदीया, किण विध पड़े पिछांन ॥ क० ६ को० ॥ समकित ही आव्यां थकां. तुटे मिथ्या गांठ । क० । केवल घाती गये हुवे, सिद्ध हुवे काये आठ ॥ क० ७ को० ॥ अकल पिण चल्ले नहीं, और चल्ले नहि कछु जोर । क० । मुनिराम कहै केवल विनां, मचीयो घोरम घोर ॥ क० ८ को० इति लावनी सम्पूर्णम् ॥ ® ॥ ® ॥

॥ लावनी ॥

तुम चलो सखी कछु देर न करीये०) नेमी-श्वरणे यों केहना । तु० । बिन अपराध छोड़ी राजुल कुं, जाय ओलम्बा यों देना ॥ तु० १ ॥ सब शृङ्गार सज हुसयारी, सबही मुझ सङ्गे रहना । गढ़ गिरनार जाय स्वामीपैं, दीलका दर्द सब कहदेना ॥ तु० २ ॥ मुंह मचकोड़ी दे कर-ताली, मुं बिचमे अंगुली घाली । नेम गयो सखी जाता देनी, उनकी छिव होती काली ॥ तु० ३ ॥ अली एसी बात न कहीये आली. क्या देऊं तुझकु गाली. अनन्तरुप श्रीनेम बिराजे, उनकु छिव सुझकु बाली ॥ तु० ४ ॥ पञ्च मुष्टी लोच कीया आलोच-चली सखीयन का बृन्दन में । कारी घटा उमटी घुमट अन्धेरा. बिजूरी पसरी गगनन मे ॥ तु० ५ मृगपति गाज ओगाज जिम मृगलि, तिमही सब सखियन नाठी । जलधारा भीना सारा कपड़ा दशो दिश सखियन नाठी ॥ तु० ६ ॥ राजुल गुफा मांहे पैठी, कपड़ा सारा सुकवाया । रहनेमी ज्ञान ध्यान सब भूला, नगन रुप देखी काया ॥ तु० ७ ॥ रह नेमी बोले सुण हे सुन्दर, आपां रह

सो घर बासें । दुर्लभ लाधो मनुक्ष जमारो, वार बार ए नहि आसें ॥ तु० ८ ॥ राजूल बोले सुण रहनेमी, इम किम बोल रह्यो मुजकुं कहणो जलो न जलो तुज मरणो, धिक २ रहनेमी तुजकुं ॥ तु० ९ ॥ दे उपदेश विशेष हिय दृढता, रहनेमी इन पर बोले । गुरणी माल समांणी मोरे तोरे जूगमे नही तोले ॥ तु० १० ॥ राजमति सती सञ्जम लेकर, जब तरणी कीधी करणी । रहनेमी पिण केवल पांमी, दोनु गये है शिव रमणी ॥ तु० ११ सम्वत् उगनीसे बसुधा बरसे, मधुमासे विचरत आया. रामचन्द मुनिमन आनन्दे, उदिया पुरमे गुण गाथा ॥ तु० १२ ॥ इति लावनी सम्पूर्णम् ॥

॥ लावनी ॥

दोय नारङ्गीः दोय अना०) धर्म बीज कू सोजी नटही ॥ (लगे कलेजे दाह अपार०) मोट का फूट तजो, नरनार०) ॥ लगे० १ ॥ कद तेरे पूंजी धरी कुण देखी, कुण छे तेरे साईदार ॥ मो० २ ॥ करो पुकार चलो राज कचेड़ी, मेरी पेंठ जाणे दुरबार ॥ मो० ३ ॥ चरे शाख सारे जगसो री,

मानव जव। न०। चेतो जी नर जव पायने०) चेतो चेतोरे २ चतुर सुजांण ॥न०१ चे०॥ गर्जावासमे अव तस्यौ, ओतो वास दूर्गन्धी माय। न०। मास सवा नव गर्जमे, दूख जाने जिनराय न०२ चे०॥ गर्जावास सूं निसस्यो, ओतो विसस्यो पूर्व बात। न०। रात दिवस वस्यो मोहमे, वले सेवे बिसन सात॥ न० ३ चे०॥ परनारी प्यारी मिले, वले जारी किया शिरधूड़। न०। सारी रुध खोवे हाथ सुं, थारी वात माने सहु कूड़॥ न० ४ चे०॥ सतगुरु जाषे देशना, ओतो नर जव अमोल। न० वार अनन्ती हारीयो, पिण अवके लो सूरति खोल न० ५ चे०॥ अरिहन्त देवने ध्यारो, करजो सतगुरु सेव। न०। धरजो जी धर्म दया मध्धे, वले करजो पाखएम कु देव॥ न० ६ चे०॥ क्रोध मान माया लोजने, येतो छोड़ो च्यार कषाय। न०। जो सुख चाहो जीवने, एतो इम जाप्यो जिनराय॥ न० ७ चे०॥ मात पिता सुत जामिनी, वल तन धन सहु परिवार। न०। एकन आवे परजवे, तूं नो अन्तर ज्ञान विचार॥ न० ८ चे०॥ देखोनि रुध जादवां तणी जी, ते तो छिणमे गई विलाय। न०

सुरवर नरवर थिर नही, जिम बादर नी छाय ॥ न० ए चे०॥ कीधा कर्मज जोगवे, एतो जोगव्या छुट कों होय । न०। कर्मबीज जिनवर कहे, एतो राग धेष ठे दोय ॥ न० १० चे०॥ इम जाणी कर्म मती बांधो, वली साधो शिवपुर माग । न०। तप सञ्जम दोय मूल है, इम कहे श्री वितराग ॥ न० ११ चे० ॥ दान शील तप जावना, एतो शिवपुर मारग च्यार । न० । जो सुख चाहो शाश्वता, तो इनसे राखो प्यार ॥ न० १२ चे० ॥ उगणीसे निधी मधुमास मे, श्रोतो वास जालोर सुखदाय । न० । स्वामी वृधिचन्द जी परसाद सुं, मुनिराम कहे चितलाय ॥ न० १३ चे० ॥ इति लावनी संपूर्ण ॥

॥ आसावरी जोगिया ॥

जगत गुरु वीर जिनेश्वर स्वामी०) दीन दयाल दया कर तारो, तुम अन्तर्गत जामी ॥ ज० १ ॥ कञ्चनको क्या कञ्चन करवो, लोह कठिन कर चामी ॥ ज० २ ॥ मुक पतितन को पावन कर हो, घुमित मोहि हरामी ॥ ३ ॥ पतित उधारण विरुध तिहारो, तो मुकमे क्या खामी ॥ ४ ॥ प्रञ्जु तुम

वाणी पुनीत अपुरव, पुन्य संजोगे पामी ॥ ५ ॥ समकित जोत जगी घट अन्तर, गइ हैं मिथ्यात गुलामी ॥ ज० ६ ॥ मो मन वस कीनो तुम महिमा, जुं वनिता वस कामी ॥ ज० ७ ॥ कहत विनयचंद प्रभुपद पङ्कज, में प्रणमुं नित सिर नामी ॥ ज० ८ ॥

॥ ख्याल ॥

सतगुरु जी म्हांरा, दर्शण तो दीजे मोने कर मया०) ॥ स० ॥ (टेर) सतगुरुजी तो कठिण दाखसे, है अमृतसे खारा । सतगुरुजी तो करता घरते, रवी थकी अन्धियारा जी ॥ स० १ ॥ सतगुरु जी तो एसा मैला, मोती अथवा चंद. सतगुरु जी तो घणा ज ओछा, जेसे महा समंद जी ॥ स० २ छोटा पिण वे मेरुं जैसा, खोटा चिंतामण रतन्न । थिर वासि तो कहीये ऐसा, मन अथवा पवन्न जी स० ३ ॥ सतगुरु जी तो नितही मोने. ज्ञान करी चरमावे । रामचंद कहै सतगुरु हट कर, मुक्ति महेल ले जावेजी ॥ स० ४ ॥ इति

॥ स्तवन ॥

पुनः (हीरजाकी चालमे०) मेरा जीवरा पापी०) क्यों न भजे जिनराज रे ॥ मे० ॥ क्या

ले आया क्या ले जागा, सो मूरख नहीं बुझे। बांधे आया खोले जागा, इह तुमकुं नहीं सूझेरे ॥ मे० १ ॥ वीतराग तो देव न जांण्या, सूधा साध न मान्या। केवली भाषत धरम न ध्यायो, फिरे तुं खांचां ताणा रे ॥ मे० २ ॥ गुणका गाहक कोऊ नाहीं, अवगुण गाहक ढेर। खोटे खरेका परख नहीं है, एही बड़ा अन्धेर रे ॥ मे० ३ ॥ इस जगमे कोई नहीं तेरा, तुंभी किसीका नाहीं। अपनी बाजी हारी तैने, गोलमालके माहीं रे ॥ मे० ४ ॥ चेत सकेतो चेत मुसाफर, अजीतो कुछ नहीं बिगड़ा। खरची पल्ले बांधो प्यारे, मिटे करमका झगडारे ॥ मे० ५ ॥ लोभ लहर की नहर कहर से, सब दुनिया दुख पावे. सूधा रस ता दीसे नांहीं, उजड़ मारग जावे रे मे० ६ ॥ श्री सुमति नाथ जिनराज प्रभूका, मैने लीया सरणा। इन्द्र चन्द्रका कहे अबीरा, ध्यान प्रभूका करणारे ॥ मे० ७ ॥ इति पदं ॥

पांच म्होर रोकड़ लेलो, परणा तेजे परमेलो एदेशी०) परम मन्त्र नवकार शिरोमण, [
टाली सब कूड़ (जहा देख्या जहां कू०

ञांण कीयातो धुलही धूल ॥ मन्त्र यन्त्र रसायन इनं नांमे; ठग खावे खाली मगरूड़ ॥ ज० २ ॥ इणसे नहि लक्ष्याधिप कृण सुणीयो, गत लक्ष्मी तो सूणीया, जरूड़ ॥ ज० ३ ॥ धुड़ तणी किम खांड़ बनेगा, गोमय को किम होवे गुड़ ॥ ज० ४ ॥ पदमणी कांमणी बनै कहो कैसे, जिणघर शांखणी कर्कसा फूड़ ॥ ज० ५ ॥ लाखको मूंठियो हाथमे पहरे, किम बनै सोनेको चूड़ ॥ ज० ६ ॥ किसकी सिद्धाइ निजर न आइ. उलटी ठगाई दीसे जरूड़ ॥ ज० ७ ॥ बहु लुटे बलद, कई लुटे जोतसी, मन्त्र वादी लूंटे अरूड़ मरूड़ ॥ ज० ८ ॥ मुनिराम कहे मंत्र यत्रके चाले, मत पड़ियो जावोगा बूड़ ॥ ज० ९ ॥

ख्यालीआयां मुलतानसे (एदेशी०) तुम जाप जपोरे नमोकारको०) सहु पाप धूपेरे जमवारको. तु० १ ॥ श्री मती लही फुलकी माला, कुष्ट गयो श्री पालको ॥ तु० २ ॥ जील जीलनी नृप पद लहीयो, पोरसो सि वहि कुमारको ॥ तु० ३ ॥ जिन दास सेठ बीजोरो लायो, वली बदे सुर अवतारको तु० ४ ॥ चोर ठीके चढ़ गगनमे छड़ीयो, लह्यो

सूली चढ्यो जवपारको ॥ तु० ५ ॥ पाण्डव त्रिया द्रोपदी केरो, बिघ्न टलि सु भुजङ्गम न्हार को ॥ तु० ६ ॥ मुनिराम कहै छे जव जव एहनो, शरण चाहूरे सुखकार को ॥ तु० ७ ॥ इति

खेलन दे गिणगोर (एदेशी०) दीजे पार उतार (प्रभूजी दिजे पार उतार०) हू अपावन पतित अधम हू, तूं छे दीन दयाल । तु कृपानिधी तूं छे दीन दयाल ; मो अधम कू पार उतारो, तू छे परम कृपाल ॥ प्र० १ ॥ तूं ईश्वर परमेश्वर तू छे, तूही शङ्कर मुरार, ब्रह्मा विष्णु हिरण्य तूहि, महादेव करतार ॥ प्र० २ ॥ स्वयंभू अर्हत गणेश बीतराग तीर्थंकार । कर्ता विश्वम्भर जगके भर्ता, तूं हरी श्याम उदार ॥ प्र० ३ ॥ तूं निरमोही निकर्मी निरागी निराकार । पुरुषोत्तम निष्कलङ्क तूही छे, राम रहीम निर्द्धार ॥ प्र० ४ ॥ तूं प्रभु तारक कर्म विदारक, धारक तूं सन्सार । सुखके कर्त्ता हर्ता दुखके, भर्त्ता त्रिलोकी सार ॥ प्र० ५ ॥ तू भगवन्त सर्वज्ञ शिरोमणी, गुणको पारम्पार । मुनिराम कहै जिण पारस भेट्यो किम रहै लोह विकार ॥ प्र० ६ ॥ इति पदं ॥

सखी सुन बात सयानी (एदेशी०) ध्यान लगासां मन ठैरासां । नासा निजर जमासां, रेक मन्त्रको न्यास घुमासां (हांक जिनवर ना गुण गासां०) जिन गुण गासां बंछित पासां, पासां शिव पुर बासा रेक जि ॥ हां० १ ॥ ध्याता ध्यान ध्येय ध्यान ए तीने, निज गुण माहे रमासां रेक । छोड़ा सब आसा पासा जि ॥ हां० २ ॥ और ध्यान को छोड़ो प्यारे देखो फेर तमासा रेक, होवे तेरे माहि प्रकाशा ॥ हां० ३ ॥ अर्ह पदका ध्यान चढ़ासां दसमे द्वारे जासां रेक, कुछ नही जिनमे मासा हां० ४ ॥ मुनि राम चन्द्र तो और न चाहे रक्खो चरण के पासा रेक, मेटो प्रभू गर्भा वासा ॥ हां० ५ ॥ इति सम्पूर्ण ॥

॥ अथ श्री माङ्गलीक सरणा ॥

प्रह उठी ने समरी जै हो (जलीयन०) मङ्गलीक सरणा च्यार, आपद टाले सम्पदा हो ज० । दौलत नो दातार, हीयड़े [illegible] ॥ ज० १ ॥ अरिहन्त सीद्ध साधु [illegible] भाष्यो धर्म, ए [illegible]

तूठे आठुं कर्म ॥ ही० २ ज० ॥ ए च्यारुंउ सुख कारीया हो । ज० । ए च्यारु मङ्गलीक, ए च्यारु उत्तम कह्या हो । ज० । ए च्यारु तह तीक ॥ ही० ३ ज० ॥ गेले घाटे चालन्ता हो । ज० । समरुं वारवार गावां नगरां चालतां हो । ज० । विघन निवारण हार ॥ ही० ४ ज० ॥ शाकण साकण भुतडा हो । ज० सिंह चितानैं सुर, वैरी दुसमण चोरडा हो । ज० रहै सदाई दूर ॥ ही० ५ ज० ॥ सुख साता वरतै घणी हो । ज० । जे ध्यावे नर नार, परभव जातां जीवने हो । ज० । सरणा को आधार ॥ ही० ६ ज० राखो सरणा की आसता हो । ज० । नेडो नही आवे रोग, वरतै आनन्द सुख सही हो । ज० । वाला तणो सञ्जोग ॥ ही० ७ ज० ॥ निस दिन थाकुं ध्यावतां हो । ज० । जीव तणे उधार, कुमी नही कोई वस्तनी हो । ज० । योहि जगमे सार ॥ ही० ८ ज० ॥ मन चिन्ता मनोरथ फले हो । ज० वरतै कोड़ कल्याण, सुध मन करणे स्मरन्ता हो । ज० । निश्चे पद निरवाण ॥ ही० ९ ज० ॥ ए सरणाने ध्यावतां हो । ज० । नाम तणो आधार, ए सरणा की कीरती कही हो । ज० । ध्यावो मनद

सकार ॥ ही० १० ज० ॥ सम्बत अठारे बावने हो ज० । पाली सेहर सुख कार, चोथमल्ल इम विनवे हो । ज० । सुणज्यो बाल गोपाल ॥ ही० ११ ज० इति माङ्गलीक सरणा ॥

सुख कारण जवियण समरुं श्री नवकार, जिण सासण आगम चवदे पूरव सार । इण मन्त्रनि महिमा, कहिता न लहे पार ; सुर तरू जिम चिन्तित वंछित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करे कर जोड़, जू मण्डल विचरे तारे जवियण कोड़ । सुर ठन्दे विलसे अतिसे जास अनन्त, पहिले पद नमिये अरि गञ्जण अरिहन्त २ ॥ जे पनरे जेदे सिद्ध थया जगवन्त, पञ्चमि गत पहुता अष्ट करम करि अन्त । कल अकल सरुपी पचानन्तक देह ; सिद्ध ना पाय प्रणमूं, बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गठ जार धुरन्धर सुन्दर ससिहर सोम, करि सारण वारण गुण छतीसे थोम । श्रुत जाण सिरोमण सागर जेम गम्जीर, तीजे पद प्रणमूं आचारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगर सुत्र जनावे सार, तप

विध संयोगे जापे अरथ विचार । मुनिवर गुण जुत्ता ते कहिये ऊपझाय, चौथे पद प्रणमुं अह-निस तेहना पाय ॥५॥ पञ्चाश्रव टाले पाले पञ्चा चार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार । त्रस थावर पीहर लोक मांहे ते साध; त्रिविधे नित प्रणमुं, परमारथ जिन लाध ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायण डायन भुत बेताल, सवि पाप पणासे थाए मङ्गल माल । इण समस्या सङ्कट दूर टले ततकाल, जंपे जिण गुण इम सदगुरु सीस रसाल ७ ॥ इति स्तवन सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ नवकार स्तवन ॥

श्री नवकार जपो मन रङ्गे श्री जिन शासन साररी माई०) सर्व मङ्गल मांहे पहलो मङ्गल जपतां जयजय काररी माई ॥ श्री० १ ॥ पहिलो पद त्रिभुवन जन पूजित, प्रणमुं श्री अरिहन्त री माई । अष्ट करम बरजित बीजै पद, ध्यांउ मैं सिद्ध अनन्तरी माई ॥ श्री० २ ॥ आचारिज तीजै पद समरूं गुण छत्तीस निधानरी माई । चौथे पद उवझाय जपीजे सूत्र सिद्धान्त सुजानरी माई ॥

श्री० ३ ॥ सर्व साधु पञ्चम पद प्रणमुं पञ्च महा-
व्रत धाररी माई । नवपद अष्ट यहां है सम्पद आड़-
सठ वरण सञ्चाररी माई ॥ श्री० ४ ॥ सात इहा
गुरू अक्षर एहमें एक अक्षर उचाररी माई । सात
सागरना पातिक जावे पद पञ्चास वीचाररी माई
श्री० ५ ॥ सम्पूर्ण पणसैय सागरना पाप पलावै
दूररी माई । इह भव क्षेम कुशल सुखसम्पदा पर
भव ऋद्धि भरपूररी माई ॥ श्री० ६ ॥ ईरति सो
वन पुरसो सिद्धो शिव कुमर इन ध्यानरी माई ।
सरप मीटी हुइ फूलनी माला श्री मतिनें परधांनरी
माई ॥ श्री० ७ ॥ जक्ष उपद्रव करतो निवान्यो
पर चो एह परसिद्धरी माई । चोर चण्ड पिङ्गलनैं
हुण्डक पांमी सुरनर ऋद्धरी माई ॥ श्री० ८ ॥
पञ्च परमेष्ठि मन्त्र उत्तम चौवदे पुरव साररी माई
गुण बोले श्री पदमराज गुरु महिमा जास अपार
री माई ॥ श्री० ८ ॥ इति

श्री मन्दिर जीसे वन्दना, नित्त हुय जो हमारो
टेर० १ ॥ इहां तो आरो पांचमो, जीहां जोथोजी
आरो । तुमतो सुखमा भोगवो, हम कोन सनारो

श्री० २ ॥ जङ्घा विद्या चारणी कोई लब्धि न दिसे. किम कर प्रभु पद भेटसुं, मनड़ो घनो हिसे ॥ श्री० ३ ॥ बीज तनो एह चांद लो, जिन साथ हमारो । जाय पहुंचेगी, वन्दना जिन कहवो चितारो ॥ श्री० ४ ॥ श्री श्रीनन्दन श्रंसके अङ्गज सत कीनो । रुक्मणी राणीजीके वालवो, पद वीरप नवीनो ॥ श्री० ५ ॥ सपने अन्तर प्रभुजी मिला, भया परम आनन्दो । कहै जस वन्त सागर सुनो, भयो नन्द शुनन्दो ॥ श्री० ६ ॥ इति पद ॥

॥ हितशिक्षा दोहा ॥

सील रतन मोटो रतन, सब रतनांकी खान । तीन लोककी सम्पदा, रहि सीलमें आंन ॥ १ ॥ नवतत्व जाणि नहि, रक्या न करि छय काय । सूना घरनो पावनो, ज्युं आवे ज्युं जाय ॥ २ ॥ जब लग जिनको पुन्यका, पुगा नहि करार । तब लग उनकुं माफ है, गुनाह करो हजार ॥ ३ ॥ पुन्य खीन जब होत है, उदय होत है पाप । दाझत बनकि लाकड़ी, प्रजलित आपहि आप ॥ ४ ॥ ज्ञान गरिबि गुरु वचन, नरम वचन निरदोष । एता कबहु न छोड़िये, श्रद्धा सील सन्तोष ॥ ५ ॥ अव-

सर बीत्यो जातहै, अपने वस नहि होत। पुन्य
ठतां पुन्य होत है, दिपक दीपक जोत॥ ६॥ चड़
उतङ्ग जासें पतन, सिखर नहि वो कूप। जिन सुख
अन्तर दुख बसे, वो सुख जो दुख रुप ॥ ७॥
समझु सङ्के पाप से. अन समझु हरषंत। वे लुखा वे
चीकना, ईन विध कर्म वधन्त ॥ ८॥ जे सम दृष्टि
जगतमें, करे कुटुम्ब प्रतिपाल। अन्तर गत न्यारो
रहे, जिम धाय खिलावे बाल॥ ९॥ मुनीयो जित
रो सहु करे, तो पहुचे निरवाण। पिन क्युं एक हिर-
दय राखजो, यु मुनीयारो परमाण॥ १०॥ ठने जुलो
चउदे चुको, नहि जाने वारे रो नाम. गांम ढिंढोरो
फेरीयो, श्रावक म्हारो नाम ॥ ११ ॥ गई वस्तु
सोचे नहि, आगम चिन्ते नाहि। बरत मान बरते
सदा, सो ज्ञानी जग माहि ॥ १२॥ धन अनन्ति
बार पामियो, धर्मज पायो नाहि। वे दलिद्रि
सारिखा, केसि गिनतीरे माहि ॥ १३॥ इक्‍ताना
सरवत करे, जीव मारणे खाय। वे बादसाहि
जोगवे, पुरव पुन्य पसाय ॥ १४॥ बुरा बुरा सब
कोई कहे, बुरा न दिखा कोय. जो घट खोजुं आपना
तो मुझसा बुरा न कोय ॥ १५ ॥ टुट पिठला पापसे

नवा न बांधुं कोय। श्री गुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय ॥ १६ ॥ धर्म करत सन्सार सुख, धर्म करत निरवाण। धर्म पन्थ जाने नहि, ते नर पशु समाण ॥ १७ ॥ दीठा जीसका नाषिया, कहाज झीना नाव। निर्लोभिके बचनमे, सङ्का मुल न लाव ॥ १८ ॥ तप जप सञम दोहिलो, औषध करुवी जान। सुख कारण पीछे घनुं, पावे पद निर्वान ॥ १९ ॥ काम जोग प्यारो लगे, फल किंपाक समान। मिठि खाज खुजालतां, पीछे दुखकी खान ॥ २० ॥ जो मे जीव बिराधीया, सेव्या पाप अठार। प्रभु तुमारी साखसे, बार २ धिकार ॥ २१ ॥ जाकि जव थिति पकहि, ताको ईह उपदेश। खरो मारग वितराग को, कूरु नहि लव लेश ॥ २२ ॥ इति

॥ ❀ अथ नवकार स्तुति ❀ ॥

पढ़ो मन्त्र नवकार सदा सङ्कटे उवारे। पढ़ो मन्त्र नवकार ताव तेजरा निवारे ॥ पढ़ो मन्त्र नवकार होय जाग्य जाएकारा पुरा। पढ़ो मन्त्र नवकार सदा क्रायर नर सूरा ॥ पढ़िये मन्त्र जिनवर

तणा, दिन दिन जसको चढ़े । नवकार मन्त्र पढ्या पीछे और मन्त्र कांई पढ़े ॥ इति

जयणा धम्म जणणी, जयणा धम्मस्स पालणी चेव । तह वुड्ढि करी जयणा, एकांत सुहा वहा जयणा ॥ १ ॥

शितल जीनवर करुं प्रणाम. सोले सत्यांका लेस्युं नाम । ब्राह्मी चन्दन बालिका भगवती राजेमती द्रौपदी । कोशल्याच मृगावती च सुलसा सीता सुभद्रा शिवा । कुन्ति शीलवती नलस्य दयिता चूला प्रभावत्यपि ॥ पद्मावत्यपि सुन्दरी दिन मुखे कुर्वन्तु वो मङ्गलं ॥ १ ॥

शिवमस्तु सर्व जगतः, परिहित निरता भवंतु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवंतु लोकाः ॥ १ ॥

सर्व मङ्गल माङ्गल्यं, सर्व कल्याण कारणं ।
प्रधानं सर्व धर्म्माणां, जैनं जयतु शासनं ॥ २
मङ्गलं भगवान् वीरो, मङ्गलं गौतम प्रभुः ।
मङ्गलं स्थूल भद्राद्याः, जैन धर्मोस्तु

॥ ॐ इति ग्रंथ सम्पर्णम ॐ